VANDANH

1974 G.K.U.

वन्दना

श्री आनन्दमयी सेवा-सदन

म्युनिसिपल महिला इण्टर कालेज
हरिद्वार।

पुष्पम्
सन् १९७४–७५

आर० के० खुराना
प्रधानाचार्या

सम्पादक मण्डल :–

प्रबन्ध सम्पादिका :—
कु० स्नेहलता त्रिपाठी

हिन्दी विभाग :–

प्रधान सम्पादिका
सावित्री देवी वाजपेयी

सहा० सम्पादिका
श्रीमती सत्य भामा

अंग्रेजी विभाग :–

कु० देवेन्द्र मोहनी भसीन
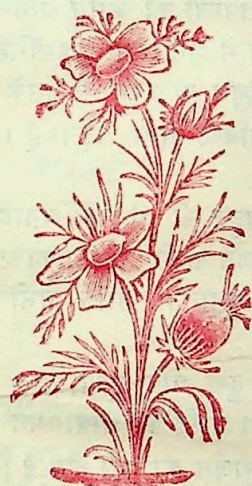
वन्दना

वन्दनीय माँ के चरणों में

❁ हमारा ध्येय ❁

सत्य! सेवा! दीनता!

समर्पित
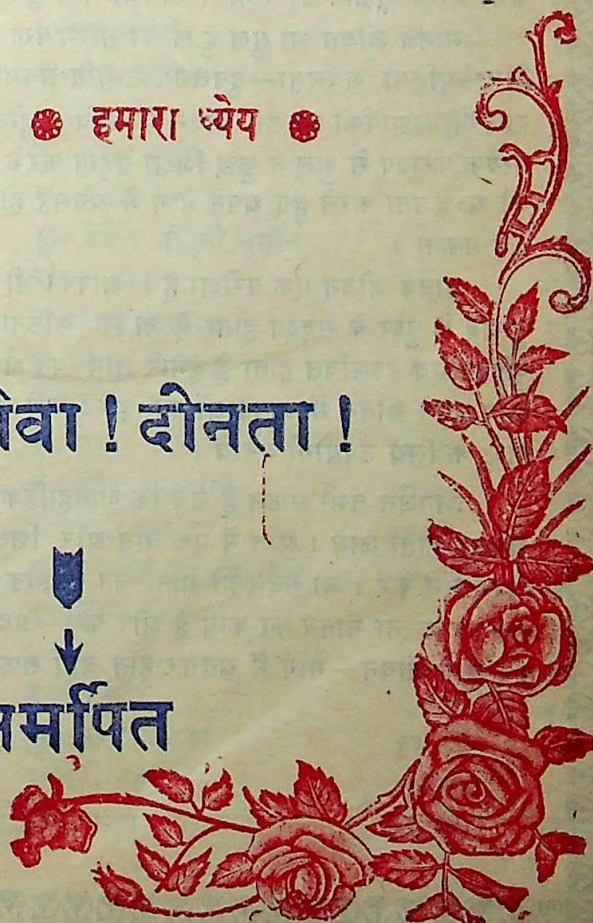
अपनी फुलवारी के पुष्पों से

इस विद्यालय रूपी उद्यान के लावण्यमय एवं मकान्दमय सुमन आप हैं। जिस प्रकार से उषा के सुनहरे प्रभात में अपनी साधना को पूरा हुआ देख कर साधक तपस्वी की भांति आनन्द और उत्साह से परिपूर्ण हो उठता है, उसी प्रकार जब आप इस वाटिका में शनैः शनैः विकसित होकर अपनी साधना को पूर्ण करती हैं तो हमारा हृदय हर्षातिरेक से विह्वल हो उठता है इसके पश्चात इस फुलबारी को छोड़कर आपको विश्व रूपी विशाल उपवन में प्रविष्ट होना पड़ता है। वस्तुतः आपका वास्तविक स्वरूप इसी उद्यान में प्रकट होता है।

इस संस्था के रुचिरसुमनों। यह विशाल वाटिका आप पर बहुत सी आशायें लगाये हुये है आपका भी इसके प्रति कुछ कर्त्तव्य है। इसके सवारने एवं सुसज्जित करने में आपको यथाशक्ति योग देना चाहिये। वाटिका समयानुसार परिवर्तित होती है, कभी सुहावना वसंत, कभी पतझड़ कभी आंधी-तूफान तो कभी २ शीतल, मन्द सुगन्द समीर।

मानव जीवन भी सुख दुःख का सम्मिश्रण है। इस में सुख दुख, पाप पुण्य, सत्य असत्य, हिंसा-अहिंसा, सबलता—दुर्बलता, उन्नति अवनति, आशा-निराशा आदि का आवागमन होता ही रहता है। आपको भी इस जीवन में प्रविष्ट होना है। आपके ज्ञानार्जन का यही श्रेय है कि आप प्रत्येक पराजय से कुछ न कुछ शिक्षा ग्रहण करके आगे को और अग्रसर हों, जो मानव आपदाओं की अवहेलना करते हुए अपने मार्ग में अग्रसर होता है उसको मार्ग में कोई बाधा अबरूद्ध नही कर सकता।

मानव जीवन एक परीक्षा है। आपको भी इस कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण होना है। जीवन गुलाब के पुष्प के सदृश्य होता है जो कि कठिनाइयों, आपदाओं एवं शोक रूपी कांटों के मध्य पुष्पित एवं पल्लवित होता है हमारे ज्ञान का श्रेय तभी है जब हम आपको इस योग्य देखें कि आप अपने जीवन में आपदाओं को दृष्टिकोण में न रखते हुए अपने जीवन को स्वयं के तथा राष्ट्र के लिये उपयोगी बनायें।

ज्ञानर्जन तभी सफल है जब कि व्यवहारिक जीवन में भी आदर्शो का पालन करते हुए ही अग्रसर होता जाये। अन्त में एक बात और शिक्षा के मद में आप उस सच्चिदानन्द ईश्वर को विस्मृत न करें। जो सदैव ही आप का सहायक है ईश्वरीय शक्ति सदैव ही आपकी रक्षक है। कर्त्तव्य करना मानव का कार्य है और फल—प्रदान करना ईश्वर का। इसी ध्येय को सम्मुख रख कर आप जीवन—मार्ग में अग्रसर होते जायें सफलता आपके लिये आवश्यम्भावी है।

—आर० के० खुराना
प्रधानाचार्या

विषय-सूची

ENGLISH SECTION

वार्षिक आख्या ७४–७५

कु० आर० के० खुराना, प्रधानाचार्या

पंचपुरी हरिद्वार की इस पावन भूमि में जहां गिरिराज हिमालय की उत्तग हिमाच्छादित मन्जु शिखरों से उतर कर पतित पावनी पाप हारिणी भगवती भागीरथी ने दर्शन दान दिया एवं भगवती गंगा से विश्वमंगल की प्रेरणा प्राप्त कर स्व० श्री पीताम्बर पन्त ने मातृ जाति के जागरण हेतु इस संस्था की स्थापना कर प्रवेशिका, विद्याविनादनी की परीक्षायें संस्था में प्रारम्भ कराई।

सन् १९४२ में दानवीर डा० महोदय के देहावसान के उपरान्त उनके अनुज श्री लोकनाथ हरि पन्त के संरक्षण में संस्था प्रगतिगामिनी रही। सन् १९४७ ई० से ही मैं संस्था की सेवा कर रहा हूँ। सन १९४८ में संस्था नगर पालिका समिति हरिद्वार को सौंप दी गई श्री हीरा वल्लभ जी त्रिपाठी संसद सदस्य एवं श्री कार्य पालिकाधिकारी श्री शिव प्रसाद जी झा के सहयोग से १९४९ में जूनियर हाई स्कूल सन १९५१ में हाई स्कूल एवं सन १९५३ में इन्टरमीडिएट कक्षाओं को मान्यता प्राप्त हो गई। कालान्तर में भूतपूर्व नगर पालिकाध्यक्ष श्री पन्नालाल जी भल्ला, श्री हरिदत्त जी बहुगुणा, श्री आनन्द प्रकाश जी शर्मा श्री ओमप्रकाश जी अरोड़ा, श्री पारस कुमार जी जैन, के संरक्षण में संस्था विकास करती रही सम्प्रति श्री इन्दुभूषण खन्डूरी तथा श्री अजेन्द्र चन्द्र दुबे के वरद संरक्षण में उन्नतिशीला है।

सतत प्रगतिशीला इस संस्था में इस समय कक्षा अष्टम् से द्वादश पर्यन्त छात्रा सख्या लगभग १३०० है। इस वर्ष कक्षा द्वादश में १६९ तथा हाई स्कूल में १८४ छात्राओं ने हाई स्कूल तथा इन्टर मीडिएट बोर्ड उत्तर प्रदेश को परीक्षा दी। संस्था के म्यु० बोर्ड से सम्बद्ध होने के कारण संख्या बृद्धि पर सरकारी प्रतिबन्ध है। अन्यथा छात्रा संख्या २००० से भी अधिक हो सकती है। विद्यालय का परिणाम अति उत्तम रहा तथा उत्तम अंक एवं श्रेणी प्राप्त होने के कारण कई छात्राओं को योग्यता सम्बन्धी छात्रवृत्ति भी सरकार की ओर से दी जा रही है।

इस समय संस्था में शिक्षिका संख्या ४५ है। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा भी एक शारीरिक व्यायाम एवं क्रीड़ा के लिये निर्देशिका नियुक्त है। संस्था का विभागीय वर्गीकरण इस प्रकार है।

पुस्तकालय

पुस्तकालय में अंग्रेजी एवं हिन्दी के साप्ताहिक पत्र पत्रिकायें मंगाई जाती हैं। दैनिक एवं मासिक पत्रों की व्यवस्था भी है। इस समय पुस्तक संख्या ९००० है। प्रमुख पत्र, वीर अर्जुन, हिन्दुस्तानटाईम्स नवभारत टाइम्स, दिनमान, साप्ताहित हिन्दुस्तान, नवनीत, बाल-भारती, स्वास्थ्य और जीवन, जीवन साहित्य, इत्यादि प्राय: चौबीस पत्र मंगाये जाते हैं।

विज्ञान वर्ग

नवम् एवं दशम् कक्षाओं के लिये विज्ञान शिक्षण व्यवस्था १९६६ से चल रही है। इन्टर मीडिएट में भी अभिभावकों के अनुरोध से शीघ्र ही विज्ञान शिक्षण की व्यवस्था होने की सम्भावना है।

साहित्यिक विभाग

छात्राओं के सर्वाङ्गीण विकास हेतु चतुरभवन योजना है। उज्जयिनी, तक्षशिक्षा, नालंदा तथा विक्रम भवनों में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रति–

योगिताओं का आयोजन किया जाता है। राष्ट्रीय पर्वों पर महान समारोह मनाये जाते हैं। इस वर्ष मानस चतुःशती के अवसर पर विद्यालय में मासिक एवं पाक्षिक कार्यक्रमों द्वारा रामचरित मानस के आदर्श से छात्राओं के मानसोत्थान का सराहनीय प्रयास किया गया। मानस प्रेमी विद्वानों के प्रवचन भी हुये। मानस पाठ प्रति सप्ताह किया जाता रहा विद्यालय की मेधावी छात्रा आभा वाजपेयी एवं कु० हरवेल ने वाद-विवाद एवँ भाषण प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय एवं प्रान्तीय स्तर पर क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। तथा चल विजयोपहार प्राप्त कर संस्था को अनेक बार गौरवान्वित किया हैं।

गृह विज्ञान विभाग

गृह विज्ञान विषय के शिक्षण हेतु भी प्रशिक्षित शिक्षिकायें हैं। प्रसन्नता का विषय है कि इस विभाग का परीक्षाफल सदैव शत-प्रतिशत रहा है।

क्रीड़ा विभाग

छात्राओं के स्वास्थ्य एवं शक्ति विकास हेतु सभी स्तरों पर खेल एवं प्रतियोगिताओं की भी समायोजना है।

जिला क्रीड़ा प्रतियोगिता में अन्य वर्षों की भांति हमारी छात्राओं ने लम्बी कूद में प्रथम २०० मीटर रेस भाला फेंकना में द्वितीय स्थान तथा जिले में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मण्डलीय स्तर पर उच्च स्थान पाकर दो छात्रायें कु० मधु कौशिक स्टेट के लिये चुनी गईं तथा चल विजयोपहार प्राप्त किया। इस वर्ष मण्डलीय रेली की तैराकी प्रतियोगिता में हमारी छात्रायें कु० आशा ने प्रथम तथा कु० लीला ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा स्टेट में द्वितीय रही। छात्राओं ने स्टेट बैंडमिन्टन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

एन० सी० सी०

सन् १९६७ से एन०सी०सी० विभाग चल रहा है इस समय पूर्ण कम्पनी है, दो छात्रायें कु० मधु कपूर, शशि सहगल एडवांस लीडरशिप कोर्स में मरकरा गईं कु० मधूलिया ने गणतंत्र दिवस ७४ में भू०सं० में भाग लिया, सिलवर जुवली कैम्पमें लखनऊमें भाग लिया। इस कैम्प में छात्राओं ने सर्टिफिकिटस तथा बैज प्राप्त किये तथा किडले आउट मे प्रथम रहीं फायरिंग में छात्राओं तथा लेडी आफीसर श्रीमती राज कौशिल्या सूरी प्रथम रहीं एवँ कु० आभा वाजपेयी ने सर्वाधिक अंक प्राप्त किये।

गाइडिंग विभाग

हमें सूचित करते हुये हर्ष है कि हमारी संस्था में बच्चों के नैतिक स्तर को ऊंचा उठाने का सदा ध्यान रक्खा जाता है। समाज सेवा के लिये छात्रायें स्थानीय पर्वों, उत्सवों एवं स्नान पर्वो पर सदैव तत्पर रहतीं हैं। विद्यालय में पर्याप्त प्रशिक्षित गाइड शिक्षकायें हैं जिनके प्रयास से हमारी दो छात्राओं मन्जुपवार तथा आशा गुप्ता मीनाक्षी एवं मधूलिका को राष्ट्रपति गाइड घोषित किया गया।

इस वर्ष अखिल भारतीय जम्बूरी में जो कि ७ नवम्बर से १२ नवम्वर तक हुई उसमें हमारी २१ गाइड्स दो गाइड शिक्षकायें एवं मैंने स्वय भी भाग लिया। हमारी गाइडस ने वहां के सम्पूर्ण कार्यों में भाग लिया तथा उत्तम कार्य प्रतिभा के परिणाम स्वरुप बैज एवं प्रमाण पत्र प्राप्त किये। इसी समय सुश्री प्रधानाचार्या जी को जनहित के कार्यों में सतत जागरूक रहने तथा दीर्घ सेवा के पुरस्कार स्वरुप दीर्घ-सेवा पदक से अलंकृत किया गया।

संचयिका

संस्था में सदैव से छात्राओं के जीवन में सादगी स्वावलम्बन तथा मितव्ययता की भावना जगाने की चेष्ठा की जाती है। पहले भी अल्पबचत योजना के अन्तर्गत ८०५१ की राशि जमा की गई है। तथा इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत ५,५०० की राशि जमा की जा चुकी है। संस्था में इस विभाग का प्रबन्ध कु० स्नेह लता त्रिपाठी की अध्यक्षता में कु० रमा निश्चल की सहायता से कु० अलका गर्ग एवं कु० रश्मि करती हैं।

अन्ततः परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि उसकी अनुकम्पा से यह संस्था निरन्तर अविराम गति से प्रगति करती रहे।

श्री आनन्दमयी सेवा-सदन पत्रिका

म्युनिसिपल महिला इण्टर कालेज, हरिद्वार

भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ।
याभ्यां बिना न पश्यन्ति सिद्धास्वान्तस्थमीश्वरम् ॥

मैं श्रद्धा विश्वास रूपी श्री पार्वती जी एवं
श्री शंकर जी की वन्दना करता हूँ
(कि) जिनके बिना सिद्ध लोग भी
अपने अन्तःकरण में स्थित
ईश्वर को नहीं
देख सकते
हैं।

श्रीमाँ

अन्नपूर्णा XI B

देवी प्रपन्नर्त्ति हरे प्रसीदा-प्रसीद मात्तर्जग-तोऽखिलस्य प्रसीद विश्वेश्वरी ! पाहि विश्वम् त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य ।

इस सार हीन संसार में विशेष कर इस भारत भूमि में अनेक अमर पुरुषों ने जन्म ग्रहण करके इस भारत माता को कृतार्थ कर दिया इनमें भगवान श्री कृष्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम राम आदि है। ठीक इन्हीं के समान आज ! कलियुग में पापियों का उद्धार करने के लिए हमारी स्नेहमयी, करुणा श्री आनन्दमयी ने जन्म लिया। जिनको हम आदर के साथ "मां" कह कर पुकारते हैं। जिनका चरित्र चन्द्र और सूरज की भाँति हमें ज्योति प्रदान करता है। इनमें इतनी अलौकिक शक्ति है कि जो लोग अर्थात सुखी दुखी बालक वृद्ध जो भी मां के सम्पर्क में आते हैं वहीं मुग्ध हो जाते हैं और एक अलौकिक आकर्षण का अनुभव करते हैं। मां हमारी आध्यात्मिक तृष्णा को उत्तेजित करती हैं और परितृप्त भी करती है। इस प्रेम मयी माँ की ऐसी घटना घटित हुई हैं जो बड़े-२ लोगों के लिए भी असम्भव हैं। इनके केवल आशीर्वाद मात्र से लोग पता नहीं कहां से कहां पहुंच जाते हैं। कितने लोग रोग पीड़ा से मुक्ति पान के लिए कितनी दूर-२ से आते हैं। किन्तु माँ प्रायः चुप रहती है। कभी-२ किसी-किसी रोगी के शरीर पर मां अपने कोमल हाथों को फेर देती हैं जिससे वह स्वस्थ हो जाते हैं। उदाहरणार्थ ! एक बार श्री मां की उपस्थिति में "दरिद्रनारायणों को भोजन के लिए बैठाया गया। परोसने के समय मां ने कहा कि परोसने में मैं भी थोड़ी मदद दुंगी। सबने मां का जय जयकार किया, मां कमर में धोती बांधकर परोसने लगी। उन दरिद्रनारायणों में एक कोढ़ी भी आया था। उसके हाथ गल गये थे। वह विचारा चुपके से एक कोने में बैठा। मां भी बाल्टी लेकर वहीं गयी और उसको बड़े प्रेम से भोजन कराया, थोड़े दिन बाद वह कोढ़ी बिलकुल अच्छा हो गया। इसी प्रकार यह हमारी दयामयी ने निश्चित नहीं कितनों के प्राण बचाये। एक बार एक बच्चा आकर मां से कहता है कि मां ! भंया की जन्म कुन्डली में लिखा है आज सायकाल में उसको सांप काटेगा। मां ने कुछ नहीं कहा। उसी दिन बहुत लोगों के साथ घूमने जा रहीं थीं। रास्ते में एक स्थान पर सबको पीछे छोड़कर जरा आगे बढ़ गयीं। कुछ दूर जाकर पीछे हाथ के संकेत द्वारा सबको आगे बढ़ने को मना किया। भोलानाथ जी ने दौड़कर जाकर देखा कि मां से कुछ ही दूरी पर एक काला विराट सांप माँ की तरफ एक टक से देख रहा है। मां ने सांप के ऊपर पांव रख दिया। सबने पूछा सांप ने काटा या नहीं-किन्तु मां ने कुछ नहीं कहा। फिर

मां ने उस लड़के से मुस्कराते हुए कहा, बात थी सांप तुझे काटेगा पर काटा मुझे। इस प्रकार मां ने बच्चे के प्राणों की रक्षा की।

इस प्रकार हम सब प्राणियों की रक्षा करने के लिए स्वयम् भागवती दुर्गा ने मनुष्य के रूप में जन्म लिया है। इनको सारे भारतवासी भागवती मानते हैं।

अलप बुद्धी मैं इस पापहारिणी का वर्णन करने में असमर्थ हूं जिनके सामने इन्दिरा गान्धी तक नत मस्तक करती हैं। और बड़े-२ प्राईम-मिनिस्टर, राजा-महाराजा से लेकर हम साधारण मनुष्य तक इन की पूजा अर्चना करते हैं।

"या देवी सर्व भूतेषू मातृ रुपेण संस्थिता
नमः स्तस्यै नमः स्तस्यै नमः स्तस्यै नमो नमः ॥
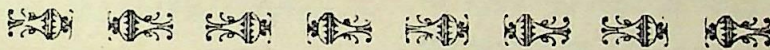
क्या आप जानते हैं ? चंचल छावड़ा XI B

१—राकेट का अविष्कार ल्युशिकों ने किया था।
२ - स्टीम इन्जन का अविष्कार जेम्सवाट ने सन १७६५ में किया था।
३—मशीनगन का अविष्कार आर० जे० गेटलिंग ने सन १८६१ में किया था।
४—विद्युत लेम्प का अविष्कार टी. ए. एडीसन ने सन १८७९ में किया था।
५—साइकिल का अविष्कार मेकमिलन ने सन १८४२ में किया था।
६—दूरबीन का अविष्कार एच० लियाशे ने सन १६८० ई० में किया था।
७—प्रिंटिंग प्रेस का अविष्कार गुटेनवर्ग ने सन १४५० में किया था।
८—टैलीफोन का अविष्कार ए०ग्राहमवेल ने सन १८७६ में किया था।
९—टैंक का अविष्कार ई. स्विटन ने सन १९१४ में किया था।
१०-डीजल इंजन का अविष्कार रुडील्फ डीजल ने १८९५ ई० में किया गया था।
११— टैलीग्राफ का अविष्कार सेम्युअल मोर्स ने सन १८३२ में किया था।

"मानस का युग-सन्देश"

सविता गोयल १२ अ

तुलसी का मानस आज संसार के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थों में से एक है। इसके आदर्शों का पालन भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी होता देखा गया है। यह अपने समय का एक ऐसा ग्रन्थ है जिसने कि पतनोन्मुख जनता को आदर्श का मार्ग दिखाया। तुलसीदास ने जिस समय मानस की रचना की उस समय विदेशी जाति ने भारतीय जनता को पूर्णतः अपने पंजों में जकड़ रखा था। हिन्दू धर्म इस्लाम धर्म में मिला जा रहा था। अतः तुलसी ने समाज की अवस्था को देखा और प्राचीन और नवीन आदर्शों का समन्वय करके मानस की रचना की जो आज एक युग सन्देश के रुप में प्रस्तुत है।

मानस से हमें सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में आदर्श प्राप्त होते हैं। तुलसी ने सभी अंगों की ओर दृष्टिपात किया है। तुलसी ने सामाजिक जीवन का मूल्यांकन आचार की कसौटी पर किया है। उनका विश्वास है कि कोई भो समाज अथवा राष्ट्र आचार के वल पर ही निर्मित होता है। व्यक्ति और परिवार आदर्श समाज की आधार शिलायें हैं, लक्ष्मण और भरत आदर्श भाई हैं। हनुमान आदर्श सेवक और सुग्रीव आदर्श सखा के रुप में चित्रित हैं। उन्होंने आदर्श समाज के लिये वर्ण व्यवस्था का पालन आवश्यक बताया है-

"वरनाश्रम निज धरम, निरथ वेद पथ लोग
चलहिं सदा पावहिं सुखहि, भय शोक न रोग"

सामाजिक क्षेत्र में तुलसी ने दाम्पत्य जीवन की स्थिरता और पवित्रता की ओर बल दिया है। जहां वे नारी को यह उपदेश देते हैं कि वृद्ध, रोगी, जड़, धनहीन, क्रोधी पति का भी अपमान न करो वहां वे पुरुष के लिये एक पत्नी व्रत का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। एक ओर तो पति पत्नी में अनुरक्त हो, दूसरी ओर पत्नी मन कर्म और वचन से पति के लिये हितकारिणी हो। इससे बढ़कर दाम्पत्य जीवन के लिये सन्देश क्या होगा, यथा—

"एक नारी व्रत रत सब भारी,
ते भन वच कर्म पति हितकारी"

वे नारी की अति उच्छृंखलता के विरोधी थे उनका कहना है—

"जिमि स्वतन्त्र होई, बिगरहिं नारी"

तुलसी कट्टर मर्यादावादी थे। मर्यादा भंग वे लोक के लिये मंगल नहीं समझते थे। वे वर्ण विभाग को केवल कर्म विभाग ही नहीं, भाव विभाग भी समझते थे। श्रद्धा, भक्ति, दया आदि उदात्त वृतियों के अनुष्ठान और अभ्यास के लिये वे समाज में छोटी बड़ी श्रेणियों का विभाजन आवश्यक समझते थे। वह कहते हैं:—

"पूजिय विप्र सील गुन हीना,
सुद्र न गुन-गन ज्ञान प्रवीना"

इस प्रकार हम देखते हैं कि तुलसी ने समाज का कोई भी ऐसा अग नहीं छोड़ा जिसे आदर्श से युक्त न किया हो। तुलसी ने सामाजिक क्षेत्र में आदर्श उपस्थित करने के साथ-२ राजनीतिक क्षेत्र में भी मर्यादा और आदर्श उपस्थित किया है।

विद्यालय प्रांगण में श्री श्रीमां द्वारा कीर्तन

छात्राओं द्वारा प्रस्तुत 'कवि और कविता'
(मूक अभिनय) का एक प्रभावशाली दृश्य
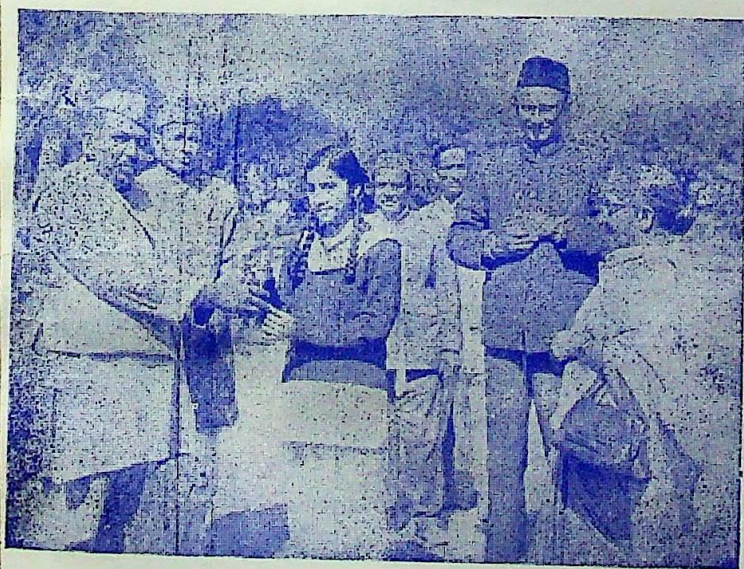
वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री आनन्दप्रकाश जी शर्मा
विद्यालय उत्सव ७३-७४ की अध्यक्षता एवं सर्वोत्तम
छात्रा कु० आभा वाजपेयी को पारितोषिक प्रदान करते हुए

विद्यालय की सर्वोच्च खिलाड़ी एवं केडेट
कु० मधु कौशिक

भवनाध्यक्षा एवं भवनाधिकारी वर्ग

नीचे की पंक्ति (प्रथम) बायें भाग से–भागवन्ती, रूपा टण्डन।

द्वितीय पंक्ति–श्रीमती शान्ति सिरोही, कु० ऊषा वर्मा, कमलेश क्वाटरा, सुश्री आर० के० खुराना (प्रधानाचार्या), कु० स्नेह लता त्रिपाठी श्रीमती कृष्णा बहुगुणा जी. कु० प्रभा वालिया।

तृतीय पंक्ति–सुनीता, मधुलिका, श्री मोघे जी, राज सेठ जी, श्रीमती सावित्री वाजपेयी जी, श्रीमती सत्यभामा जी, कु० बीना भल्ला, कृष्णा, साधना।

चतुर्थ पंक्ति–अलका. स्मिता मीना, सुमन बाली, रश्मि सूद, रश्मि गम्भीर, मञ्जूषा, मीनाक्षी।

राजनीति पर तुलसी ने जो कुछ लिखा है। उससे दो बातें स्पष्ट होती हैं— एक तो यह कि तुलसी के समय की राजनीति कैसी थी और दूसरी यह कि आदर्श राज्य कैसा होना चाहिये। अपने युग की राजनीति की ओर संकेत करते हुए वे लिखते हैं कि—

"द्विज श्रुति बंचक भूप प्रजासन
कोउ नहिं मान निगम अनुशासन"

तुलसी ने रामराज्य की कल्पना प्रस्तुत करके आदर्श राज्य किसे कहते हैं यह बताया है। आदर्श राज्य वह है जिसमें जन जीवन दैविक, दैहिक, भौतिक तापों से मुक्त हो यथा—

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा,
राम राज काहुं नहिं व्यापा"

तुलसी का कहना था कि जिस राजा के राज्य में प्रजा दुःखी हो वह राजा नरक का अधिकारी होता है—

"जासु राज प्रिय प्रजा दुःखारि,
सो नृप अवसि नरक अधिकारी"

राजा समाज रूपी परिवार का ही एक सदस्य होता था। राम ने भरी सभा में कहा था—

"जो अनीति कछु भाखो भाई,
तौ मोहि बरजेहु भय विसराई"

राजा में केवल त्याग ही नहीं अपितु वीरता एवं पराक्रम का भी गुण होना चाहिये। राम दोनों ही गुणों से युक्त थे। राजा को चाहिये कि वह प्रजा से कर लेकर उसका उपभोग स्वयं न करे वरन् उससे प्रजा का भी पालन करे—

"मुखिया मुख सों चाहिये, खान पान सों एक
पालइ पोषइ सकल अंग, तुलसी सहित विवेक"

इस प्रकार तुलसी ने ऐसे रामराज्य का आदर्श प्रस्तुत किया जिसमें एकतन्त्र तथा प्रजातन्त्र सुराज्य तथा स्वराज्य का सुन्दर समन्वय है। तुलसी का यह राजनीति सम्बन्धी आदर्श सबको मान्य हो सकता है।

तुलसी ने धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत बड़ा सुधार किया। उन्होंने अपने युग की विभिन्न दार्शनिक एवं साम्प्रदायिक विचारधाराओं में सामञ्जस्य किया। उनके युग में दो दार्शनिक वाद प्रचलित थे। अद्वैतवाद और विशिष्टाद्वैतवाद। तुलसी के मानस में इन दोनों वादों का समन्वय मिलता है। जो कि छिन्न-भिन्न होती जनता के लिये एकता का प्रतीक है। जिस प्रकार एक ओर तो वे कहते हैं कि—

"गो, गोचर जहां लगि मनु जाई,
तहां लगि माया जानेहुं भाई"

तो दूसरे स्थान पर वे कहते हैं—

"ईश्वर अंस जीव अविनासी,
चेतन अमल सहज सुख रासि"

तुलसी के समय में वैष्णव और शैव एक दूसरे के घातक बने हुए थे। उन्होंने मानस में सभी देवी देवताओं के प्रति श्रद्धा भाव दिखाकर सभी मतों को एक सूत्र में मिलाया। वैष्णवों और शैवों के विरोध को दूर करने के लिये राम के मुख से शिव वंदना और शिव के मुख से राम की वंदना कराई है, शिव राम की बंदना करते हुए कहते हैं —

"जिन हरि भगति हृदय नहिं आनी
जीवत मृत समान तेहि प्रानी"

इसी प्रकार राम शिव की अर्चना करते हुए कहते हैं—

"सिव द्रोही मम दास कहावा,
सो नर मोंहि सपनेहुं नहिं भावा"

तुलसी ने ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग जो कि दो भिन्न धारायें थी उनमें भी समन्वय करके आदर्श प्रस्तुत किया, यथा—

"ज्ञानहिं भक्तिहिं नहिं कछु भेदा
उभय हरहिं भव-सम्भव खेदा"

इसी प्रकार तुलसी ने मानस में ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनों रूपों को अपनाया है उन्होंने यह घोषित किया है कि भक्ति के बल से निर्गुण भी सगुण हो जाता है। यथा—

"अगुनहिं सगुनहिं नहिं कछु भेदा
गावहिं स्रुति पुरान बुद्ध वेदा"

इस प्रकार तुलसी ने सभी मान्यताओं का समन्वय करके एक ऐसे युगधर्म की स्थापना की जो सभी को मान्य हो सकता है। आज सभी मानस के धार्मिक आदर्शों को मानकर चलते हैं।

तुलसी ने साहित्यिक क्षेत्र में भी बहुत बड़ा काम किया है। उन्होंने अपने समय में प्रचलित सभी काव्य रूपों और काव्य शैलियों का प्रयोग किया। उनके मानस में ही अनेकों छंदों का प्रयोग मिलता है। मानस में सभी रस सफलता के साथ वर्णित मिलते हैं। तुलसी के साहित्य कौशल को देखकर हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं—

"उन्होंने नाना पुराणों और निगमागम का अध्ययन किया था। साथ ही लोकप्रिय साहित्य और साधना मार्ग की नाड़ी पहचानने का उन्हें अवसर मिला था। उस युग में प्रचलित सब प्रकार की काव्य पद्धतियों को उन्होंने अपनी शक्तिमती भाषा की सवारी पर चढ़ाया था।"

इस प्रकार तुलसी के सम्पूर्ण मानस का अध्ययन कर लेने के पश्चात हम यह देखते हैं कि तुलसी ने कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं छोड़ा कि जिससे हमें एक नवीन प्रेरणा नवीन सन्देश प्राप्त न होता हो।

सद्गुरुशरण अवस्थी के शब्दों में—

'गोस्वामी भारतवर्ष के अऋण ऋणी हैं। भारतीय संस्कृति की वे कीर्ति हैं। सच्चे साधु हैं। छिपे हुए शिक्षक और धीमे सुधारक हैं।

विदेशी विद्वान नौक्स का कहना है कि—

'भारत का किसान भी दूसरे देशों के नेताओं से अधिक संस्कृत है। इस बात का श्रेय बिना किसी पक्षपात के तुलसी को दिया जाता है। क्योंकि आज के भारत का धर्म और संस्कृति तुलसी सम्मत धर्म और सस्कृति है।"

१—निर्धन व्यक्ति तो केवल कुछ ही वस्तुओं का इच्छुक है परन्तु लोभी तो प्रत्येक वस्तु का मोहताज है।

—राम कृष्ण परम हंस

२—चरित्रवान बनो जगत स्वयं ही मुग्ध हो जायेगा।

—राम कृष्ण परम हंस

३—सत्य बोलना एक स्वाभाविक बात है झूठ बोलना एक अर्जित कला है।

—श्री आनन्द
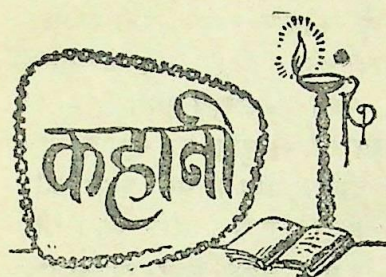
बे सहारा

कुमारीप्रवीण बाला १२ अ

पवन की उंगलियाँ टाईप राइटर पर जल्दी जल्दी थिरक रही थीं। कि अचानक उसकी उंगलियां टाईप राइटर पर रुक गयीं। इसके सामने वाली लड़की उसे एक टक से निहार रही थी, फिर पवन को अपनी आँखों पर विश्वास न रहा जिस लड़की को वह जानता नहीं था। वो लड़की ..... कुछ सोचकर फिर उसने काम करना शुरु कर दिया। मगर बराबर वह कनखियों से उसे देख लेता फिर अचानक ही ठंडी आह भर कर रह गया, क्योंकि उसका जीवन बहुत ही कांटों से भरा हुआ था। बचपन से ही उसके माता पिता का साया उसके सिर पर से उठ गया था। केवल एक उसकी बड़ी बहन थी तभी से बहन भी उसके दुख से पीली होती गयी। और टी० बी० की बीमारी लग गई—आज भी उसकी तबीयत बहुत खराब थी इसलिये पवन जल्दी जल्दी काम कर रहा था। शाम को जल्दी ही वह घर गया। बहन की तबीयत अधिक खराब देख कर वह घबरा गया और गांव की नदी की तरफ चल पड़ा उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह क्या करे उसके पास इतने पैसे भी नहीं थे कि वह अपनी बहन का ठीक तरह इलाज करा सके वह क्या करे? कहां जाये? वह नदी के किनारे बैठ कर सोचने लगा। वह छोटी-छोटी कंकड़ियाँ नदी में फैंकने लगा। कुछ देर के लिये जो नदी के शान्त जीवन को भंग कर देती थीं। अब सूर्य छिपने लगा सूर्य की लालिमा उसके मुख की दुःख की रेखाओं को और गहरी कर रही थीं। फिर कब दिन छिपा उसे ख्याल नहीं फिर अचानक बहन की याद आते ही वह घर की तरफ भागा। वहाँ उसकी बड़ी बहन बुरी तरह खांस रही थी। पवन ने एक लोटे से पानी दिया और फिर सोचने लगा। बहन ने टूटी-फूटी आवाज में कहा—मेरे छोटे तथा प्यारे भाई तू कहां चला गया था। धीरे धीरे रात की काली चादर में सारी बस्ती के सारे लोग सो जाते हैं मगर एक अभागा पवन जो अपने दुःखों को कोस रहा था। उसकी आंखों में नींद का नामों निशान न था। ठंडी हवा के झोंके उसके जीवन की आशा को जला बुझा रहे थे।

सुबह जब वह ऑफिस पहुंचा तो सामने उसी लड़की को देख कर ठिठक गया। वह अब भी मुस्करा रही थी। पवन उसके किनारे से होकर निकल जाना चाहता था। मगर वह उसके चेहरे की उदासी को परखने लगी पवन का चेहरा बहन की चिन्ता से दिन प्रतिदिन पीला पड़ने लग गया था। दाढ़ी कुछ बढ़ चुकी थी। वह छुट्टी होते ही ऑफिस से घर की तरफ चल दिया। घर में पहुँचते ही उसके पांव रुक गये उसकी बहन के पास एक औरत जो उसी गाँव में रहती है बैठी थी। पवन को देखकर उसने कहा देख तेरा भाई पवन आ गया, पवन की बहन की आँखें थोड़ी थोड़ी खुली और अपने भाई को खोजने लगी। बहन तुम ठीक हो तुम्हें कुछ भी नहीं हुआ है पवन कह उठा। बहन ने पवन का हाथ पकड़ कर कहा भइया तू घबराना

नहीं मैं जा रही हूँ। इतना कह कर पवन की बहन के प्राण पखेरु उड गये। पवन के घर का अन्तिम साया भी सदा सदा के लिये उठ गया। आज पवन की बहन का दाह-संस्कार हो रहा था उसकी चिता का धुंआ आकाश में उड़कर पवन को मानों आशीर्वाद दे रहा था। और न जाने कब दिन ढल गया। पवन ने उठ कर देखा पीछे वही लड़की खड़ी थी और पवन को अपनी ओर देखते ही उसकी आंखों से रुकी हुयी अश्रुधारा फूट पड़ी और सिसकते २ बोली पवन बहन हमें छोड़ कर चली गयी। भगवान को यही मंजूर था। और वह गिर पड़ी पवन भी रो रहा था। और दोनों के आंसुओं का पारस्परिक मिलाप हो रहा था।

आरती को जब होश आया तो अपने को गिरा पाया फिर आरती ने उठ कर पवन को सहारा दिया। और दोनों घर की ओर चल पड़े। घर में घोर अन्धकार, शोक अन्धकार था आरती ने दीया जलाया और खाना बनाने लग गई। खाना लेकर जब वह पवन के पास गई तो पवन सो चुका था उसने पवन को जगाया और खाने के लिये कहा. पवन ने कहा मुझे भूख नहीं तुम्हीं खा लो मैं ... भला कैसे खा सकती हूँ जब तक आप ही न खायेंगे। खाना वहीं थाली में पड़ा हुआ ठंडा होता रहा। थोड़ी देर बाद आरती उठते हुये बोली अच्छा मैं जा रही हूँ। किसी काम की आवश्यकता हो तो कह देना मैं भी थोड़ी दूर रहती हूँ और कह कर चल पड़ी। पवन ने उसे आवाज दी और कहा आपने अभी तक अपना नाम तो बताया नहीं आरती आंखे नीचे किये खड़ी रही मुझे आरती कहते हैं। मैं भी तुम्हारे समान एक बे सहारा हूं। मेरे बारे में आप ज्यादा चिन्ता न करें क्यों आप तो पहले से ही चिन्तित हैं। अच्छा अब आप सो जाइये।

दिन बीतते गये और पवन ने आरती से शादी कर ली कैसी शादी थी, जिसमें तारे बराती थे और चांद सहेलो। पवन एक अच्छा हमसफर पाकर बहुत खुश था। आरती भी कुछ कम खुश न थी। समय धीरे धीरे बीतता गया। अब पवन और आरती एक दूसरे के हो चुके थे। आज पवन और आरती घूमने निकले थे। घूमते घूमते आरती एक जगह पर रुक गई और पवन से कहा आप यहीं खड़े रहिये मैं जरा अपनी सहेली से मिल आऊं वह जल्दी से ऊपर चढ़ गयी पवन नीचे ही खड़ा रहा। आरती ने देखा कि राजू अर्थात राजेश खड़ा शराब पी रहा है वह उसके हाथ से कप छीन लेती है और राजू कहता है कि तुम यहां क्यों आई हो तुम्हारी तो शादी हो गयी है। हाँ! मैं तुमसे एक चीज मांगने आयी हूँ राजू इन्कार न करना, नहीं तो हमारा खुशी जीवन तबाह हो जायेगा फिर वह रोने लगी राजू ने कहा कि तुम अब क्या चाहती हो; मेरा घर तो तबाह कर दिया और उसकी चिंगारियां तो अभी बुझी ही नहीं कि तुम और आग लगाने आ गई हो। आरती ने कहा मैंने आज तक कुछ नहीं मांगा आज मुजे मेरे पत्र वापिस कर दो, प्यार का बदला न लो राजू ने चेहरे पर मुस्कान लाते हुये कहा वह पत्र तुम्हें इतनी जल्दी कैसे प्राप्त होंगे। तुमने तो मेरा जीवन सुलगा कर राख कर दिया। अब मुझे राख बुझाने का अवसर तो दो जाओ आरती जाओ फिर कभी फुरसत में आना। उसे यह न पता था कि राजू इतना बुरा निकलेगा और एक दम तेजी से नीचे उतर गई राजू ने आरती को बहुत पुकारा लेकिन वह न रुकी। आज राजू अपने को जीता जुआरी मान रहा था। वह शराब पीता रहा आरती उदास होकर नीचे उतर गयी। पवन ने पूछा क्या सहेली नहीं मिली जो कि इतनी उदास हो, नहीं तो आरती के मुंह से निकल गया। ऐसे ही शादी के गिले हो रहे थे। तो फिर

छात्राओं द्वारा 'ढाई घंटे का आफीसर' प्रहसन का सुन्दर दृश्य

छात्राओं द्वारा संस्कृत-नाटक 'सीता परित्याग' का एक मार्मिक दृश्य
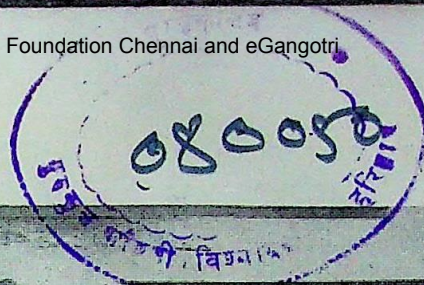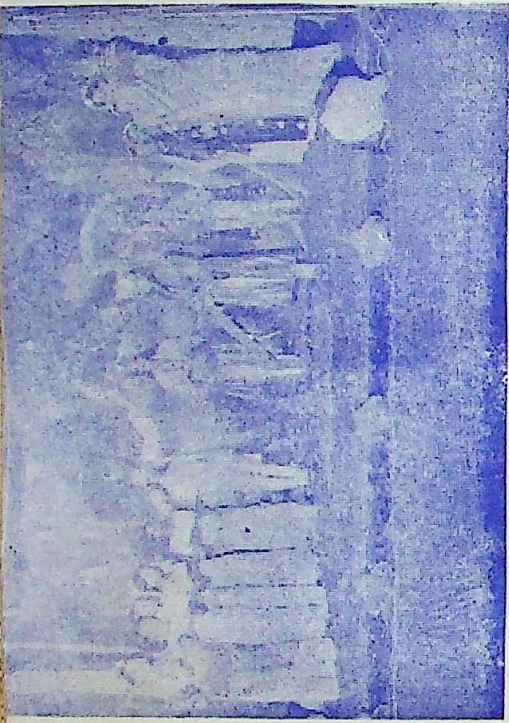
छात्राओं द्वारा प्रस्तुत "शिव - पार्वती" वन्दना

श्री इन्दु भूषण जी खण्डूड़ी द्वारा भाषण

उदास होने की क्या बात थी। आरती मुख पे बनावटी मुस्कान लाते हुये बोली आप तो ऐसे ही सोचने लगे। चलो आओ घूम आये। आरती ने सोच लिया था किसी न किसी तरह से राजू से पत्र अवश्य प्राप्त कर लूंगी। दोनों घर पहुंचे खाना खा कर आरती तो सो गयी मगर पवन काम करता रहा। वह काफी रात तक जागता रहा। आरती सोये सोये टूटे-फूटे शब्दों में कह रही थी "राजू मुझे यह नहीं मालूम था कि तुम इतने बेदर्द निकलोगे"। पवन ने यह जब सुना तो उसे आश्चर्य हुआ कि यह राजू कौन है। पवन भी काम करके सो गया।

सुबह उठते ही पवन ने आरती से पूछा सुनो आरती यह राजू कौन है। राजू का नाम सुनते ही आरती की आंखों में आंसू आ गये। और वह घबरा गई आरती सभलने पर भी न सभल पायो और पवन के चरणों में गिर पड़ी पवन इसका मतलब नहीं समझ सका कि कौन है वह जिसका नाम सुनते ही आरती के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी। पवन यह पूछ कर ही रहेगा। इसलिये वह ऑफिस से जल्दी घर आ गया. परन्तु घर आकर आरती को न पाकर निराश हुआ, फिर कुछ देर बाद वह शहर के पार्क में गया, पार्क में जाते ही उसके पांव ठिठक कर रह गये। आरती एक युवक के सामने बैठी अपने आंसू बहा रही थी वह आदमी जो उसके सामने बैठा था जो हंसता ही जा रहा था। पवन उन्हीं कदमों से पीछे लौटकर दूसरे रास्ते छिपकर आया परन्तु वह दोनों को न पाकर निराश हुआ वह घर चला गया। घर में पहुँचते ही देखा कि आरती रसोई घर में बैठी चाय बना रही है। पवन को देखते ही बोली बहुत देर लगाई क्या आज काम में अधिक समय लगा। पवन उस की दशा को देखता रहा और क्रोध से उसे घूरता ही रहा उसे इस पर विश्वास ही नहीं आ रहा था आरती उसके लिये ऐसी कलकंनी होगी। पवन ने आरती से पूछा आरती तुम आज कहां गयी थी ? ऐसा सुनने पर तो मानों आरती को कई सर्पों ने एक साथ डस लिया हो फिर वह सभंलते हुए बोली अपनी सहेली के घर उसके लड़के की जन्म दिन की पार्टी में गई थी। आरती ने इतना बड़ा झूठ बोला पवन का तो विश्वास ही नहीं आ रहा था कि आरती इतनी झूठी और कुलंकनी भी हो सकती है। उस समय तो पवन क्रोध पीकर रह गया। और उसकी समझ में नहीं आ रहा था। कि वह क्या करे ? रात को जब आरती पवन के लिये खाना लाई तो उसने मना कर दिया। जब आरती ने अपने हाथों से खिलाना चाहा तो पवन को गुस्सा आया, उसने खाने की थाली को दूर फंक दिया और आरती से कहा कि जिस खाने में जहर मिला हो तो उसे खाना ही क्या ? और तेजी से घर से निकल गया आरती आंसू ही बरसाती रह गयी। सारी रात बीत गयी सारा अगला दिन भी बीत गया मगर पवन न आया रात को आरती जागती रही रात को दो बजे दरवाजे पर दस्तक हुई आरती ने दरवाजा खोला। दरवाजे पर पवन शराब के नशे में चूर खड़ा था आरती चौंक कर रह गई। पवन दरवाजा खुलते ही गिर पड़ा और आरती की तो चीख ही निकल गई। पवन आज शराब पीकर आया था उसे जरा भी होश नहीं था। आरती ने पवन को जैसे ही सहारा देना चाहा मगर पवन ने आरती को तमाचा दे मारा। और कहने लगा चुड़ैल मेरे घर को तबाह करते तुझे शर्म नहीं आयीं। जा मुझसे दूर चली जा और अपनी कोट का जेब में से एक शराब की बातल निकली और पीने लगा और आरती ने उसे पीने से रोकना चाहा मगर पवन ने उसे धक्का दे दिया। और उसे गालियां देने लगा। आरती ने उठते हुये कहा मैं तुम्हें और नहीं पीने दूंगी कहीं तुम पागल तो नहीं

हो गये हो। पवन जोर से चिल्ला उठा और कहने लगा। हट जाओ इस संसार के नाटक को पूरा होने दो तुमने अपना नाटक तो समाप्त कर लिया अब मैं अपना नाटक शुरू करने वाला हूँ। आरती ने बोतल पकड़ रखी थी और पवन खींचता जा रहा था। बोतल टूट गयी। उसका काँच बिखर गया एक कांच का टुकड़ा पवन के माथे में घुस गया और वहां से खून निकलने लगा। आरती ने अपनी साड़ी से कपड़ा फाड़ कर माथे पर बांध दिया। लेकिन खून तो रुकने का नाम ही नहीं ले रह था। सारी रात पवन के माथे से खून बहुत बह गया सुबह तक पवन का बहुत खून बह चुका था। पवन को बहुत कमजोरी आ गयी थी जिसके कारण वो बेहोश हो गया था। आरती ने उसे अस्पताल पहुंचाया। पहुँचते ही आरती राजु के सामने उसके चरणों में गिर गयी और रोने लगी सिसकते हुये राजू से कहने लगी। राजू आज तक मैंने जो कुछ भी तुमसे मांगा तुमने से इन्कार कर दिया परन्तु मैं आज तुमसे अपना सुहाग (मेरी मांग का सिन्दूर) आपके हाथों में है। मेरे पवन को बचा लो, इतना कहकर वह राजू के चरणों में ही बेहोश हो गयी। राजू एकदम से घबरा गया सब अस्पताल के लोग उसके चारों ओर इकट्ठे होने लगे। उसने सबकों हटा दिया आरती को होश में लाने लगा, होश में आने पर आरती से राजू ने धीरज बंधाते हुए कहा आरती आज तक मैंने तुम्हारा कभी भी कार्य पूरा नहीं होने दिया। परन्तु आज मैं पूरी कोशिश करूंगा और राजू आप्रेशन रूम में चला गया। और आरती बाहर खड़ी हुई थी उसे अपना पिछला जीवन याद आने लगा। कभी वह राजू को अपना पति मानते हुये उससे कितनी आशायें रखती थी आज भी उसी का सुहाग उसी राजू के हाथ सौंप चुकी है। उसका सुहाग बचाना तो उसी का कर्तव्य है। पवन के माथे में कांच बहुत गहरा जा चुका था। कांच के निकलते ही पवन की एक जोर से चीख निकली और उस चीख के साथ ही पवन के प्राण पखेरू उड़ गये।

राजू एक अच्छा डाक्टर था फिर भी वह पवन को ना बचा सका। और वह सोचने लगा। "आरती तो मेरे ऊपर शक करेगी कि वो समझेगी कि जान के ही उसके पति को समाप्त कर दिया है।" मैं उससे कैसे आंखें मिलाऊंगा मैं उसे कैसे बताऊगा। लेकिन कुछ साहस करके आरती के सामने आकर बोला सौरी ... और इतना ही कहकर वह तेजी से बाहर निकल गया। आरती की तो चीख निकल गई। और वह पवन के पास गयी जो कि गहरी निन्द्रा में सो चुका था। वह तो अब जाग भी नहीं सकता था। आरती उसके सीने पर सिर रख कर रोती रही मगर कौन था उसका जो दर्द सुनता वह तो अब अकेली ही रही थी।

पवन का दाहसंस्कार हो रहा था आरती उसकी चिता के शोले देखे जा रही थी जो कह रहे थे, आरती तुम खूनी हो, तुम्हीं ने मेरी यह दशा की है। तुम बेवफा हो। आरती मैं तुम्हें कभी भी माफ नहीं करूंगा।" आरती वहां से नदी के किनारे चली गई। दूर तक फैले उस जल को देखती रही जो उसके जीवन के समान शान्त था मगर उसकी तो मन्जिल थी और आरती एक ऐसी थी जिसके जीवन की तो कोई मन्जिल नहीं थी। वह उसी रास्ते आगे चल पड़ी और चली ही जा रही थी जिसका कोई अन्त न था। वह अकेली और बेसहारा बन कर रह गयी उसकी मन्जिल का अन्त हो चुका था।

ज्योति जलती रही

कु० संगीता घई IX B

जब से इस देश में अंग्रेजों का राज्य हुआ। तब से हमें नीचे गिराने की ही कोशिश की जा रही है जब यहां मुगलों का राज्य था तब ऐसी बात एक तरह से नहीं थी, क्योंकि मुगल बादशाह इस देश के लिये परदेशी होकर नहीं रहे। उन्होंने इसे अपना ही देश समझा और जो कुछ किया इस देश के लिये किया। लेकिन अंग्रेज तो परदेशी होकर आये और आखिरी वक्त तक परदेशी ही रहे। उनका घर तो इंग्लैंड था भारत तो उनका बाजार था। आदमी का स्वभाव होता है कि अपना घर पहले देखता है।

शुरू-शुरू में अंग्रेज आये थे व्यापार करने। व्यापार करते करते अपनी चालों से यहां राज्य करने लगे। यहाँ तक तो गनीमत थी। मजबूरी के कारण कुछ हद तक तो यह बर्दाश्त भी था, लेकिन हमें मिटाने के लिये वो दो कदम आगे चले। हमारे धर्म और हमारी सामाजिक रीति-रिवाज में भी वे दखल देने लगे। ऐसा लगने लगा कि हम किस तरह जिन्दा रहे, यह भी अंग्रेजों से सीखना होगा।

सन् १८५७ में लड़ी गई आजादी की पहली लड़ाई उसी का फल थी। अंग्रेजों ने तब समझा कि इस देश की मिट्टी को छेड़ना ठीक नहीं। ऊपर ऊपर से जैसा चलता था, वैसे ही चलने दे। आखिरकार महारानी विक्टोरिया ने इंग्लैंड से यह घोषणा की कि इस समय के मामलों में हम दखल नहीं देंगे।

अंग्रेजों की नीयत साफ नहीं थी उनकी नीति थी बांटकर अलग कर दो और फिर एक एक कर दोनों को अपने काबू में कर लो वे यही करते थे।

बंगालियों को कमजोर करने के लिए अंग्रेजों ने बंगाल के दो टुकड़े कर दिये। बँटवारा बँगाल का हुआ, पर ललकार उठी महाराष्ट्र में। बंगाल के बँटवारे के खिलाफ लोकमान्य तिलक गरज उठे। इस देश की मिट्टी की पुकार हुई और इस देश के लोग जान हथेलियों पर लेकर चले। इसी तरह जब चम्पारन के निरीह किसानों की पुकार हुई तो गांधी जी दौड़े। सवाल किसी प्रान्त का नहीं, वह देश का सवाल हो गया।

भारत में आजादी की मांग की लहर उठी तो अंग्रेजों के दबाये न दबी। राख बुझ चुकी थी। अब तो अंगारे दहक रहे थे देश के कुछ पढ़े लिखे नेताओं का आन्दोलन नहीं था। यह सारी जनता आन्दोलन था। अंग्रेजों ने हमारे देश के आगे बढ़ने के रास्ते रोक लिये थे। न हम खुले दिल से सोच सकते थे न कुछ कर सकते थे। न हमारे देश में किसी तरह का उद्योग था जहाँ कि हमारे देश के लोग अच्छे कारीगर होते, इन्जीनियर होते। स्कूलों में पढ़ाई का ढ़ग ऐसा था कि अपने गौरव को, अपने सम्मान को भूल जाए। अंग्रेजों की वीरता की कहानियां पढ़ाई जाती थी। उनका ही गुणगान सिखाया जाता था। पढ़ा लिखा आदमी एक

मामूली कर्लक से आगे कुछ हो नहीं पाता था। देश के बड़े बड़े पद अंग्रेजों ने सँभाल रक्खे थे। कहते थे कि हिन्दुस्तानी ऐसे जिम्मेदारी के ओहदे सँभालने के काबिल नहीं हैं। अंग्रेजों का हमेशा यही ख्याल रहता था कि इस देश को मौका न दिया जाये। यहां के लोगों में हीन भावना पैदा हो, वे हमेशा गरीबी के शिकार बने रहें, यही वे चाहते थे। ऐसे वक्त में भी हमारे देश की मिट्टी ने ऐसे सपूत पैदा किये जिन्होंने हजार बाधाओं के होते हुए भी इस देश का मान बढ़ाया। और आजादी की ज्योति से ध्वनित होती रही एक ध्वनि "भारत माता की जय"।

* 'चुने हुए फूल' *

सीमा सेठी, द्वादश-ब

● मन और विषयों में आपस में मुकाबिला हो रहा है। मन कहता है देखता हूँ तू मुझे कैसे छोड़ता है और विषय कहते हैं ऐ मन हम तुमसे जुदा होकर रह ही नहीं सकते। देखें तू हम से क्यों कर पल्ला छुडाता है।

● सम्पूर्ण जनता को प्रकृति की ओर निमन्त्रण दिया गया है कि ऐ जनता मेरी दुकान पर आओ पांचों तरह की सामग्री पसंद अपनी पसद की ले जाओ।

● अगर दुनियां की लज्जत के शौकीन बन बैठे तो यह विषय नाग बन कर हमें डस लेंगे। जब नफस के गुलाम बने तो कोई न कोई बिमारी शरीर में फूट पड़ेगी जो तुम्हें नाकार बना देगी।

● ऐ शान्ति को ढूण्ढने वाले समस्त इच्छाओं को छोड़कर अपने इष्टदेव से लिए गए नाम का अभ्यास कर ताकि तू शान्ति का सच्चा रस चख सके।

● इन्सान को बुद्धिमान कहा गया है इसका कर्त्तव्य है कि अपने अन्दर नेक विचार उभारता रहे। सात्विक आहार व्यवहार और नियमों को अपनायें।

● रोशनी में चलने वाले मुसाफिर को जैसे कोई कष्ट नहीं होता, चाहें कैसा ही मुश्किल रास्ता हो, कई तरह की कठिनाईयां मुंह फाड़े सामने खड़ी हो वह उन पर काबू पा लेता है। इसी प्रकार सत्तोगुणी अर्थात् नेक इन्सान भयभीत नहीं होता। हर प्रकार की कठिनाईयों का सामना करता हुआ अपनी मंजिल को पा लेता है।

● नाम की लगातार साधना से अन्तःकरण में एकत्रित हुई कुटिल माया के विकार और बुरे संस्कार एक एक करके मिट जाते हैं।

● केवल भगवान ही ऐसे दीन दयाल है, ऐसे गरीब निवाज है जो हर हाल में अपने शरण आए हुए को अपने हृदय से लगा लेते हैं। न कोई गरज, न कोई मतलब।

● जब इन्सान अपने मन को एकाग्र करके सिमरन करता है तो ऐसा करने से उसे सुख मिलता है कि जो न तो जबान से कहा जा सकता है और न ही लिखा जा सकता है।

'सत्यमेव जयते'

वंधना जोशी
IX B

दीवान चन्द को कौन नहीं जानता ? अधेड़ उम्र भारी भरकम शरीर, लम्बी रौबीली मूंछे और शरीर पर काला सूट। उसके साथ वकील तथा मुवक्किल मुक्त कण्ठों से उनका गुणगान करते नहीं थकते। दो हजार रुपये मासिक आय वाले इन वकील साहब के पुत्र हैं आनन्दचन्द। उसे भी उन्होंने एम० ए० एल० एल० बी० की उपाधि से विभूषित कराकर अपनी ही श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया।

यों तो लड़के के मैट्रिक पास करते ही लड़की वाले विवाह के लिए घर पर धरना देना शुरू कर देते हैं। फिर यह तो एक नामी वकील का वकालत पास बेटा था। अतः रिश्तों की क्या कमी। पहले तो वकील साहब टालमटोल करते रहे पर जैसे ही आनन्द ने पहले दिन वकील बनकर अदालत में कदम रखा। उनको झुकना पड़ा परन्तु अब तो वकील साहब की बुद्धि पर माया का पर्दा पड़ चुका था। वे तौल-२ कर देख रहे थे कि कौन कितना दहेज दे सकता है। बहुतों ने यह भी कहा कि हम लड़के को लन्दन भेज देंगे। पर वकील साहब-अरे साहब ! मैंने लड़के को पढ़ा लिखाकर वकील बनने में पचास हजार से ऊपर खर्च किये हैं। यदि मैंने उसके लिए इतना मांग भी लिया तो कुछ बुरा नहीं किया।

पर डा० सिन्हा तो आनन्द पर बुरी तरह रीझ गये थे ये सज्जन वकील साहब के निकटतम मित्रों में से थे। उनकी पुत्री किरण आनन्द के साथ पढ़ चुकी थी। उन्होंने वकील की सब बातें व शर्तें सत्य मान ली थीं। सन्ध्या को आनन्द जब क्लब से लौटा तो वकील साहब आराम से कुर्सी पर बैठे हुए सिगार का धुंआ उड़ा रहे थे। उसे देखते ही बोले—"बेटा आनन्द ! अब तुम बड़े हो गये हो मैं सोचता हूं क्यों न तुम्हारे लिए एक साथी ढूण्ढ लिया जाये।"

'परन्तु पिता जी ! मैं तो अभी दो चार साल तक शादी नहीं करना चाहता हूँ ?

वकील साहब की आशा लता पर तुषारपात हो गया। उनका विचार था कि वे आनन्द को सोने के जाल में फंसा लेंगे। अतः वह उग्र स्तर से बोले-क्या कहां क्या बूढ़ा होकर शादी करेगा ? मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। शादी तुम्हें करनी हो पड़ेगी, उन्हें मैं वचन दे चुका हूँ। फिर थोड़ा शान्त होकर कहने लगे, डा० सिन्हा की लड़की किरण तुम्हारी क्लास फैलो रह चुकी है। और वे पचास हजार रुपया भी दे रहे हैं। अब मेरी इज्जत तुम्हारे हाथ है।

किरण का नाम सुनते ही आनन्द चौंक पड़ा उसे अपने कानों पर विश्वास न हुआ। यद्यपि वह किरण से प्रेम करता था और किरण भी उससे प्रेम करना चाहती थी पर क्या उसके पिता अन्तर्जातीय विवाह के लिये तैयार होंगे, उसकी उसे कल्पना भी न थी, आनन्द जो कि दहेज प्रथा का घोर विरोधी था, पचास हजार का नाम सुनते ही वह सारा रहस्य समझ गया। और गुस्से से भरकर बोला.- "और यह रिश्ता मुझे मन्जूर नहीं है यह कहकर वह तेजी से बाहर निकल गया।

तीन दिन तक पिता पुत्र आपस में नहीं बोले। अन्त में चौथे दिन वकील साहब ने अपने अस्त्र-

शस्त्र निष्फल होते देख विनीत होकर आनन्द से कहा—'क्यों तुम बुढ़ापे में मेरी मिट्टी पलीत कर रहे हो।' कहते-२ उनके आसूओं की गंगा-जमना द्रुत गति से बह निकली। आंसूओं के प्रभाव से आनन्द का बज्र हृदय भी मोम की तरह पिघल गया। पिता के समक्ष उसे अपना हठ त्यागना पड़ा पर वह अपने निश्चय पर अडिग रहता यह उसकी आत्मा की आवाज थी।

फिर एक दिन वह भी आ गया जब आनन्द सेहरा बांधे किरण के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ शहर के सभी प्रसिद्ध लोग बारात में सम्मिलित थे। घूमधाम से बारात निकली और रात को शहनाई की मधुर ध्वनि में अग्नि के समक्ष किरण और आनन्द एक होकर 'आनन्द की किरण' बन गये। अगले दिन डाक्टर साहब ने जो दहेज दिया उसे देखकर लोगों की आंखें खुल गयीं—स्कूटर, रेडियो टी सेटस, फर्नीचरस, शृंगारदान आदि सोने की दो अंगूठियां और दो घड़ियां जो वह बहू के लिए थी। वस्त्र और सोने चांदा के गहनों तथा बर्तनों की संख्या गिनना तो मुश्किल था।……— और! इन सबके मध्य था पचास हजार से भरा चांदी का थाल जो सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। जिन्हें देखकर वकील साहब सोच रहे थे कि कब यह काम खत्म हो और कब वे धनराशि को हाथ लगायें।

विदा का समय आया चलने की सब तैयारियां पूर्ण हो चुकी थीं। आनन्द अपनी सास के साथ कुर्सी पर बैठा था। देर होते देख वकील साहब आकर बोले—'बेटा आनन्द चलो।' कहां? वकील साहब इस अप्रत्याशित प्रश्न पर भोचक्के रह गये। बोले—'अपने घर।'

आनन्द ने कहा—पिता जी, अब तो मेरा घर यही है। अब मुझे यहीं रहना है। वस्तु बिक चुकी है आपका स्वामित्व बदल चुका है। डा० साहब ने आपको कैश पेमेन्ट किया है आप अकेले जाइये।

वकील साहब ने अपने पैरों के नीचे से धरती खिसकती महसूस की उनकी आंखों के आगे अन्धेरा छा गया। बड़ी कठिनाई से वह सम्भल कर बोले— तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया? चल उठ बडा आया मुझे शिक्षा देने वाला—कह कर उन्होने उसका कंधा झकझौरा। पर आनंद निश्चेष्ट भाव से बोला पिताजी आपको मेरी कीमत डाक्टर साहब से आवश्यकता से अधिक मिल चुकी है। अब आपका मुझ पर कोई अधिकार नहीं।

वकील साहब ने और कोई उपाय न देख कर आंसू बहाने आरम्भ कर दिये। सभी बरातियों का जमघट लग गया। वर तथा बधू पक्ष दोनों ने समझाया पर आनंद अपनी बात पर अडिग रहा। अंत में वकील साहब बोले – आखिर तू चाहता क्या है आप इनका रुपया लौटा दें। यदि कोइ और समय होता तो वकील साहब रुपया न छोडते। परंतु इस समय इज्जत का प्रश्न था। अतः रुपया लौटाना ही उचित समझा।

इसी समय एक और समस्या खडी हो गई। डाक्टर साहब रुपया लेने से इंकार कर रहे थे उनका कहना था कि रुपया तो उन्होने अपनी बेटी किरण को दिया है पर आनन्द के हठ और दृढ निश्चय के आगे उन्हें भी झुकना पडा।

तभी शहनाइयों की ध्वनि के साथ किरण को डोली में बैठाया गया। रिकार्ड बज रहा था....

डोली चढके दुल्हन ससुराल चली ....

प्रान्तीय क्रीड़ा प्रतियोगिता

कु० मधु कौशिक ११ बीं

खेल का महत्त्व

मनुष्य एक बुद्धिजोवी प्राणी है। अतः जीवन में प्रत्येक कार्यों के साथ आमोद-प्रमोद भी आवश्यक है जिससे जीवन सुखद व आनन्दमय हो जाता है, इसके साथ-साथ इसका प्रभाव स्वास्थ्य पर भी पड़ता है, उत्तम स्वास्थ्य के लिये मानसिक संतुष्टी भी अत्यन्तावश्यक है।

हम यदि इतिहास के पृष्ठों को उलट कर देखें तो हमें ज्ञात होगा कि वैदिक काल से ही व्यक्ति खेल-कूद द्वारा अपना मनोरंजन करता रहा है। जैसे आंख मिचोनी, ईत्यादि जैसे-जैसे संसार उन्नति के शिखर पर चढ़ता गया, वैसे वैसे ही इन खेलों में परिवर्तन आता गया है। और विभिन्न प्रकार के खेलों द्वारा मनुष्य अपना मनोरंजन करता रहा।

खेलों से सम्बन्ध सुदृढ़ होते हैं :

खेलों द्वारा हम एक दूसरे के समीप आते हैं और प्रेम भावना बढ़ती है। प्रत्येक वर्ष हमारा देश विदेशों में अपने खिलाड़ी भेज कर और विदेशों से हजारों खिलाड़ी भारतवर्ष में आकर खेलते हैं! जिससे आपसी सम्बन्ध सुदृढ़ होते हैं और प्रेम भावना बढ़ती है।

। खेलों का नया रूप ।

इस समय हमारे देश में कई प्रकार के खेल-खेले जाते हैं जैसे हौकी, फुटबाल, बेड़मिन्टन, क्रीकेट, टेबिल टेनिस आदि :—

इन सब खेलों में बालीवाल भी संसार में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। और विभिन्न देशों के खिलाड़ी भारतवर्ष में इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं बालीवाल में भारत भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है!

खेलों में महिला वर्ग भी उच्च शिखर पर

पहले तो पुरुष वर्ग ही खेलों में अधिक रुचि लेता था, क्योंकि स्त्रीयों में शिक्षा का अभाव था, लेकिन अब शिक्षा की उन्नति के साथ-साथ महिलाओं ने भी खेलों में पूर्णरुप से भाग लेना शुरू कर दिया है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हमारे देश में लगभग प्रत्येक खेल की टीमें स्त्रियों की भी हैं, जो कि विदेशों में भी अपनी धाक जमा चुकी हैं।

हमारी कटक यात्राः-

इस वर्ष उ० प्र० की एक बालीबाल की महिला टीम कटक में प्रान्तीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में भाग लेने गई, और इस टीम में, मैं भी एक खिलाड़ी थीं। मेरा टीम में चुनाव रुड़की प्रतियोगिता मे हो गया था और मेरे कुशल खेल के कारण मेरा चयन किया गया!

हमने २५ दिसम्बर १९७२ को प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये रुड़की से कटक के लिये प्रस्थान किया! हमारी बालीबाल की टीम में १२ लड़कियां

थी, जिसमें चार इलाहाबाद, चार लखनऊ, दो बरेली, एक कानपुर व एक मैं स्वयं हरिद्वार से थी। इस प्रकार सबसे पहले हम रात २।। बजे सहारनपुर गये, वहां से पंजाब मेल द्वारा कटक के लिए रवाना हुए और इस प्रकार हमारी यह कटक यात्रा यहां से प्रारम्भ हुई!

अशोभनीय घटना:-

जब हम गाड़ी से सफर कर रहे थे, तो एक औरत हमारी गाड़ी के नीचे आकर कट गई, जिस पर हमारी गाड़ी रुक गई और इस वीभत्स काण्ड को देखकर हमारे रोंगटे खड़े हो गये।

रास्ते में मंजूरी रोड पर हमारे साथ जो खिलाड़ी जा रहे थे उनका स्टेशन पर झगड़ा हो गया, जिस पर वहाँ के गांव वाले हमें मारने के लिये आ गये और हमारी गाड़ी को रोक लिया, वहां हमारी संरक्षका ने हमारी जान बचाई और ईश्वर को धन्यवाद दिया।

कलकत्ता के दर्शनीय स्थल:-

२६ दिसम्बर ७२ को हम कलकत्ता पहुँचे और वहां पर हमने उस महानगरी का अवलोकन किया, जिसमें हमने ईडन गार्डन, तारामण्डल, विक्टोरिया मिमोरियल, चिड़िया घर आदि सुन्दर स्थान देखें और साथ ही एक अद्भुत विशालकाय वृक्ष देखा जोकि दो-तीन मील के भाग में फैला हुआ था! इस प्रकार समय के अभाव के कारण हम केवल एक दिन ही कलकत्ता की सैर कर पाये, लेकिन उस थोड़े समय में ही बहुत कुछ प्राप्त किया।

२८ दिसम्बर १९७२ प्रातःकाल ही कटक के लिए रवाना हुये और रात्रि में ८ बजे वहां पहुंच गये। जैसे ही हम स्टेशन पर पहुँचे वहां हमारी टीम के स्वागत के लिए प्रतियोगिता के प्रबन्धक आये थे और हमें बस द्वारा स्टेडियम ले जाया गया जहाँ हमारा ठहरने का स्थान था वहीं हमारी पूरी टीम को एक कमरा दे दिया गया।

खेलों की शुरूआत।

२९ दिसम्बर ७२ को हमारी टीम का बाहर से आई हुई टीमों के साथ मार्च पास्ट हुआ और मुख्य अतिथि को सलामी दी गई। इस प्रकार मार्च पास्ट के बाद हमारी क्रीडा प्रतियोगिता आरम्भ हो गई।

इसी दिन रात्रि के ८ बजे हमारा मैच मध्य प्रदेश की महिला बालीबाल टीम के साथ होना था। जब हमारी टीमे मैदान में उतरी तो मध्य प्रदेश की टीम में भाग लेने वाली लड़कियां हमारे से आयु में बहुत बड़ी थीं। लेकिन हमारी टीम में उत्साह था और एक नई विजय की आशा से मैच आरंभ हुआ और पहले खेल में हमें हमारी आशा के अनुसार सरलता से विजय प्राप्त हुई और इसी प्रकार दूसरे खेल में भी विजय श्री प्राप्त हुई और हम मध्य प्रदेश की टीम को पछाड़ कर दूसरे मुकाबले के लिये तैयार हुये।

३० दिसम्बर को हमारा मैच बंगाल की टीम के साथ हुआ और यह मैच प्रातः ७ बजे हुआ, इसमें भी हमें विजय श्री प्राप्त हुई और इस प्रकार हम सेमी फाईनल में पहुँच गये।

३१ दिसंबर को सेमी फाईनल में हमारा मैच केरल की टीम से हुआ। केरल टीम की लड़कियों का अभ्यास और खेलने का ढंग देखने योग्य था और वास्तव में वो लड़कियां खेल में हमारे से बहुत अच्छी थीं जिसके कारण हमें हार का मुंह देखना पड़ा, लेकिन इस हार में भी एक जीत छिपी थी क्योंकि जिस प्रकार का हमें प्रशिक्षण मिला था, उसकी अपेक्षा हमने वहां बहुत अच्छा प्रदर्शन किया।

जगन्नाथ यात्रा:—

इसके बाद २ जनवरी १९७३ तक वहाँ खेल होते रहे. जिन्हें हमने देखा और सीखा।

३ जनवरी को हम जगन्नाथपुरी गये जो कटक

प्रथम पंक्ति–कु०राधा जी, श्रीमती राजदुलारी जी, श्री राजकौशिल्या सूरी जी, सुश्री प्रधानाचार्या जी, श्री नवीन ओबराय, कु०कमला भाटिया
दूसरी पंक्ति–कु० अर्चना, कु० निधि, कु० सगीता घई, कु० मधु कौशिक, कु० आशा, कु० किरण, कु० कुसुम।
तृतीय पंक्ति–कु० दर्शन शर्मा, कु० सुषमा कु० शशि, कु० सुमन, कु० लीला।
चतुर्थ पंक्ति–कु० , कु० , कु० आशा कपूर, कु० बेलू चटर्जी, कु० शशि कौशिक।

श्री हरिदत्त बहुगुणा जी द्वारा छात्राओं को शुभाशीर्वाद

'नव-रस' प्रदर्शन में वात्सल्य रस अभिनय का एक दृश्य ।
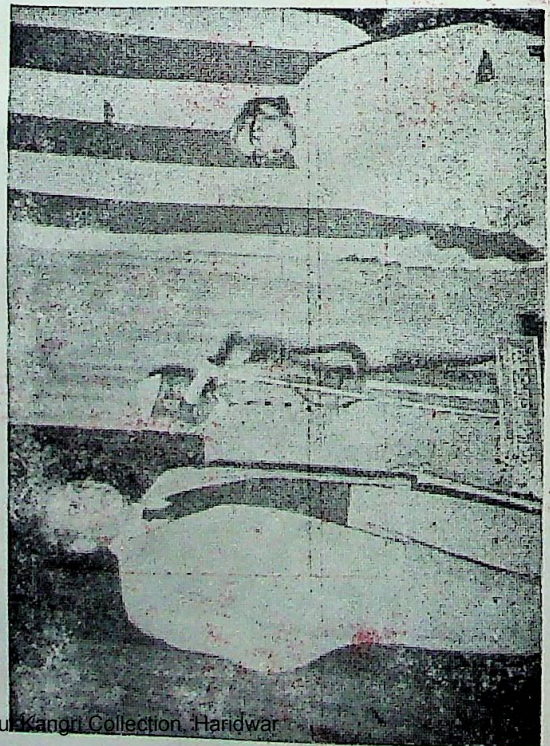
वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्री अजेन्द्र चन्द्र जी दुबे एक्जीक्यूटिव

से केवल ८ मील था। जगन्नाथपुरी में हमने समुद्र से सूर्य उदय होता देखा, जो कि अत्यन्त सुहावना दृश्य था और इसके अतिरिक्त हमने वहां पर कई ऐतिहासिक प्रसिद्ध मन्दिर देखे रात्रि के १० बजे हम कटक वापिस आ गये और अपना सभी सामान बांधकर वापिसी की तैयारी की।

३ जनवरी की रात को हम गाड़ी से कलकत्ता पहुँचे और कलकत्ता से पंजाब मेल द्वारा रुड़की के लिए प्रस्थान किया।

७ जनवरी को हम रुड़की पहुँच गये और वहां सभी लड़कियाँ अपने अपने स्थान पर चली गयीं और मैं हरिद्वार वापिस आ गई।

इस प्रकार इस प्रतियोगिता में हमें पूर्ण विजय श्री तो प्राप्त नहीं हुई, लेकिन हमने इस असफलता से सफलता की कुञ्जी प्राप्त की जिससे भविष्य में हम पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके। दूसरा इस यात्रा में हमें नये नये स्थानों को देखने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ।

रास्ते में मंजूरी रोड पर हमारे साथ जा खिलाड़ी जा रहे थे उनका स्टेशन पर झगड़ा हो गया जिस पर वहां के गाँव वाले हमें मारने के लिये आ गये और हमारी गाड़ी को रोक लिया, वहाँ हमारी संरक्षका ने हमारी जान बचाई और ईश्वर को धन्यवाद दिया।

अनमोल वचन

[हरवेल कौर XII C]

१) प्रार्थनाओं के कुंए में तरना ठीक हैं पर डूबना आत्म हत्या। —महात्मा गाँधी

२) शिक्षक उस मोमबत्ती की भांति है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देती है। —सुभाषचन्द्र बोस

३) दुर्वचन पशुओं तक को अप्रिय लगते हैं— गौतम बुद्ध

४) पुस्तकें जीते-जागते देवता हैं, उनकी सेवा करके तुरन्त वरदान प्राप्त किया जा सकता है। —अज्ञात

५) दूसरे का अहसान लेना अपनी आजादी बेचना है। —महात्मा गांधी

६) क्रोध एक ऐसी आन्धी है जिसके आने पर बुद्धि विलीन हो जाती है। —अज्ञात

७) कोई भी राष्ट्र अपने प्रयास और बलिदान से ही आर्थिक या राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है। —श्रीमति इन्दिरा गांधी

८) मैंने समय को नष्ट किया अब समय मुझे नष्ट कर रहा है। —शेक्सपियर

९) वृक्ष अपने सिर पर धूप सहन करके दूसरों को छाया देता है। —कालिदास

१०) हंसोगे तो दुनिया साथ देगी। रोओगे तो अकेले रोना पड़ेगा। —अज्ञात

११) आधी दुनिया नहीं जानती कि शेष आधी कैसे जीती है। —रवेले

ए धरती पंजाब वीर जवानां दी

कु० नीता सूरी कक्षा १२ ए

सन् १६४७ में जब देश का विभाजन हुआ, तो उसका सबसे अधिक प्रभाव पंजाब पर पड़ा। पंजाब जो सदा बहार खुशियों और परिश्रम में घुला-मिला रहने वाला था। उस पंजाब के हंसते-गाते पराक्रमी पंजाबी न केवल दो भागों में बांट दिये गये, बल्कि उनके लाखों जवान, हजारों बच्चे और बूढ़े धार्मिक और राजनीतिक क्रूरता का शिकार हो गए कितनी अबला नारियों की आबरू लूटी गई इसका अनुमान लगाना असम्भव है।

उस विभाजन के समय उस पागलपन के दौर में पश्चिमी पंजाब से आते हुए, एक नारी हृदय ने पंजाब के एक महाकवि को याद किया था। अमृता प्रीतम के एक गीत में पंजाब का सारा दुख उसको पूरी बदनसीबी सिमट आई थी। अमृता ने गाया था :—

अज आखां वारस शाह नू,
कित्थे कब्रां विच्चों बोल।
ते अज किताब-ए- इश्क दा,
कोई अगला वरका फोल।
इक रोई सी धी पंजाब दी,
तूं लिख-लिख मारे वेड़।
अज लक्खां धीयां रोंदियां,
तेनू वारस शाह नूं कहण।
उठ दरदमंदां दिया दरदिया'
उठ तक अपणा पंजाब।
अज बेले लाशां विच्छीयां,
ते लहू दी भरी चनाब।

अर्थात् अबला आज वारस शाह से कहती है कि कहीं कब्रों मे से बोल और आज प्यार, स्नेह की किताब का कोई अगला पर्चा खोल। एक पंजाब को लड़की रोई थी तो तूने उसका बर्णन लिख कर किया था। आज लाखों लड़कियां रो रो कर वारस शाह से कहती हैं कि दरदों का अहसास करने वाले वारस शाह आज तू उठ कर अपना पंजाब देख आज मैदान में लाशें बिछी हैं और नदी लहू से भरी हुई है।

अमृता की यह कविता पंजाब की गीतमयी परम्परा का ही एक उदाहरण है, क्योंकि पांच नदियों की इस धरती ने हर दुख, सुख को गीतों में संजोया है जब बाबर ने पंजाब पर हमला किया था। तब गुरु नानक ने उसके खिलाफ राग में गीत गाया था:—

"तुरखाना हिन्दुस्तान जराया"

अर्थात् तुर्कों ने हिन्दुस्तान को जलाया।

आप ने ईश्वर से भी शिकवा किया था :—

"एती मार पयी कुरलाणै तैं की दरद न आया"

(इतनी मार पड़ी कि हम कराहने लगे लेकिन तुझे तरस भी नहीं आया।

लेकिन पंजाब एक रंगीली धरती है हर दुख-सुख का सामना अपने गीतों को गाकर करने वाले पंजाबी दुखों को भी हंसते-हंसते टाल देते हैं। वहां हर दो युद्धों के बीच शांति का जो समय आता है, उसमें बांके जवान मस्ती में झूम-झूम जाते हैं और तब उनके संगीत में जीवन की धारा की मस्त शराब का सा रंग होता है। कार्तिक मास (नवम्बर) में गंदम (गेहूँ) की बुआई का परिणाम चेत के मध्य में

प्राप्त होता है। किसान बैसाखी (१३ अप्रैल) तक फसल काट लेता है और उसकी मेहनत की वसूली हो जाती है। फिर गांव-गांव भांगड़े की खरमस्तियां होती हैं। इस अवसर पर गाया जाने वाला सबसे प्रसिद्ध गीत है :—

फसलां दी मुक गई राखी
ओ जट्टा आयी बैसाखी।

ओ जट्टा, फसलों की रक्षा का काम समाप्त हो गया और बैसाखी आ गई।

बैसाखी का विशेष नृत्य है भांगड़ा कपड़ों में सजीले जवान अपने हर अंग को फड़का कर उल्लास का प्रदर्शन करते हैं :—

पंजाब की लड़कियां भी अपनी सखियों के साथ भागड़ा डालती हैं. इसके अतिरिक्त असंगत जोड़ी को ही लेकर बोलती हैं।

"बाबल ने वर टालिया
मेरी गुत दे परांदे नालों छोटा"

(पिताजी ने वर ढूण्ढा जो मेरी चोटी से भी छोटा है)

असंगत जोड़ी का मजाक करते हुए बोली है:-

माहिया मेरा निका जया
असां खिच के बरोबर कीत्ता।

(पति मेरा छोटा सा है जिसे हमने खिंच के बराबर किया है)

खेतों से लौटते हुए नाचती गाती गाँवों की गोरियां गुनगुना उठती हैं :—

मैं कल्ली नहीं कहदी जोगरा
सारी दुनियां कहदी
मैं नचां पटियाले, मेरी धमक जालन्धर पैंदी।

अर्थात् ओ जोगिया मैं अकेली नहीं कहती बल्कि सारी दुनिया कहती है कि जब मैं पटियाला में नाचती हूँ ता उसकी धमक जालन्धर में पड़ती है।)

लेकिन इत उल्लास में एक गोरी उदास सी चली जा रही है। इसका कारण सहेलियां जानती हैं इसीलिए तो एक गा उठती है :—

नो मैं उड़ के माहिए कोल जावां
जे रब मेरे खम्ब ला देवे।

(मैं पति के पास उड़ के चली जाऊं जो भगवान मेरे पंख लगा देवे)

सहेलियाँ इसी पंक्ति को गाती हुई उसके चारों ओर चक्कर लगा - लगा कर नाचती-डोलती हैं। बेचारी उदास सहेली भला यह सब देख कर कब तक उदास रह सकती है। वह भी इनके उल्लास में इनका साथ देने को खिलखिला उठती है।

इसी बीच कहीं बेचारा कोई हल जोतता गबरू जवान भी अपना हल संभालता हुआ, घर चलने की तैयारी करने लगा, तो उसकी भी शामत आ जाती है, क्योंकि इस झुन्ड में कोई चंचला गा उठती है :-

हालियां ने हल छड दित्ते
मेरे दंद दा पेया, लश्कारा
नी हालियां ने हल छड दित्ते

(हल चलाने वालों ने अपने हलों को छोड़ दिया जब मेरे दांत की चमक पड़ी)

यह नृत्य एवं गायन केवल रास्ते भर ही नहीं, वरन् गांव पहुँच कर हर आँगन में गूंजता रहता है, घरों के कामों के साथ-साथ एकाध बोल सुनाई देते ही रहते हैं। घर पहुँच पता चला कि उस उदास सहेली के प्रियतम का पत्र आया है और उधर तन्दूर भी रोटियां सेकने को तयार है। बस और क्या चाहिए :—

तन्दूरी ताई होई ए
रोटियां नू अग ला दियो
चिट्ठी माहिए दी आई होई ए।

तन्दूर को जलाया है, रोटियों को आग लगा दो क्योंकि प्रियतम की चिट्ठी आई हुई है)

इसी प्रकार सरदारनी अपने सरदार जी से साड़ी की फरमाइश करती है तो सरदार जी भी फरमाइश करते हैं :—

सरदारनी जी— मेरी गल्ल सुनो सरदार जी,
मैंनू साड़ी इक मंगा देयो।
सरदार जी— मेरी फटी होइ पतलून नू
टांका तो पैलों सी देयो।

अर्थात्- सरदारनी जी कहती हैं कि सरदार जी मेरी बात सुनो मुझे एक साड़ी मंगवा दो। तो सरदार जी कहते हैं कि मेरी फटी हुई पतलून को पहले टांका लगा कर सी दो।

पंजाब की बेटियों को बाकी देश के समान ही दहेज के दुख से जूझना पड़ता है। यह गीत सुनियेः-

पुत्रां दी मां चढ़ बैठी मंजे,
धीयां दी मां बैठी दाजड़ा मंजे।

कहने का तात्पर्य है कि लड़के की मां को तो शादी की फिकर नहीं होती लेकिन लड़की की मां को बेटी की शादी और दहेज की चिन्ता होती है।

ब्याह के समय लड़की घर न छोड़ने के लिए क्या-क्या बहाने करती है :—

इहनां महलां दे विच-विच वे
बाबल डोला नहीं लंघदा।

अर्थात् इन महलों के बीच से बाबल मेरा डोला नहीं निकल सकता।

पर बेचारी की कोई पेश नहीं जाती।

दो इट्टां फरा दियांगे, धिये घर जा अपने
अर्थात् दो ईटें निकलवा देंगे, बेटी अपने घर जा।

वारिस शाह ने भी घर से जाती हीर के मुंह से कहलवाया था :—

डोली चढ़ दियां मारियां हीर चीकां,
मैंनू ले चले बाबला लै चले वे।
मैंनू रख ले अज दी रात बाबल,
डोली घत कहार हन लै चल पं।

(डोली में चढ़ते हुए हीर (लड़की) रो रो कर बोली ओ बाबल मुझे आज की रात रख ले। डोली ले कर कहार चल पड़े हैं)

शादी के बाद घर आई बेटी को कैसे सब अजनबी समझते हैं। वह दुख भी सुनिये : —

कणकाँ लगीयां, धीयां क्यों जम्मीयां नी मां
दूरों आइयां चल के मां
तेरे दर ते रहियां खलो
विहड़ा भरिया भाभीयां नी मां
मैंनूं किसे न्हीं अखिया बहु।

अर्थात् ओ मां! लड़कियों को क्यों जन्म दिया, दूर से चल कर आई हूँ और तेरे दरवाजे पर आ कर खड़ी हूँ। भाभियों ने बिहड़ा भरा था मां। मुझे किसी ने नहीं कहा बैठ)

मैके का सुन्दर वर्णन सुनिये :—

पेके मावां नाल।
मावां ठंडियां छावां ते भाण भरावां नाल।

(मायका माँ के साथ होता है। मां ठण्डी छांव के समान होती है तथा भाइयों से ही सम्मान होता है)

पंजाब एक रंगीन धरती है; वीर जवानों की धरती है। वहां के गबरू जवान जहाँ जंग में जान की होली खेलते हैं खेतों में जी जान से मेहनत कर सोना उगाते हैं, वहां अपने संगीत नृत्य और प्रेम भरी बातों से उल्हास का भी सृजन करते हैं और उनकी स्त्रियां अपने प्यारे पंजाब के लिए गाती हैं.-

सुहनियां देशां विच्चों, देश पंजाब नी
सइय्यो
जीकण फुल्लां विच्चों फुल्ल गुलाब
सइय्यो

(सुन्दर देशों में देश पंजाब री सखियो
जैसे फूलों में फूल गुलाब री सखियों)

—●—

कहानी—

प्रायश्चित

—कु० प्रवीन बाला कक्षा १२ ए

राहुल अभी अभी सोया था, किसी ने दरवाजा खट-खटाया। उसने उठकर दरवाजा खोला। पोस्ट-मैंन आवश्यक तार लाया था। उसने तार राहुल को दे दिया। राहुल ने तार खोला और पढ़ा, उसका मुख प्रसन्नता से खिल गया। राहुल ने दौड़कर सोती हुई मां के पैर पकड़ लिये और चरणों को पकड़े हुये खड़ा हो गया। मां हड़बड़ा कर उठ बैठी और बोली— "क्या हुआ बेटा ?" मां आज मेरी वर्षों को तमन्ना पूर्ण हुई, मुझे भी सीमा पर जाना है युद्ध के लिये।" माँ का हृदय धक से रह गया। उसने बेटे को छाती से लगा लिया। बहुत प्रयत्न करने पर भी आंसू की दो बूंदें राहुल के ऊपर गिर पड़ीं। यह क्या मां! तुम रो रही हो। एक शहीद की बेटी, एक शहीद की पत्नी, एक वीर बेटे की माँ होते हुए भी आपकी आंखों में आंसू ? मां बोली-"ऐसी कौन पाषाण हृदया मां होगी जो अपने बेटे को मौत के मुंह में भेजती हुई तनक भी हिचकिचाती न हो। मेरा आंखों की रोशनी भी तू है, और अपने शहीद पिता के कुल का अन्तिम चिराग भी तू है, जिसके बुझने से राय विक्रमसिंह के कुल का चिराग हमेशा हमेशा के लिए बुझ जायेगा। तेरी जन्म भूमि, मुझसे पहले तेरी मां है। जिसकी मिट्टी में तू ने घुटने टेक कर चलना सीखा। उसका ऋण चुकाने के लिए. उसकी मर्यादा के लिए, अपने प्राणों की बलि चढ़ाने मे पीछे न रहना। सबेरा होते ही मां का आशीर्वाद ले कर राहुल ने युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान किया।

आज से चार वर्ष पूर्व राहुल के पिता विक्रमसिंह जो भारतीय सेना में कर्नल थे जिन्हें मरण परान्त वीर-चक्र प्रदान किया गया था। उसकी खबर सुन उनका बेटा फौज में भर्ती हो गया था। आई एम ए. I,M.A.) से लेफ्टीनेन्ट बनकर भारतीय सेना में कैप्टिन था युद्ध भूमि में उसने कई सफलतायें प्राप्त कीं और अपने युद्ध कौशल से भारतीयों के हृदय पर अमिट छाप लगा दी। पाकिस्तानी तो इतने आतंकित हो गये कि उन्होंने कैप्टिन राहुल को पकड़ने के लिए ५० हजार का इनाम रख दिया था।

एक दिन धोखे में राहुल को पकड़ लिया गया। पकड़ने वाले पाकिस्तानी नहीं वरन् वे भारतीय गद्दार लालची कुत्ते थे जिन्होंने सिर्फ ५० हजार के लिए भारतीय सेनानी देश के स्तम्भ को विदेशियों को सौंप दिया।

पाक सेनाध्यक्ष ने उसे बुलाया। दोनों की आंखें चार हुईं दोनों ने एक दूसरे का पहिचाना पाक सेनाध्यक्ष और कोई नहीं, जिन्हें चार वर्ष लापता हो जाने के कारण शहीद समझ लिया गया था, कर्नल विक्रमसिंह थे। नियमानुसार राहुल को मौत की सजा मिलनी चाहिए थी। परन्तु बाप ने बेटे को माफ कर दिया। बेटा जिसे एहसान मान रहा था, वह भी दुश्मनों की एक चाल थी वह उसे देश-द्रोही बनाना चाहते थे। वह क्रूर देश द्रोही विक्रमसिंह अपने बेटे को चोर के रूप में इस्तेमाल करना चाहता था और राहुल के द्वारा गुप्त भेदों को जानना चाहता था।

इस प्रकार कैप्टिन राहुल को मौत के बजाय १ लाख रुपये मिले। देश द्रोही पिता ने देश भक्त बेटे को देशद्रोही बना दिया। राहुल अगले सोमवार को गुप्त भेदों को बताने का वादा करके चला गया। पहले उसने मां से मिलने का निश्चय किया। अकस्मात अपने सामने राहुल को देखकर मां आश्चर्य चकित रह गई, क्योंकि कुछ दिन पहले उसके लापता होने की सूचना मिली थी। उसने राहुल को गले

से लगा लिया मानो उसको अमूल्य निधि मिली हो। क्योंकि इससे सारे ऐश्वर्य एक तरफ रह जाते हैं अब मौत जिन्दगी में बदल गयी थी राहुल ने जेब से १ लाख रुपये निकाल कर मां को दिये। माँ ने पूछा यह कैसे बेटा ?

कैप्टिन राहुल ने पिता से हुई सब बातें बता दीं। वह स्त्री जो एक क्षण पूर्व इतनी खुश थी मानों उसे कुबेर का खजाना मिल गया हो, अब वह सिंहनी की भांति क्रुद्ध हो गई, एक झटके से लपक कर उन कागज के पुलिन्दों को फाड़ दिया जिन्होंने एक देश भक्त को पथभ्रष्ट कर दिया था। तथा धड़ाधड़ राहुल के मुंह पर चार पांच तमाचे मारे उसके मुंह से रक्त निकलने लगा। वह मां ! मां ! कहता हुआ मां के चरणों में गिर गया तथा विकल हो कर क्षमा माँगने लगा।

मां ने कहा—"अगर तुझ में मेरा रक्त है तथा तुझे मेरे दूध का मूल्य चुकाना है तो अपने नीच पिता को देशद्रोही होने का दण्ड दे। उसने जननी जन्म-भूमि का नाम गन्दा किया है। यदि "प्रायश्चित" करना है तो उस देशद्रोही का खात्मा कर दो।"

राहुल उठा और अपनी मां की सौगन्ध खा तुरन्त ही चल दिया। देशद्रोही का कर्ज उतारने वह सीधे अपने पिता के पास पहुँचा। वहां तक पहुँचने में उसे कुछ भी कठिनाइ नहीं हुई। क्योंकि वह सेनाध्यक्ष का पुत्र था पिता ने सोचा कि कोई महत्वपूर्ण समाचार लेकर आया है। परन्तु वह तो पिता का मृत्यु-दूत बन कर आया था।

धांय धांय के धमाके के साथ ही विक्रमसिंह इस संसार में नहीं जी सका। इतने इतने शत्रुओं के बीच राहुल भी जीवित न रह सका। कुछही क्षणों में उसका रक्तप्लवित शरीर पिता के पास धरती पर जा गिरा। गिरते समय उसके मुंह से निकला,- मां ! मुझे माफ करना मैंने देशद्रोह का 'प्रायश्चित' कर लिया, लेकिन खेद है कि आपको सूचना न दे सका। भारत मां की जय, जननी जन्म भूमि की जय।

दोनो के शरीर पास-पास पड़े थे। एक बाप एक बेटा। एक देशद्रोही, एक देश भक्त। एक नरक कुण्ड की निम्न श्रेणी में, एक स्वर्ग में विराजमान। एक महान से नीच बना, दूसरा महान से महानतम्।

— मां के प्यार की एक बूंद, अमृत के समुद्र से भी ज्यादा मीठी है। — सूक्ति

— सजा देने का अधिकार केवल उसी को है जो प्रेम करता है। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

— जो दिन-रात सिर्फ योजनायें बनाते हैं और कर्म नहीं करते वे कल्पनाओं में उड़कर जीवन दान कर रहे हैं। —सिसरो

— कला से जीवन का उत्कर्ष है। कला यदि जीवन को सन्मार्ग पर न ला सकी, तो वह कला ही क्या ? —महात्मा गांधी

संग्रहकर्त्ता — कु० हरवेल कौर, कक्षा १२ सी

परिवर्तन

परिवर्तन की पृष्ठभूमि पर नृत्यरत हैं
जगती के सभी जीवधारी
कण-कण प्रकृति का, प्रतिदिन नया सन्देश लाता है
परीवर्तन की भाषा में।
प्रातः रवि,
सांध्य में जुगनू जैसे तारे,
और नीरव, निःशब्द रात्रि में चन्दा
हर ओर परिवर्तन ही गतिशील दृष्टिगत होता है।
जीवन बदल जाता है,
मृत्यु के गहन मौन में,
जन्म पर आच्छादित हो जाता है,
जगती का कोलाहल,
और फिर ढलता यौवन, बुढापे के कगार पर खड़ा,
प्रतीक्षा करता है–
उस चिर प्रतीक्षित चिर गहन मौन की,
जो,
काल के रथ पर आ उसे ले जाना चाहती है
नीरव-काल रात्रि के महासागर में समाहित करने को
सब ओर यही
बस यही सब दिखायी देता है–
मानव मन भी
क्या इस शाश्वत नियम का कभी
कर पायेगा उल्लंघन !
अरे
पर कैसे ? इस महाकाल के अविरल चलते चक्र से
भला वह दुर्बल कैसे बच पायेगा ?
आज हमारे सुख का सामान,
कल हमारे दुःख का अविधान बन जाता है !
इसीलिए तो, लगता है,
इस परिवर्तन की शाश्वतता का परीक्षण हो रहा है
मुझ पर भी,
पर देव ध्यान रहे–
जगती की सब चीजें बदलती हैं,
पर बन्धन से बंधा मेरा मानव मन नहीं–
कहीं गहरे में पैठा चुकी हूँ
क्या ढूंढ पाओगे, अन्तर के उस अछूते
कोने को ?

[कु० देवेन्द्र मोहनी भसीन, हरिद्वार]

गीता के कृष्ण

—रश्मि वछेर, कक्षा १२ ए

महाभारत के भीष्म पर्व का एक भाग भगवत् गीता संस्कृत साहित्य का सर्वाधिक लोकप्रिय धार्मिक ग्रन्थ है। कहा जाता है कि "यह सारी ज्ञात भाषाओं का सबसे सुन्दर और शायद एक मात्र सच्चा दार्शनिक ग्रन्थ है।" इसमें ग्रंथकार ने स्वय ईश्वर के अवतार कृष्ण का ही गुरू बनाया है। उनकी अपने जीवन में एक महान सकट के समय मानव का प्रतिनिधित्व करने वाले अर्जुन का उपदेश देते हुए कल्पना की गई है। अर्जुन अपने उद्देश्य की निष्कपटता के प्रति आश्वस्त और शत्रु से लड़ने के लिए तैयार होकर युद्ध क्षेत्र में आते हैं कृष्ण के साथी अर्जुन ऐन मौके पर अपने कर्तव्य से मुंह मोड़ने लगते हैं। यदि हत्या पाप है तो प्रिय तथा आदरणीय व्यक्तियों को हत्या और भी बड़ा पाप है।" यह विचार उनको अन्तरात्मा को पीड़ित करने लगता है। उनका हृदय उद्वेलित हो उठता है। ऐसी अवस्था में श्री कृष्ण पाँडवों का पक्ष न्यायाकुल देखकर ईश्वर की ओर से बोलते हैं। वे अत्यन्त आदेशपूर्ण स्वर में अपना संदेश देते हैं तथा अर्जुन को आत्मा की विफलता के विरुद्ध चेतावना देते हैं।

गीता के कृष्ण भारत के अत्यन्त लोकप्रिय अवतार हैं जिनमें मानवीय अंश भी है तथा दिव्य भी। वह सौन्दर्य तथा प्रेम के देवता हैं। उनके सदृश्य दिव्य पुरुष को इतिहास मे कहां खोजा जाये ? कृष्ण नाम सार्थक है, क्योंकि उनके महान चरित्र की चतुर्दिक क्रांति ने कोटि-कोटि मानवों को आकर्षित किया है। वे महान कर्म योगी हैं। यद्यपि अर्जुन को उपदेश देते हुए ज्ञान योग और भक्ति योग का महत्व भी पूर्ण रूप से दर्शाया है, लेकिन गीता का सार-तत्व निष्काम कर्मयोग ही हैं। आसक्ति से पृथक रह कर तथा फल की चिन्ता न कर पूर्ण मनोयोग और उत्साह से कर्त्तव्य कर्म करना ही भगवान के लिए कर्म करना है। उन्होंने अर्जुन को स्पष्ट कहा है कि कोई भी व्यक्ति बिना कर्म किये एक क्षण नहीं रह सकता। इसीलिए उन्होंने लोक-सग्रह के लिए निष्काम भाव से कर्म करने का कहा है। "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" के साथ उन्होंने 'योग कर्मसु कौशलम्' भी कहा है। अकर्म और कर्म के भेद को पहचान कर कर्त्तव्य का भली भांति पालन करना योग के पथ पर चलना है। कृष्ण का यह संदेश शाश्वत सत्य का संदेश है।

गीता में कृष्ण का स्थान स्वयं ब्रह्म के सदृश्य है। गीता के कृष्ण का सिद्धांत है कि इस दृश्यमान जगत में मन, बुद्धि और इन्द्रियों से परे ब्रह्म का वास है। हमारे अन्दर ईश्वर स्थूल शरीर तथा इन्द्रियों की परतों के बीच छिपा है

श्री कृष्ण ने गीता के माध्यम से न तो किसी मिशनरी आन्दोलन का नेतृत्व किया है, न किसी सम्प्रदाय का समर्थन किया है. न किसी नये सिद्धांत की स्थापना की है बल्कि सब धर्मों, सम्प्रदायों और सिद्धान्तों का समन्वय करने का प्रयत्न किया है। इसी कारण गीता हिन्दु धर्म की व्याख्या करने में पूर्णतः सक्षम है।

गीता एक दार्शनिक ग्रन्थ और काव्य के बीच की चीज है। इसमे उपनिषदों जैसी असीम व्यंजकता नहीं है क्योंकि यह जीवन की समस्याओं का एक बौद्धिक हल है। यह एक ऐसी परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए है, जो कि आन्तरिक पीड़ा तथा मोह के कारण अत्यन्त जटिल हो गई है। "वासना तथा भय से मुक्त और ज्ञान की अग्नि से शुद्ध किया गया व्यक्ति स्वयं ईश्वर बन जाता है।" गीता का यह उपदेश निसंदेह महान है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कृष्ण की सच्ची भक्ति गीता में वर्णित उनके महान उपदेशों पर आचरण करना ही है। —★—
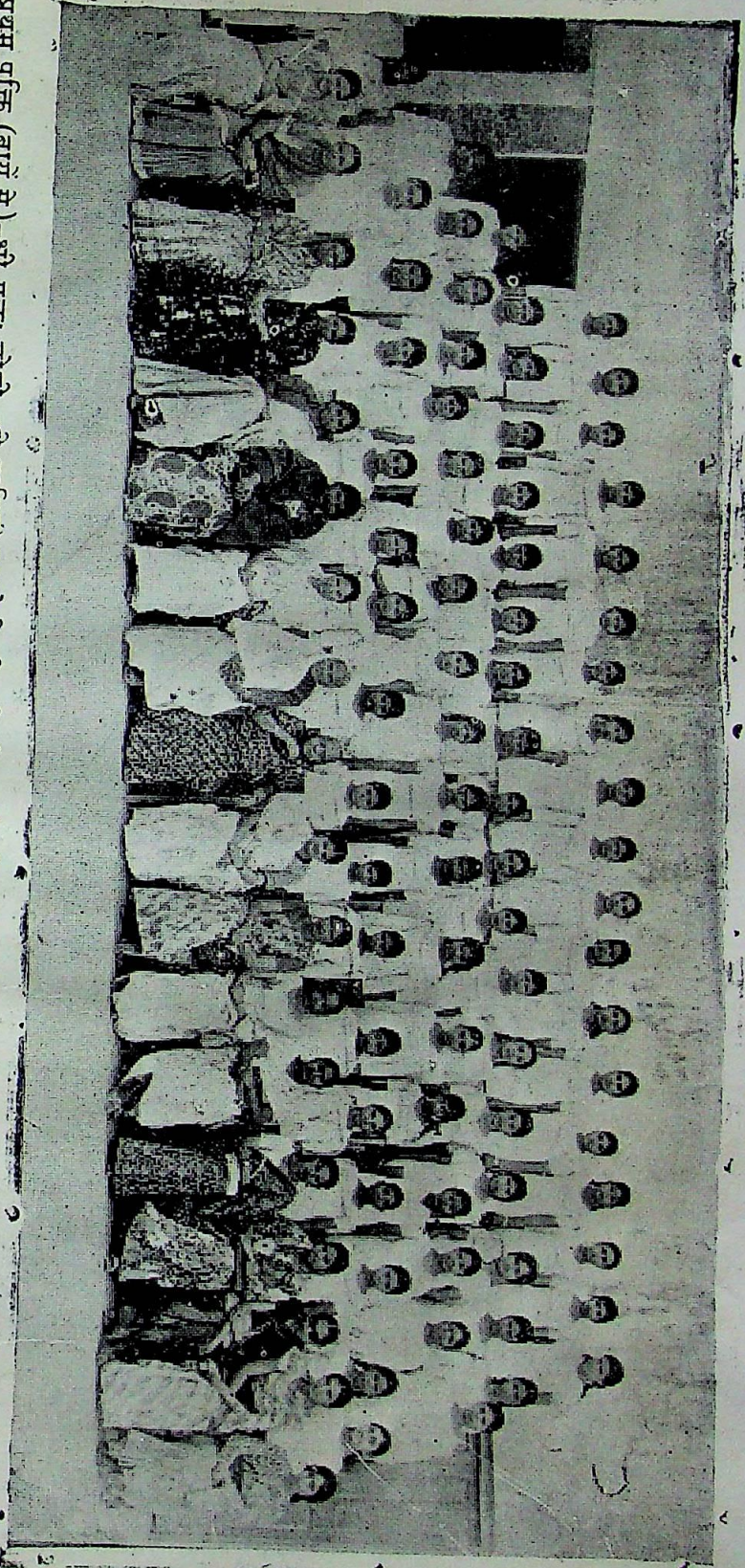
प्रथम पक्ति (बायें से)–श्री मुक्ता जोशी, श्री सावित्री वाजपेयी जी, श्री गौरा पांडे जी, श्री कमलेश क्वाटरा जी, श्री शान्ति सिरोही जी, श्री राधा जी श्री राजकौशल्या जी, श्री सत्यभामा जी, श्री प्रधानाचार्या जी, श्री शकुन्तला जी, श्री विमला बोहरा जी, श्री स्वर्ण कांता जी, श्री कमला जी, श्री राजदुलारी जी, श्री कमला भाटिया जी, श्री कृष्णा बहुगुणा जी, श्री राजसेठ जी श्री रमा निश्चल जी।

द्वितीय पंक्ति (बायें से)–पूनम, बेलू, रेणू, ललिता, नीलम कमलेश, विमलेश, किरण, सरोज, यशवती, सुनीता, प्रेम, बीना, सन्तोष, प्रमिला साहू, सुनीता क्वाटरा।

तृतीय पंक्ति (बायें से)–नीरा, कमला बीना, सोमा, गुरजीत, प्रतिभा, नीरू, राजरानी, उर्मिला, पूनम, इन्दु, राजेश्वरी, चित्रा मंजू, अनीता, मिथिलेश, कमलेश, प्रेमलता, सुषमा।

चतुर्थ पंक्ति (बायें से)–वतन, द्रोपदी, चेतना, रमा, नीलम, ऊषा, सरोज, सुदेश, प्रेम, कमलेश, गीता, ऊषा, मंजू, तृप्तजीत, लता, राकेश, सरगम, सन्तोष, मजू।

पंचम पंक्ति (बायें से)–पुष्पा, पूनम, रंजना, अमिता, रामेश्वरी, आरती, रेणुका, अनुराधा, रजनी, चित्रा, हर्ष, सीमा, अनीता, गार्गी, शशिप्रभा, अन्नपूर्णा, बीना, मजू, उमा।

X B. C.
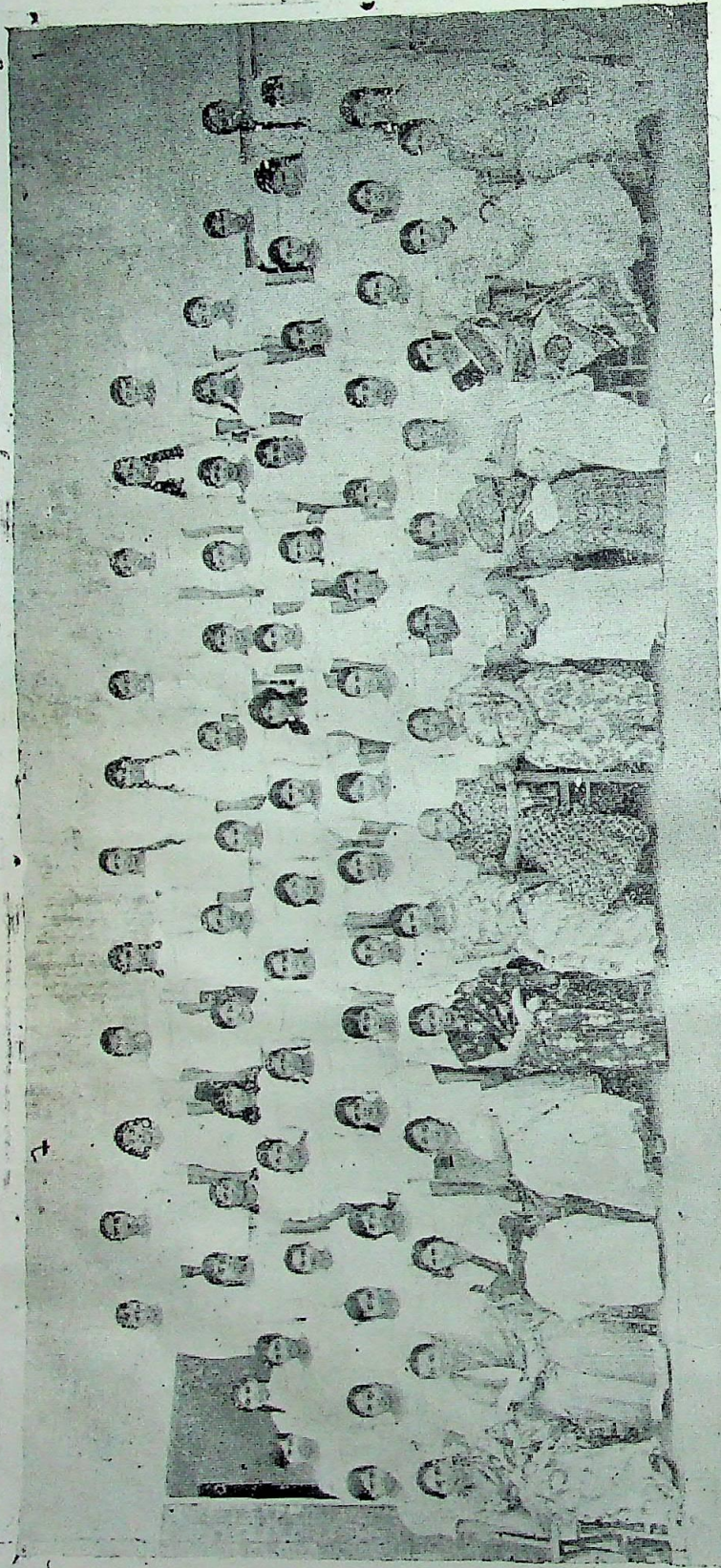
नीचे से प्रथम पंक्ति (बायें से)–श्री ऊषा वर्मा जी, श्री सावित्री तोमर जी, श्री देवेन्द्र भसीन जी, श्री शान्ति सिरोही जी, श्री कमलेश क्वाटरा जी, श्री राजसेठ जी, श्री प्रधानाचार्या जी, श्री विमला जी, श्री कमला जी, श्री राजदुलारी जी, श्री स्वर्णकान्ता जी, श्री सन्तोष बधवा, श्री शकुन्तला जी, श्री विमला बोहरा जी ।

द्वितीय पंक्ति (बायें से)–सुनीता, इन्दु, बीना, शशि, चन्द्रमोहिनी, ऊषा, मोहिनी इन्दु, लीला, कुमकुम, ज्योति, जीवन आशा, आशा, पदमा, कौशल, रश्मि

तृतीय पंक्ति (बायें से)–आशा, सुनीता, रेणु बीना सरोजिनी, राजकुमारी, बिमला, पूर्णिमा, संगीता, रश्मि, पुष्पा, कमलेश, सुमन, शान्ति, शारदा सुषमा भट्ट ।

चतुर्थ पंक्ति (बायें से)–भागवन्ती, सुदेश, सन्ध्या, शशि कौशिक, सीमा, शान्ति, बिमला, देव, उमा, मधु, उमा, विजय, बीना, मधु, निर्मला ।

पंचम पंक्ति (बायें से)–मंजू, गुरविन्द्र, रीता, सविता, रंजना, रमा, रंजना, बीना, शताक्षी, नीलम, सन्ध्या ।

आई आज दीवाली

—राजरानी अग्रवाल,
कक्षा १२ ए

सूर्य अस्ताचल को जा रहे थे। रश्मियां मलिन पड़ने लगी थीं। सूर्य को चिन्ता हुई कि मेरे बाद अंधकार का विनाश कैसे होगा? तब तक टिमटिमाते एक दीप ने हंस कर कहा- "मुझे जलते रहने दो। तुम्हारो बराबरो ता मैं नहीं करसकना। लेकिन जब तक जलता रहूँगा, अंधकार फटकने नहीं पायेगा मेरी ही लौ से अनेक दिये जलाये जा सकेंगे। दीपों का प्रकाश जहां तक फैला रहेगा, अन्धकार मिटा रहेगा।

दीप से दीप जलाने की एवं पंक्तिबद्ध दीप-मालाओं की प्रोज्जवल सुषमा देखकर आह्लादित होने की हमारी यह पुरानो परम्परा है। एक से एक सटी दोप पंक्तियां जब एक साथ जल उठतो हैं, लगता है प्रेम एवं ज्ञान की सहस्त्र धारायें, एक समवेत स्वर में, गुंजित होकर सम्यक् धरित्री को रसाप्लावित कर रही हैं। देहात की मिट्टी के दिये, शहरों के तीव्र रोशनी वाले बल्वों की अपेक्षा, कहीं अधिक रमणीय हैं। बल्व में वह भाव ही नहीं जो मिट्टी के दिये में पुंजीभूत है। इंग्लैण्ड की संसद में अब भी कभी-२ विशेष अवसरों पर टिमटिमाते दिये अपनो परम्परा के स्मरण के लिए जलाये जाते हैं। बल्व में बनावटी पन है।

दिये को मिट्टी की वर्तिका समझना भूल है। यह दिया साधारण नहीं है! पृथिव्यादि परमाणु पुंजी के गर्भ के 'आवे' में परिपक्व यह दिया है। इसमें का तरल स्नेह भी असमान्य है। ऐसे दिये के सामने खड़े होकर हम कभी प्रार्थना किया करते थे, प्रभो! हमें प्रकाश दें। सुख और श्रेय दें। बुद्धि, वैभव दें। देव हमें श्री संपन्न करें। प्रकाश का साक्षी देकर किस सीमा तक हम प्रवृत्त मार्गी रहे यह विचारणीय है।

दिये में भरे जाने वाले असमान्य स्नेह की कहानो कविवर तुलसीदास ने भी कही हैं, 'सात्विक श्रद्धा की धेनु को सुभाचार का तृण खिलाया गया। सुभाव रुपी बछड़े के सुमधुर मुख से वह धेनु पेन्वाई गई। निर्मल मन ने बिश्वास के निवृत्ति पात्र में दूध दोहन किया। अकाम अनल में वह दूध औटाया गया ताष एवं क्षमा के पवन से वह शीतल किया गया। तदनन्तर उसमें धृत का जीवन डाला गया। सत्य रज्जु, विचार मथनी से वह जमा दही मथा गया। उससे निसृत नवनात उस मिट्टी की वर्तिका में रखा गया। इस प्रकार इस दीप स्नेह का निर्माण हुआ।

"तब विज्ञान रुपिनी बुद्धि
विसद धृत पाइ
चित दिआ भरि धरै दृढ़
समता दिअटि बनाइ"

दीपावलो के शुभ दिन ऐसे ही पवित्र भावों से समन्वित स्नेह-युक्त दिये जलाने चाहिए। घिनौनी मक्खी भी अंधकार पसन्द नहीं करती। मानव तो आलोक प्रिय, पौरुष पुंज प्राणी है। ये दीप मालायें इसी ओर ध्यान आकर्षित करती हैं कि निरन्तर

प्रकाशमान रहने के लिए हमें दीप्ति, क्रांति एव प्रोज्जवलता का ही वरण करना है।

दीपशिखा ज्ञान का प्रतीक है। श्वेताश्वेत उपनिषद में कहा गया है कि जिस समय प्रकाशमान दीप सदृश आत्मभाव से उस अजन्मा, निश्छल एवं समस्त तत्वों में विशुद्ध देव से साक्षात्कार होता हैं। जैविक धरातल के समस्त क्लेशपूर्ण बंधनों से तत्काल मुक्ति मिल जाती है।

इसाई मतानुसार "आत्मा का परम लक्ष्य परम ज्योति में समाहित होकर, उसके ही प्रकाश में उसकी कांति देखते रहना है। उस मत का एक प्रज्ञावान दार्शनिक जब इस लोक से अमृत जगत की ओर प्रस्थान करने लगा तो उसकी जिह्वा पर यही अंतिम शब्द थे—

"ज्योति भमसि ज्योति"

इस्लामी संस्कृति के एक चिंतक का कथन है कि एकता और प्रेम के प्रकाश में दीप जलें, जिससे अंधकार का अभाव हो जाय।

चिरागे नूर वहदत्त फिर
चमक उठे जमाने में
नजर आये न फिर जिससे
कहीं तारीकियां दिल की।

गीताकार ने कहा है कि वायु-विकार रहित स्थान पर जलता हुआ दीप जैसे निश्चल होकर जलता है वैसी ही स्थिति संयत ज्ञान योगी की होती है, और मैं स्वयं उन योगियों के भीतर अथवा उनके अन्तःकरण में तेजस्वी दीप जला दिया करता हूँ जिससे अज्ञान मूलक अंधकार से वे सदा विरत रहते हैं।

संत कबीर ने भी ऐसा ही कहा है। जब मैं अज्ञानवश सांसारिक दर्द का सहारा लेकर, सर्व साधारण के पीछे घूम रहा था कि मुझे मार्ग में सद्गुरु मिल गये। उन्होंने मेरे हाथ में एक दीपक दिया उसमें तेल भरा हुआ था। उसकी बत्ती ऐसी थी जो कभी घटने वाली नहीं। मैं उसी प्रकाश में संसार के सारे हाट का सौदा कर आया। इसलिए मेरे यहां वापस आने की अब कोई आवश्यकता ही नहीं रही

दीपशिखा निश्छल प्रेम का भी प्रतीक है। महाराजा हिमवान का एक रुपवती कन्या प्राप्त हुई-जिसका नाम था पार्वती। जिस प्रकार मंदाकिनी को पाकर स्वर्ग का मार्ग, व्याकरण को शुद्ध वाणी की ओजस्विता पाकर विद्वान विभूषित होते हैं उसी भांति हिमवान अपनी पुत्री पार्वती को पाकर आह्लादित और सुशोभित हुए।

'प्रभामहत्या शिखयेव दीपस्त्रि
मार्गमेव त्रिदिवस्य मार्ग
सस्कारवत्येव गिरा मनीषितया सः
पूतश्च विभूषितश्च।'
(कुमार)

दीपक की शिखा कांति सी बढ़ती हुई पार्वती युवती बनी। शंकर दुस्तर, तपस्या में मग्न थे। रुप की लौ सी प्रज्जवलित पार्वती, शंकर के समीपस्थ ही थीं। किन्तु शंकर अपने अंतवर्ती प्राणवायु को रोक कर इस भांति बैठे हुए थे मानो स्वेद रहित मेघ हो, उर्मि विहिन शांत सरोवर हो अथवा वायु रहित स्थान पर प्रतिष्ठित दीपशिखा हो।

प्रतिदिन सांध्य बेला में महाराज पुरुखा का राज प्रासाद दीपमालाओं से जगमगा उठता था। दिवावसान की गोधूलि में अन्तःपुर की आचारवती वयोवृद्ध नारियां स्थान-स्थान पर मंगल दीप रखती जाती। महाराज के चतुर्दिक दीपमालायें लिए सेविकाएं चलती रहतीं। उन दीपों से आवृत्त महाराज पुरखा की शोभा वैसी थी जैसे पंख न कटने से गतिमान पर्वत, कर्णिकार पुरुषों से आवृत्त शोभित होता है।

चन्द्र ज्योत्सना में दीपक की कांति मलिन पड़ जाती है। प्रातः होते ही, रवि रश्मियों के प्रभाव से

दीपक की शोभा मंद पड़ जाती है। यह चित्रात्मक बिम्ब विधान श्लाघ्य है।

अभिव्यक्ततायां चंद्रिकायां किं
दीपका पौन रुक्तेन
स्व किरण परिवेशोद् भेद शून्याः
प्रदीपाः।

महाराज रघु को अज जैसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। कुमार अज अपने पिता के अनुरूप थे। पिता के समान उनका भी ओजस्वी रूप और उदार वृत्ति थी। जैसे एक दीपक से प्रज्जविल दूसरे दीपक की लौ होती है।

रुपंतदोजस्वि तदेव वीर्यं सदैव
नैसर्गिकमुन्नत्वम्
न कारणात् स्वद्विभेदे कुमारः
प्रवर्त्तितो दीप इव प्रदीपात्।'

परम सुन्दरी इन्दुमती, रंग स्थली में उतरी। उस अनुपलब्ध अप्सरा सी कांति की प्राप्ति के लिए देश-देशान्तर की नृपति यूथिका स्वयंम्बर समारोह में उपस्थित हुई। वह अतीव सुन्दरी प्रत्येक नृपति के सुप्त शांत शोणित को उद्वेदित करती हुई घूमने लगी। जिस महीप पर वह दृष्टि डालती, वह उल्लासित हो उठता। इन्दुमती परिभ्रमित उस दीपशिखा सी प्रतीत होती। जिसके सम्मुख आ जाने से, सामने वाला परिवेश उद्भासित हो जाता है और आदि में पड़ने वाला परिवेश निरातिमिराच्छन्नः

संचारिणी दीप शिखेव रात्रौ यं
व्यतीयाम् पतिंवरा सा
नरेन्द्र मार्ग हट्ट इव प्रप्रेदे विवर्णं
भावं यः सः भूमि पातः।

गगन मध्य लक्ष-लक्ष दीपक जल रहे हैं। धरती भी आज लक्ष-लक्ष दीपों से उद्भासित है। हमारे घरों, गलियों, चौराहों, विजन स्थानों में ये दीप प्रकाश के संदेश बांट रहे हैं। शारदीय गंगा की तटों को शोभा को द्विगुणित करने वाले कल हंसों की भांति ये दीप मालायें वर्ष में एक बार ही हमें उजागर करती हैं। अपनी नीर क्षीर विवेक के मुक्ता फल से हमें इनका अभिषेक करना है। अन्यथा रूठकर ये अन्यत्र न चले जांय।

विवेक ज्ञान के अभाव में, एक से अनेक रूपों में समस्त भाव की प्रतिस्थापना करना बड़ा दुस्तर कार्य है। हमें दीपशिखा की ज्योति में प्रत्येक आत्मा को आलोकित करना है। सभी को स्वाति नक्षत्र का समरस पिला कर उनमें मुक्ता की सृष्टि करनी है। हर कोयला हीरा बन सकता है। बशर्ते कि तप्त ऊष्मा का अभाव उसमें न हो।

कहानी—

—कु० मंजु कालड़ा, कक्षा १२ 'ब'

मनुष्य के मन में रह रह कर विचार उठते रहते हैं और मनुष्य उनके मध्य में अपने को निराश होता हुआ पाता है- उसकी चिन्तन शक्ति तीव्रतर होती जाती है- यदि कोई इसी को चिन्ता कहे तो कोई अन्योक्ति नहीं होगी। व्यक्ति का स्वभाव है कि जब वह एक बार निराश हो जाता है तो सब्र का दामन थाम लेना है- इसी को हम संतोष कह सकते हैं।

चिन्ता और संतोष ! कितना आपस में विरोधाभास है। वस्तुतः जहां चिन्ता होगी वहां संतोष नहीं हो सकता- जहाँ संतोष होगा वहां चिंता न होगी।

चिन्ता का अस्तित्व वैसे अपने आप में कुछ भी हो पर वह अपने में खोई-खोई रहती है- साक्षात चिंता की प्रति मूर्ति ....मौन . जैसे किसी को मौन निमन्त्रण दे रही हो।

सन्तोष का स्वभाव अजीब सा था- कालिज आना और कालिज के वातावरण में मशगूल न हो कर अलग ही रहना उसे भाता था। फिर भी कभी उसका मन होता कि अनेक लड़कियां हैं क्यों न किसी से बात करली जाये- देखा जाय कि विद्यार्थी जीवन क्या है ? पता नहीं क्यों बात करते उसे शर्म लगती थी- साथ-साथ उसे अपने कैरियर का भी ध्यान था। इसी स्थिति में फंसा हुआ वेदना से परिपूर्ण होकर वह एकांत में बैठकर सोचने लगता जीवन कुछ भी नहीं बस निराशा है। फिर सोचता अपने आप में एक समझौता है। फिर कालिज का घंटा उसके विचारों के तांते को तोड़ देता- सब कुछ व्यर्थ जाता है। अर्थशास्त्र के पीरियड में वह पीछे बैठा हुआ गुरु जी की भाव भंगिमा को देखा करता और लड़कों के ग्रुप में बैठकर उनका खाका(मजाक) खींचा करता था। यही दैनिक क्रम था। पर अधिक दिन तक न चल सका।

संतोष जी .. .. संतोष जी ....कौन ? मैं आपसे नोट्स के लिए कह रहा हूँ। अरे ..तुम ! वह अपनी घबराहट को छिपाता हुआ पूछ बैठा— किस विषय के ? अर्थशास्त्र के। मेरे पास कोई नोट्स नहीं हैं। कोरा सा उत्तर दे दिया। आप बुरा न मानिये मेरा नाम क्षिति है, और मुझे मेरी सहेली चिन्ता ने आपसे नोट्स मांगने के लिए कहा था। क्या वह नहीं मांग सकती थी ? वह बहुत बड़ी है, होशियार है ? सब कुछ हो सकती हैं किन्तु उसमें घमंड बिल्कुल नहीं— एक व्यंग कस ही दिया संतोष ने।

चिन्ता ने दूसरे दिन क्लास में बैठे ही बैठे नीची निगाहों में नोट्स के लिए विनय की। संतोष समझ कर भी अनजान सा बन गया। फिर भी उसने सोचा यह लड़कियां क्या बला से देखती हैं। देखती तो एक बार हैं किन्तु ओटोमेटिक कैमरे की तरह फोटो बिलकुल स्पष्ट खींचता है- उन्हें सब पता चल जाता है।

लीजिये चिन्ता जी नोट्स ... पर जरा सम्भाल कर रखना .. – .. किताबें तो तुमने चाट कर रख दी हैं, कहीं मेरी कापी भी न चाट जाना। वह मौन रही।

जीवन का दैनिक क्रम चलता रहता है पर अचानक ही कभी उसमें स्वयं परिवर्तन आ जाता हैं क्यूं

समझ नहीं आता। उसे स्वयं अपने आप पर आश्चर्य होता है।

कालिज की छुट्टियां पड़ीं और समाप्त भी हो गयीं। सब कुछ वही किन्तु अजीब सा वातावरण, संतोष सोच रहा था—मैंने कापी देकर अच्छा नहीं किया ये लड़कियां पहले नोट्स फिर किताबें तत्पश्चात ... और कुछ भी मांग सकती हैं- व्यर्थ बखेड़ा है- दूर रहो इनसे।

सुनिए ......! संतोष ने घूम कर देखा, क्षिति और चिन्ता खड़ी थीं। चिन्ता बोली- लीजिए, बहुत बहुत धन्यवाद ! संतोष ने कहा- कोरा धन्यवाद या मिठाई-बिठाई भी, इस पर सब लोग एक साथ हंस पड़े। संतोष ने देखा कि चिंता एकटक देखे जा रही है- वह हड़बड़ा गया — कुछ याद करता हुआ अरे क्षमा करना मुझे फोस जमा करानी है, फिर कभी मिलूंगा।

संतोष ने अचानक कापी के ऊपर का पृष्ठ देखा तो भुनभुना गया- यह क्या वेवकूफी है- कापी पर जिल्द चढ़ा दिया, क्या यह मेरे जीवन पर भी अपना आवरण चढ़ाना चाहती है ? नहीं कभी नहीं ऐसा मैं कभी नहीं होने दूंगा। जब आगे पलट कर देखा तो लिखा था- आपकी लिखाई बहुत सुन्दर व गजब की है। वह अपने मन में ही सोच रहा था कि लिखाई सुन्दर हो सकती है किन्तु यह क्या मूर्खता की कि कापी पर ही लिख मारा। यह डिप्लोमेसी है।

अचानक पिकनिक का प्रोग्राम बना। संतोष ने सोचा कि मैं नहीं जाऊंगा किन्तु उसके मित्र विनय ने कहा- संतोष तू नहीं जायेगा तो मैं भी नहीं जाऊंगा। वहां क्या मिट्टी के ढेलों से बात करूंगा ? संतोष ने व्यंग कसा- तेरे लिये तो बहुत हैं भई तुझे क्या फिकर ? अपने राम तो मस्त मौला हैं ...... भाड़ में जाय पिकनिक।

संतोष सोच रहा था चलो आज इतवार को धोबीघाट लगा लिया जाये। जैसे ही वह कपड़े धोने लगा मगर तभी किसी का स्पष्ट स्वर सुनाई पड़ा- "इस दुनियाँ में आय के छोड़ दे तू ऐंठ।"

अम्मा ! यह संतोष का बच्चा मेरी सुनता ही नहीं, जब देखो कान में छिपा बठा रहता है। क्या हुआ विनय बेटा ? हुआ क्या अम्मा ! पिकनिक जाने को बैठे हैं पर जनाब को देखो तो कपड़े धो रहे हैं।

संतोष बेटा देखो विनय आया है जाओ उसके साथ घूम आओ। संतोष बाहर निकल आया। मां तुम सोचती नहीं हो कि पिकनिक के पांच रुपये जमा करने पड़ेंगे और मैंने कोरी डाक पत्थर देख रखा है। विनय- मां पैसे तो इसके मैंने जमा कर दिये हैं, अब तो कुछ नहीं किया जा सकता।

संतोष सोचने लगा अच्छी बला गले लगी। खैर आज इतना परेशान करूंगा कि यह भी याद करे। डाक पत्थर पहुंच कर खूब घूमे। घूमघाम कर गुरू जी बोले- अब भोजन कर लिया जाये हमें तो भूख लग रही है। सब ने छक कर खाना खाया। मगर संतोष मौन था बहुत मौन। विनय तो पता नहीं कहां चिड़ियां उड़ा रहा था।

संतोष यमुना के किनारे को देखने लगा और पता नही कब तक सोचता रहा। अरे आप क्या कर रहे हैं ? हम तो आपको देखते-देखते थक गये। अरे चिन्ता ! तुम यहां क्या कर रही हो ? कुछ नही आपको देख रही हूँ। आप क्या सोच रहे हैं ? कुछ नही..... कुछ नहीं. कुछ तो ...। यह देख रहा हूँ कि यमुना में पड़ी बल्लियाँ लहरों के थपेड़ों से यथा स्थान पहुँचा दी जाती हैं किन्तु मेरा जीवन व्यर्थ ही त्रिशंकु की भाँति लटक रहा है। सन्तोष सचेत सा होकर। अरे हाँ, अब हमे चलना चाहिऐ।

चिन्ता पता नहीं क्या सोचती हुई बोली-आप बुरा न माने तो एक बात पूछूं ! पूछो ! चिन्ता-आप नाराज क्यों हैं ? मै......और.....नाराज ....

असंभव ! हां अन्यमनस्क सा जरुर हूँ। इतना घूमें भी पर फिर भी वही अन्यमनस्कता संतोष को घेरे रही।

बस चलने का समय हो रहा था. विद्यार्थी गिने गये-एक कम-मगर कौन हो सकता है। काफी देर सोचने के बाद चिंता बोली। अरे संतोष तो है ही नहीं। विनोद बोला-अरे उसका ता कुछ पता ही नहीं, अच्छा देखता हूँ। और विनय आवाज देता हुआ निकल गया। अचानक उसने देखा कि एक लड़का एक पेड़ का सहारा लिऐ हुऐ लेटा हुआ है। सतोष...अरे संतोष ! अरे विनय; विनय—तुझे क्या हो गया है। संतोष...कुछ नही विनय मेरी तबीयत खराब है मेरा सिर भारी था बस लेटा और नींद आ गई। अच्छा अब चलो।

संतोष का मन अत्यन्त खिन्न था। बस में उसे एक किनारे पर बिठा दिया गया। और वह कुछ सोचने लगा। थोड़ी देर बाद किसी के स्पर्श से वह अचानक चौंक गया। अरे चिन्ता ! तुम क्या कर रही हो। आप लेट क्यों नहीं जाते, चिंता बोला-नहीं मैं ठीक हूँ इतना कहकर वह उठकर दूसरे किनारे पर जा बठा। अचानक किसी के सिसकने की आवाज सुनी...क्यो क्या हुआ चिन्ता ? कुछ नही कुछ तो हुआ ही है। चिता बोली—मैं सोच रही थी कि आप जैसा मेरा कोई भाई होता तो क्या अच्छा था। संतोष को कुछ सान्त्वना तो मिली क्योंकि वह चुपचाप कुछ सोचता रहा था कि अचानक उसने अपना हाथ चिन्ता के सिर पर रख कर कहा- तुम मुझे ही ऐसा मान लो। कोई हर्ज नहीं मुझे इस बात की। बस इन्हीं बातों २ में देहरादून आ गया।

सब अपने-अपने घर चले गये। सतोष रात भर सोचता रहा कि वास्तव में सब लड़कियाँ एक समान नही होती। पर अचानक उसे किसी लेखक की पंक्तियों का ध्यान आ जाता है..."लड़कियाँ कोई भी सीधी नही होतीं. वह तो सर्व गुण सम्पन्न होती हैं" कालेज जाना और घर आ जाना बस यही सन्तोष का दैनिक क्रम था ! वह चिन्ता के स्नेह को पाकर प्रसन्न था पर जोवन का क्रम कभी एक सा नहीं चलता सेमिस्टर समाप्त होने के बाद छुट्टियां तथा छुट्टियों के बाद फिर कालेज खुला मगर चिन्ता नहीं आयी।

अचानक एक दिन घर पर सन्तोष को एक पत्र मिला- सन्तोष भाई साहब.- क्षिति और निशि पिक्चर जा रही हैं आप भी चलिए।

—आपकी चिन्ता

क्षिति निशी को सामने देख कर सन्तोष सोचने लगा कि चिन्ता कहां गयी ? सन्तोष पूछ बैठा कि-क्षिति चिन्ता कहां है ? अरे वह कहां आयी हमने उसे तो वैसे ही लिख दिया था। सन्तोष बोला खैर छोड़ो अच्छा बोलो कि कौन सो पिक्चर देखी जाये। तभी सामने चिन्ता दिखाई पड़ी और आते ही बोली-फिल्मिस्तान में बड़ी दीदी देखी जाये। सब मान गये। जब हाल में पहुंच कर सीटो पर बैठने लगे तो चिन्ता सन्तोष से बोली कि आप मेरे पास बैठिये-सन्तोष न चाहते हुऐ भी बैठ गया और सोचने लगा कि लड़कियां भी क्या गिरगट सा रंग बदलती हैं। पिक्चर समाप्त होने पर जब संतोष घर आया तो उसे लगा कि जीवन में बवंडर उठने वाला है। उसने चिन्ता से बोलना कम कर दिया। मगर चिन्ता थी कि उसका पीछा ही नहीं छोड़ती थो।

अचानक एक दिन उसे पत्र मिला—

आदरणीय एवं परमपूज्य

मैं आपको अब 'भय्या' का सम्बोधन न दे सकूंगी, क्योंकि अब यह शब्द मुझे खलने लगा है। स्वयं बवंडर उठ खड़ा हुआ है।

सामाजिक परिधि और कालिज का वातावरण संतोष का साथ न दे रहा था। जब उसका मन साफ था तो दुराव था चिन्ता के व्यवहार में। उसने सोचा कि अब न बोलूंगा चिन्ता से। बस ऐसे ही चलता रहा। पर कोई भी परिवर्तन न दिखाई दिया।

नव वर्ष का दिन था– कालेज बन्द था। संतोष घूम कर घर लौट रहा था। उसे एक नव वर्षीय पत्र खाट पर रखा मिला। उसने खोला और पढ़ने लगा- परमपूज्य एवं प्राण सम भैय्या,

मुझे उस व्यवहार के लिए क्षमा करें ... ... और भी काफी कुछ लिखा था, पर उसका मन अब अधिक पढ़ने को न था। वह सोच रहा था कि समाज दोष देता है कि लड़के खराब होते हैं पर वास्तविकता कोई नहीं जानता कि लड़कियां ही गिर-गिट सा रंग बदलती हैं।

संतोष सोचने लगा कि पहले अच्छा था। अब उसका मन कालेज में न लगता था। उसे अब चिंता से घृणा हो गई थी। घृणा का कारण सिर्फ यह था 'पहले भय्या का सम्बोधन फिर कुछ "और" और फिर उसके बाद भय्या कहना।" वह बस यही सोचता रहता कि अभी भी भय्या के सम्बन्ध में कुछ दुराव हो सकता है। और अन्त में उसे एक पंक्ति याद आ जाती है—

"तुम्हें तो लूटा है तुम्हारे बुरे ख्यालों ने"

वस्तुतः चिंता और संतोष का स्वभाव भी तो अलग था। एक ओर थी चिंता की चिन्ता और दूसरी ओर संतोष। मगर चिंता तो चिन्ता ही बनी रही। क्योंकि उसे ज्ञान न था कि संतोष का प्रेम व्यक्ति से था वस्तु से नहीं।

जीवन में हास्य का महत्व

—प्रवीनबाला XII A

१— जिस चेहरे पर मुस्कराहट नहीं आती, वह उस कली की भाँति है जो खिले बिना ही सूख कर गिर जाती है। मुस्कराहट भरा चेहरा उस खिले हुए पुष्प के समान है, जो अपने पास आने वाले को ताजगी और सुगन्ध देता है।

२— "हंसो और जोर से हंसो" जीवन में चिन्ता की गर्द झाड़ने का इससे अच्छा तरीका और कोई है ही नहीं"?

३— हमेशा खुश रहा करो, "इससे दिमाग में अच्छे विचार आते हैं और तबियत नेकी की ओर लगी रहती है"।

४— "मुस्कान अनेक रोगों को औषधि है"–एक छोटी से छोटी खुशी मनुष्य के बड़े से बड़े गम को ढक देती है और आदमी के लिए इसलिए बहुत जरूरी है।

५— वह दिन बिलकुल व्यर्थ समझना चाहिए जिस दिन हंसी न आये।

६—हास्य वस्तुतः एक ऐसा चतुर किसान है जो हमारे जीवन पथ के समस्त झाड़-झखाड़ों और कांटों को उखाड़ फेंकता है। और बदले में सुख सौंदर्य का सुशोभित पेड़ लगा देता है। जिससे हमारी सारी जीवन यात्रा एव पर्वोत्सव बन जाती है।

पश्चिमी छाया में भारत

—कु० सुरेश केशवानी
द्वादश 'अ'

भारतवर्ष को प्राचीन सभ्यता का मूल तन्त्र था-"Simple Living and High Thinking" अर्थात् सादा जीवन और उच्च विचार। हमारे पूर्वज अत्यन्त सरल जीवन व्यतीत करते थे। राजे-महाराजे तक एक दुपट्टा ओढ़ कर राज-सभा में बैठ जाया करते थे। खान-पान, भेष-भूषा, रीति-रिवाज सब में उन्हें सादगी प्रिय थी। उनकी प्रकृति बड़ो सीधी सादी होती थी। उन्हें दिखावटीपन नहीं रुचता था। प्राचीन सभ्यता सन्तोष का पाठ पढ़ाती थी और आत्मोन्नति के लिए मार्ग परिष्कृत करती थी। धर्म हमारी प्राचीन सभ्यता का महत्वपूर्ण अंग था। प्रत्येक कार्य की अच्छाई बुराई की जांच धर्म की कसौटी पर कसकर की जाती थी। वस्तुतः प्राचीन भारतीय सभ्यता पूर्णतया आध्यात्मवाद की ओर झुकी हुई थी।

पर आजकल पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से भारतीय सभ्यता पूर्वकालीन सभ्यता से बिल्कुल पृथक हो गई है। यहां की फैशन की गुलामी और दिखावटीपन पाश्चात्य सभ्यता की देन है। यह देखा जाता है कि भारतीय पुरुष विलायती साहबों की और भारतीय नारी विलायती मेमों की नकल करती हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि पाश्चात्य देशों में फैशन का बाजार गरम है। वहां नित्य नये फैशन बदलते रहते हैं जिनका कुप्रभाव भारतवर्ष पर पड़ता रहता है। हमारे देश में पढ़े-लिखे व्यक्तियों पर फैशन का तो भूत सवार है, हां अशिक्षित उसके पंजे से अभी बाहर हैं। विद्यार्थियों अथवा सरकारी कर्मचारियों को देखिये! उनमें टिप-टाप, तड़क-भड़क और चटक-मटक का बाहुल्य मिलेगा। हममें आजकल दिखलावटीपन भी कम नहीं है। हम अपनी वास्तविकता को छिपा कर बाहरी शान शौकत दिखाते हैं। निस्सदेह हम फैशन और दिखावटीपन के पूरे दास बने हुए हैं।

इसके अतिरिक्त पाश्चात्य सभ्यता ने भारतीयों को धर्म से भी उदासीन बना दिया है। यह इसी सभ्यता का कुप्रभाव है कि हमारे देश में धर्म के बन्धन ढोले पड़ गये हैं। वह धर्म जो एक दिन समस्त भारत पर अपना अधिकार रखता था, आज पैरों से कुचला जा रहा है, वह धर्म जो एक दिन इस देश का प्राण था, आज पैरों का जूता समझा जा रहा है। पाश्चात्य भौतिकता ने हमारी धर्म प्रियता और आध्यात्मिकता की धज्जियां उड़ा दी हैं। खाओ, पियो और मौज उड़ाओ की तुमुल ध्वनि ने देश को गुंजा दिया है। हम ईश्वर और आत्मा को भूल गये हैं।

पाश्चात्य सभ्यता से अन्य हानि यह है कि फैशन के कारण भारतीयों की रहन-सहन ऊंची हो गई हैं। पहले यदि किसी परिवार का मासिक व्यय ३०) रुपया होता था तो आजकल १००)रु० से कम नहीं होता। पश्चिम वालों का रहन-सहन ऊंचा है। उनके सम्पर्क में रहकर हम लोगों का रहन-सहन भी ऊंचा हो गया है। हमारी आवश्यकताएं नित्य बढ़ती जा रही हैं। पहले यदि किसी मनुष्य को दो कुरते या अंगरखे, दो धोतियां, एक दुपट्टा और एक टोपी
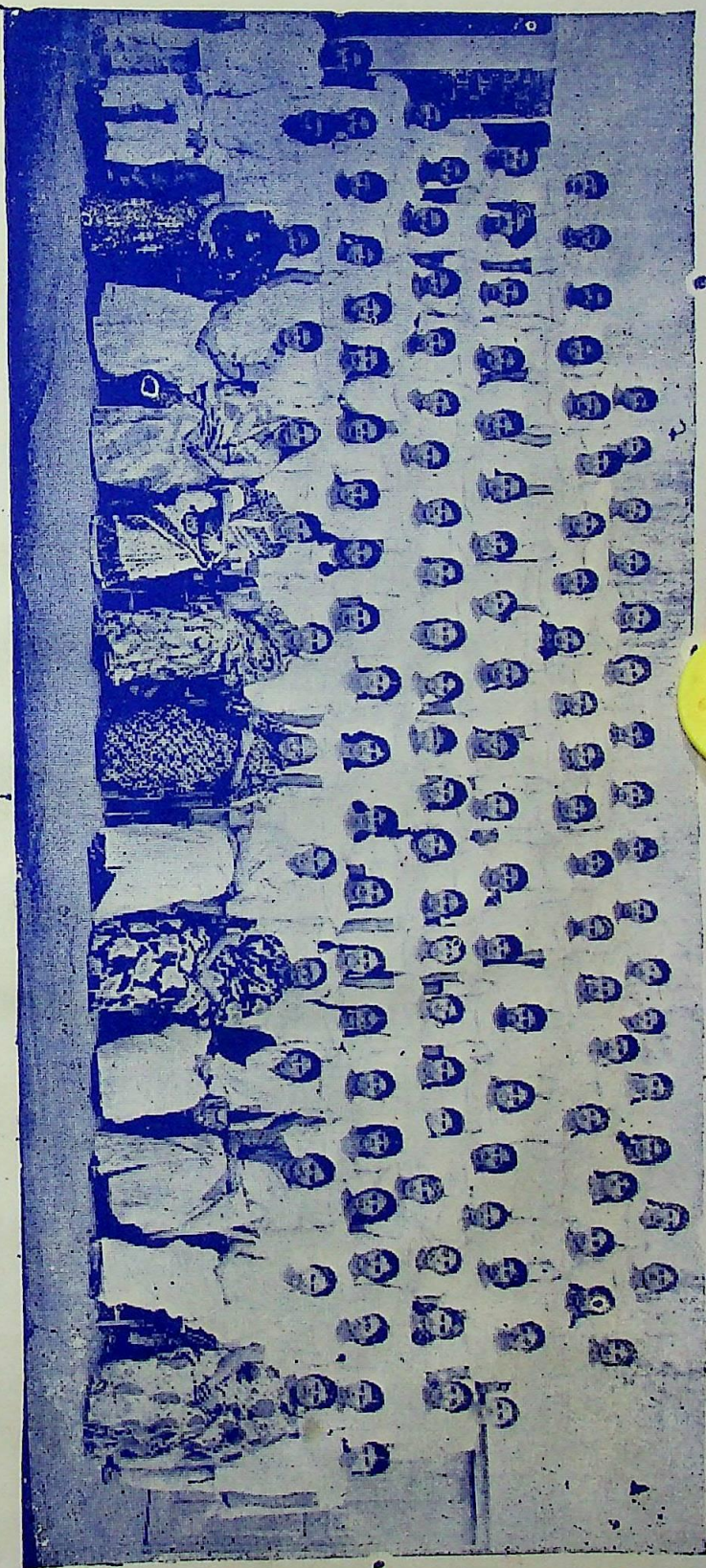
नीचे से प्रथम पंक्ति–(बायें से) श्री मोघे जी, कमलेश क्वाटरा जी, शकुन्तला जी, चद्रकला जी, सन्तोष बहुवा जी, उषावर्मा जी, सुश्री कुमारी खुराना जी, श्री स्नेह लता त्रिपाठी जी, सावित्री वाजपेयी, देवेन्द्र भसीन जो, शान्ति सिरोही जी, राजकौशल्या सूरी जी, राधा जो,

द्वितीय पंक्ति (बायें से)—कु० रीता, कृष्णा पूनम कमलेश, श्रुति, किरन, बेजन्ती माला, सरिता, शशमी, सुशोला, प्रवोन, सुमम, साधना, जयबाला, मन्जू, नोना सूद, मन्जू अन्जु पुष्पा, नीलम, सारिका, सावित्ता, शशि।

तृतीय पंक्ति (बायें से) –जगदम्बा, सरला, प्रभा, गाबिन्दी, जानकी, सुषमा, हेमलता, सुमन, मन्जू, ऊषा, शिवकुमारी, मीना, अोचल, वीना, शशि, कुसुम, किरन, रमा, रानी बीना, मन्जू।

चतुर्थ पंक्ति (बायें से) –मधुलिका, मुनोता, सविता, प्रेमलता, शुक्लकान्ता, किरन, लक्ष्मी, ऊषा, राजरानी, सुषमा, मधुचौहान प्रेमलता, मधु, आरतो, गगा, सुशोला, ऊषा, सुरेन्द्र, रश्मि।

पंचम पंक्ति (बायें से) –स्नेह, अनुप, इन्दू, सुमन, राधा, सुमन, चन्द्र प्रभा, रीता, ऊषा, राजरानी, शान्ति भागवन्तो, सुषमा, बिमला ध्यानी, दलजीत, मन्जू, मनोरमा, मधु, जयश्री।

षष्टम पक्ति (बायें से)—महेन्द्र, सीता, सुरेन्द्र, जया, लीला, चंचल, राजन, लक्ष्मी, वीना, ... चित्रा, ... मिनाक्षी, आशा, प्रभा, सुनीता

विद्यालय प्रांगरण में मां सन्तोषी (बाल रूप) का आगमन भजन और कीर्तन
सामने प्रधानाचार्या जी एवं अन्य प्रसन्न मुद्रा में ।

पर्याप्त होती थी तो आज उसको कम से कम दो कोट चार कमीज कुरते, चार धोतियां दो पायजामें, दो पेंट, दो नेकर, दो जोड़े मौजे, दो बनियान और दो टोपियों की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार अन्य आवश्यकताओं में भी वृद्धि हुई है। कई आवश्यकताएं तो नितांत नई हैं। आवश्यकताओं में वृद्धि हो गई है पर आय में नहीं। परिणाम यह हुआ है कि भारतीयों का जीवन दुखमय हो गया है।

भारत को पाश्चात्य सभ्यता से सबसे बड़ी हानी हुई है वह आत्म गौरव पर कुठाराघात है। भारतीय स्त्री-पुरुषों में आत्म गौरव का भाव नहीं रह गया है हम लोग सब बातों में अपने को अंग्रेजों से छोटा समझते हैं। अंग्रेज हमारे अनुकरणीय हो रहे हैं। उनके ताल-सुर पर हम नाचते हैं। उनकी रहन-सहन, उनकी वेशभूषा, उनके खान-पान का अनुकरण करने में हम अपना महत्व समझते हैं। हममें यह विचार जड़ पकड़ गया है कि प्रत्येक भारतीय वस्तु बुरी है। इसे त्याग देना चाहिए। हम भारतीय रहन-महन, वेश-भूषा व खान-पान से मुख मोड़ रहे हैं। क्या कोई जाति या देश आत्म गौरव से च्युत होकर अपना अस्तित्व संसार में रख सकता है।

निष्पक्षता से देखने पर ज्ञात होगा कि पाश्चात्य सभ्यता से जहां हमारे देश को हानियां हुई हैं वहां कुछ लाभ भी हुए हैं। यह पाश्चात्य सभ्यता का ही प्रसाद है कि भारतीयों में राष्ट्रीयता दिखलाई देने लगी है। हमारे मध्य लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, महामना मालवीय, डा० राजेन्द्र प्रसाद. पं० जवाहरलाल नेहरू आदि राष्ट्रीय व्यक्ति अवतीर्ण हुए हैं। देश में स्वतंत्रता की लहर फैल रही है। कहना न होगा कि पश्चिम वालों का राष्ट्र-प्रेम जगत प्रसिद्ध है।

पाश्चात्य सभ्यता ने हमारी सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक ढकोसलों का बहिष्कार किया है। स्त्रियों की स्थिति में काफी सुधार, सती प्रथा का अन्त, बाल-विवाहों में कमी विधवा विवाह प्रचार, असवर्णों के प्रति सद्व्यवहार आदि इसी सभ्यता की देन हैं। हमारे धार्मिक ढोंगों और आडम्बरों का अंत भी पाश्चात्य सभ्यता ने ही किया है।

पश्चिम वालों से हमने समय की पाबन्दी और सफाई रखना सीखा है। अंग्रेज लोग समय के बड़े पाबन्द होते हैं और साफ सुथरा रहना उन्हें बहुत पसन्द है। भारतीय लोगों में इन दोनो बातों का अभाव है। गावों में चले जाइये आजकल भी इन बातों का अभाव मिलेगा। जो भारतीय अंग्रेजों के अथवा इनकी सभ्यता के सम्पर्क में आ गये हैं। उनमें सफाई और समय की पाबन्दी खूब देखी जाती है।

ऐसी दशा में यह प्रश्न उठता है कि भारतवर्ष के लिए पाश्चात्य सभ्यता का क्या मूल्य है? उत्तर में यही कहा जा सकता है कि हमारे लिए पाश्चात्य सभ्यता मूल रहित नहीं प्रमाणित हुई है। यद्यपि लाभ की अपेक्षा इससे हानियां अधिक हुई हैं तो भी हमें इसका महत्व स्वीकार करना पड़ेगा। जहां इसका एक अंग कलुषित है वहां दूसरा उज्जवल भी है। हमें चाहिये कि हम नीर-क्षीर विवेक से इसकी अच्छाइयाँ ही ग्रहण करते रहें। तभी हमारे देश का कल्याण हो सकता है।

दहेज – प्रथा

—कु० मधु कक्षा १२ 'बी'

आज के युग में हर इन्सान दहेज को अधिक महत्व देता है। वह यह नहीं सोचता कि आज अगर लड़के की शादी में दहेज मांगूंगा तो कल लड़की की शादी के लिए भी दहेज देना पड़ेगा। इसी विषय पर यह कहानी आधारित है!

"सेठ श्याम सुन्दर शहर के एक प्रतिष्ठित एवं सम्मान जनक व्यक्ति थे। शहर में आपकी एक कपड़ा मिल थी। तथा आपने धर्मशाला और स्कूल का भी निर्माण कराया था। स्कूल का नाम श्याम सुन्दर के नाम पर ही था। स्कूल के वार्षिकोत्सव पर स्कूल में नाटक खेल-कूद एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता होती थी जिसके आप ही अध्यक्ष नियुक्त होते थे इस वर्ष वाद-था। विवाद प्रतियोगिता का विषय "दहेज की प्रथा" वाद-विवाद प्रतियोगिता समाप्त होने पर अपने पक्ष में बोल रहे विद्यार्थी को ही प्रथम पुरस्कार से सुशोभित किया। क्योंकि आप स्वयं भी दहेज के पक्ष में थे।

कुछ दिन पश्चात सेठजी को किसी कार्यवश विदेश जाना पड़ा। आप अपने लड़के अशोक को जाते समय कहते गये कि बेटा मिल का बीमा करवा लेना। सेठजी के मुनीम मोतीराम ने मिल का बीमा करा लिया लेकिन अशोक बीमे के विषय में भूल गया। थोड़े दिन बाद मजदूर यूनियन ने अच्छा अवसर जानकर मिल में हड़ताल कर दी और अपनी मांगें दुगनी कर दीं जो कि अशोक पूरा न कर सका। इस बात पर मजदूरों ने मिल को आग लगा दी।

सेठ जी जब विदेश से खबर पाते ही वापस आये तो उन्होंने कहा बेटा तूने मिल का बीमा तो करा लिया। अशोक ने कहा नहीं यह सुनकर ही सेठ जी माथा ठोक बैठ गये। समय बीतता गया। कर्जदार आने लगे। आखिर सेठ जी अपना सब कुछ बेच कर कर्ज चुका कर शहर छोड़ कर दूसरे शहर में चले गये। इधर अशोक बी.ए. पास होने के बाद भी कहीं नौकरी प्राप्त नहीं कर पाया। उधर सेठ जी की दोनों लड़की कमला और रूपा पूर्ण रूप से जवान हो गईं थीं। उन में से यौवन फूट रहा था। वे दोनों विवाह लायक थीं। सर्व प्रकार गुण संपन्न होने के पश्चात भी उनके पास एक वस्तु भी नहीं रही थी और वो था रुपया। इसीलिए उनका विवाह नहीं हो रहा था। बिचारी बड़ा कठिनाई से फटे हुए कपड़ों में अपना संगमरमर जैसा रूप छिपाये हुये थीं। आवारा लड़के देख उन्हें सीटी बजाते आह भरते प्राण देने की कसमें खाते थे। सेठ जी ये सब देखते तो उनका राजपूती खून खौल जाता, लेकिन बेचारे बेबस थे। करते भी तो क्या? कोई भी लड़की को बिना दहेज के नहीं लेता था। आज उन्हें अपने स्कूल की वाद-विवाद की प्रतियोगितायें याद आती थीं जब उन्होंने बड़े गर्व के साथ पक्ष में बोल रहे विद्यार्थी को ट्राफी दी थी। सेठ प्रतिज्ञा करते हैं कि वे अपने लड़के के विवाह में दहेज न लेंगे। तथा लड़कियां भी बिना दहेज के विवाहेंगे। लेकिन उन्हें स्वयं अपने पर हंसी आई कि सेठ श्याम सुन्दर तू तो अब कंगाल है फिर दहेज का प्रश्न ही नहीं उठता है। इस प्रकार सोचते हुए सेठ जी सो गये।

अशोक हजारों प्रयत्नों के पश्चात भी नौकरी नहीं प्राप्त कर सका। इधर लड़कियां भी ताड़ की तरह बढ़ रहीं थी। उधर सेठ जी काल के मुंह में कदम बढ़ा रहे थे। उनकी जमा पूंजी समाप्त हो चली थी। उन्हें आज ५वां रोज भूखे रहे को हो रहा था। छोटी लड़की कमला सुबह से भूख के मारे बिलख रही थी। जब मां से उसका रोना न देखा गया तो उसने बड़ी बेटी रूपा से कहा कि बेटी जा पड़ोस से थोड़ा सा आटा मांग ला। जब रूपा पड़ोस में आटा माँगने गयी तो पडोसन ने उसे देखते ही किवाड़

बन्द कर दिया तथा अपने देवर से बोली--अगर ये चाहे तो २०)रु० रोज कमा सकती है। ये सब रूपा ने सुन लिया। उसे जिज्ञासा हुई कि रुपये कैसे मिलेंगे? उसने हिम्मत कर दुबारा किवाड़ खटखटाये। पड़ोसन ने जैसे ही किवाड़ खोल कर उसे देखा तो बोली ए! क्या चाहिये? रोज आ जाती है भीख माँगने, शर्म भी नहीं आता। भीख मांगते कहने के रूपा ये कड़वे शब्द सुनकर जहर की तरह पी गई और बोली- चाची जा वो तरीका बता दो जिससे मैं २०)रु० रोज के कमा सकूं यह सुनकर पड़ोसन मन ही मन मुस्करा दी कि चिड़िया जाल में फंस गयी है पड़ोसन बोली- चल अन्दर, फिर बताती हूँ। उसने उसे अन्दर कर किवाड़ बन्द कर लिये, तथा उसको निहार कर उसका साज-शृंगार करके उसे देवर रवि के कमरे में भेज दिया। उसने अन्दर पाकर रूपा को अपने बाहुपाश में कस लिया। रूपा को जब मालूम हुआ कि उसकी इज्जत लो जायेगी तो वह बेहोश हो गई ये देखकर रवि ने उसे छोड़ दिया। जब उसकी आँख खुली तो उसके सामने चाची खड़ी थी। उसने उसे दस-दस के दो नोट दिये और रूपा को भेज दिया। रूपा ने रुपये घर दिये तो उसके भाई ने पूछा- बता रुपये कहां से लाई है किसके हाथों तू ने अपनी इज्जत बेची है? ये सुनकर रूपा रो पड़ी और सारी बातें बता दीं। ये सब बात बगल के कमरे में पड़े सेठ श्याम सुन्दर सुन रहा था। वह यह सुनकर रो पड़ा। वे समाज के ठेकेदारों को गालियां देने लगे कि आज दहेज प्रथा न होती तो मुझे ये दिन न देखने पड़ते कि मेरी बेटियां अपनी इज्जत बेचें। मैं नौकरी करूंगा भीख माँगूंगा नहीं तो सेठ श्याम सुन्दर का खानदान वेश्याओं का खानदान बन जायेगा। लोग कहेंगे कि सेठ घर पड़े बेटियों की कमाई खा रहा है। उन्होंने रूपा को आवाज दी और कहा कि मैंने सब सुन लिया है। लाओ रुपये कहां हैं? अशोक ने रुपये पिताजी को दे दिये। सेठ रुपये लेकर पड़ोस के मकान पर गये तथा दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुलते ही सेठ जी बरस गये कि आखिर उसने क्या समझा जो मेरी बेटियों को गुमराह करने की कोशिश की? सेठ श्याम सुन्दर का मिल जल गया है, परन्तु अभी मैं तो जिन्दा हूँ। मेरे होते हुए ऐसा कभी नहीं हो सकता है।

इधर हंगामा देख कर मोहल्ले के नौजवान मनचले युवक इकट्ठे हो गये। उन्हीं में से एक सेठ पर व्यंग कसते हुए बोला- 'अबे! तू तो बेटा बुढ़ा हो चला, अब तो तुझे इन बेटियों की कमाई पर ही जीना पड़ेगा।" यह सुनकर सेठ का शरीर क्रोध से कांपने लगा, वह अपना धैर्य खो बैठा। वे सब नौजवान के पीछे मारने को दौड़े। लड़का चिल्लाता हुआ जा रहा था कि पत्थर से ठोकर खाकर गिर पड़ा। सेठ ने उसे उठाकर मारना चाहा लेकिन तभी लड़के ने उन्हें धक्का दे दिया। सेठ श्याम सुन्दर एक व्यक्ति के ऊपर गिर पड़ा। उस व्यक्ति ने सेठ जी को बड़े प्यार से उठाया लेकिन सेठ जी को देखते ही उसकी आँखें पथरा गईं, वो मर्माहित हो गया और बोला- सेठ जी आप इस हालत में? सेठ जी बोले- कौन? ओह मोतीराम तुम। जी मालिक। लेकिन आप इस हालत में क्यों? सेठ जी बोले- क्या बताऊं मोतीराम अगर मेरे लड़के ने बीमा करा लिया होता तो आज ये दिन न देखना पड़ता, मगर मेरी तो औलाद ने मुझे डुबो दिया। मगर सेठ जी बीमा तो मैं खुद करा कर आया था और बीमा कम्पनी वालों ने आपको ढूंढा भी था लेकिन आपका कहीं पता न लगने पर उन्होंने रुपया रख लिया। यह सुनकर सेठ जी खुश होकर मोतीराम से लिपट कर रो पड़े और बोले मोतीराम तूने मुझे वो खुशी दी है कि कह नहीं सकता।

तू ही मेरा सुपुत्र है। पुत्र नाम से तूने ही मुझे त्राण किया। अशोक तो आकस्मिक पुत्र है यह कह सेठ ने बीमा कम्पनी से रुपया लिया और मिल बनवाया जिस पर अंकित था- "सेठ श्याम सुन्दर मोती राम कपड़ा मिल"। उसी दिन उन्होंने दहेज न लेने प्रतिज्ञा की तथा उसका आन्दोलन भी किया।

दहेज प्रथा अवश्य ही बन्द होनी चाहिए।

--★--

हिन्दू समाज में नारी

कु० सुरेश केशवानी
द्वादश 'अ'

आज कल समानता का युग है। प्रत्येक समाज अपने भिन्न-भिन्न अंगों में बराबरी का व्यवहार चाहता है। हिन्दू समाज में भी यह प्रवृति देखी जाती है उसमें अछूतों और स्त्रियों के स्थानों को लोग परखने लगे हैं। आज कल समाज के इन्हीं अंगों की ओर जनता का ध्यान है। हमें यहां स्त्रियों के संबन्ध में ही विवेचना करनी है। हिन्दुओं में प्राचीन काल में स्त्रियों का स्थान पुरुषों के समान था। स्त्रियां पुरुषों की अर्द्धाङ्गिनी कही जाती थीं उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। समाज में उनका आदर होता था। उन्हें उच्च से उच्च शिक्षा दी जाती थी। वे अपने पतियों की योग्य सहचरी होती थी। उनकी सेवा सुश्रुषा करना अपना धर्म समझती और उनके सभी कार्यों में सहयोग देती थी

परन्तु आज स्त्रियों की दशा में महान परिवर्तन है। हिन्दू समाज में उनका स्थान बहुत नीचा है। समाज ने उनको दासत्व की बेड़ियों में जकड़ दिया है और उनको विलास का उपकरण मात्र समझ लिया है। स्त्री पति की वस्तु समझी जाती है, जिसका चाहे वह किसी प्रकार उपभोग करें। स्त्री का अपना स्वतत्र अस्तित्व या व्यक्तित्व कुछ नहीं समझा जाता। उसके सभी कार्य पति की प्रसन्नता के लिए, पति की सन्तुष्टि के लिए होते हैं। वह पति की सेवा तन मन से करती है। वह कभी अपने पति को कष्ट नहीं होने देती, चाहे उसे कितना ही कष्ट क्यों न उठाना पड़े। इतने पर भी समाज में उसका कुछ आदर नहीं होता। उसके साथ दासी का सा व्यवहार होता है। वस्तुतः पतिव्रत धर्म की आड़ में हिन्दू समाज ने स्त्री को गुलामी के असह्य भार से दबा रखा है। यदि स्त्री के लिए पतिव्रता होना हमारे पूर्वजों ने आवश्यक ठहराया है तो पुरुषों के लिए पत्नीव्रत होना भी आवश्यक है। यदि पत्नी का धर्म प्रधान पति की सेवा बताया गया है तो पति का धर्म भी पत्नि का आदर, उसकी रक्षा, उसके साथ समानता का व्यवहार आदि कहा गया है। पर आज कल देखा जाता है कि पुरुष स्वय तो अपने धर्म का पालन नहीं करते और स्त्रियों से टहल-चाकरी कराते हैं। वे स्त्रियों के अधिकारों का अपहरण करते जाते हैं। और उसके साथ पाशविक अत्याचार करते जाते है।

पहले बालिका के विवाह नामक अत्याचार को लीजिए। भारतीय समाज में बालिकाओं का विवाह बहुत प्रचलित है। १०-१२ वर्ष की आयु की बालिकाओं को एक अपरिचित व्यक्ति के गले मढ़ दिया जाता है। यह वह अवस्था होती है जब बालिका स्वयं यह नहीं जानती कि विवाह क्या वस्तु है और उसका उद्देश्य क्या होता है? छोटी अवस्था में बेचारी को माता पिता का स्नेह पूर्ण घर छोड़ कर पति के गृह में पदार्पण करना पड़ता है, जहां प्रायः देखा जाता है कि उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता। फिर जब तक उसके अंग भली भांति विकसित भी नहीं हो पाते तब तक वह अपने पति की कामवासना का शिकार बन जाती है। इससे उसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। बाल पत्नी द्वारा समाज के अत्याचार का क्या प्रतिकार किया जा सकता है? कभी कभी तो ऐसा देखा जाता है कि बालिकायें वृद्ध पुरुषों के साथ ब्याह दी जाती हैं। ऐसे सम्बन्धों का दुष्परिणाम प्रायः यह होता है कि बालिकायें विधवा हो जाती है। और आजन्म कुष्टमय जीवन व्यतीत करती हैं। समाज के कठोर नियम के कारण वे बेचारी पुनः अपना विवाह नहीं कर सकतीं।

हिन्दू समाज में विधवाओं का पुनः विवाह का अधिकार नहीं है। यह भी स्त्रियों के साथ सरासर

वे पुर्नविवाह नहीं करती। शोक की बात है कि जिस समाज में पुरुष को एक पत्नी के जीवित रहते हुए भी अनेक पत्नी रखने का अधिकार दे रखा है उस समाज ने स्त्री को पति की मृत्यु हो जाने पर भी फिर विवाह के अधिकार से बंचित कर रखा है यह कैसा अन्यायपूर्ण नियम है। इस नियम से समाज और स्त्री जाति दोनों को ही पर्याप्त हानि पहुंचती है। पति मृत्यु के पश्चात स्त्री के लिए सारा ससार सूना हो जाता है। वह कष्ट सहित भी अपने दिन कठिनाई से पूरा करती है। वह समाज तथा परिवार में अभागिनी, कलकनी और घृणित समझी जाती है। समाज को यह हानि पहुंचाती है कि स्त्री यदि सयम से न रहकर व्यभिचारण को शरण ले तो समाज का नाम कलंकित होता है। पर इन बातों का कौन देखता है ? पुरानी लकीर कानों पर जूं तक नहीं रेंगती।

हिन्दू स्त्रियों में पर्दे की कुप्रथा प्रचलित हैं। इससे उनको कई हानियां होती हैं—

उनकी शिक्षा में बाधा पड़ती है।
उनका स्वभाव भीरु बनता है।
उनका स्वास्थ्य विगड़ता है।
वे सांसारिक अनुभवों से बंचित रहती हैं।

इतनी हानियां होते हुए भी न तो स्त्रियां और न पुरुष ही इस कुप्रथा के अन्त करने का प्रयत्न करते हैं। स्त्रियों को तो अशिक्षित होने के कारण अपनी दीन हीन स्थिति का ज्ञान नहीं है। पुरुषों को ऐसा करने की चिन्ता ही क्या है।

हिन्दू-स्त्रियों में आभूषण प्रियता बहुत देखी जाती है। प्राय: स्त्रियां अपने पतियों से आभूषणों के लिए कलह करती हैं। वे समझती हैं कि उनके सौंदर्य को बढ़ाने के लिए गहने अनिवार्य हैं, शरीर की सफाई और वस्त्रों की स्वच्छता नहीं। उन्हें नहीं मालूम कि सौंदर्य का सम्बन्ध स्वास्थ्य से है। क्रीम, पाउडर और आभूषणों से शरीर सुन्दर नहीं होता स्त्रियों की आभूषण प्रियता के कारण गरीब मनुष्य को अच्छा भोजन मिलना भी कठिन हो जाता है। कैसा ही गरीब क्यों न हो, उसे अपने भोजन व्यय में कमी करके अपनी स्त्री को संतुष्ट रखने के लिए गहने बनवाने ही पड़ते हैं। चाहे पीने को दूध न मिले, चाहे खाने को फल न मिले, पर चाहिए स्त्री के लिए आभूषण।

हिन्दू समाज में स्त्रियों को धनाधिकार नही है। पति के धन में पत्नि का कोई भाग नही होता। पति की मृत्यु हो जाने पर पत्नी को रोटी कपड़ा मिलना कठिन हो जाता है। हिन्दू समाज ने स्त्रियों के लिए 'स्त्रीधन' की अवश्य व्यवस्था की है। यह माता पिता आदि सम्बन्धियों द्वारा लड़की को दिया हुआ धन होता है। पर यह इतना कम होता है कि इससे स्त्री अपना भरण पोषण नहीं कर सकती।

हमारे समाज में प्रचलित वैवाहिक नियम स्त्रियों के अधिकारों का अपहरण करते हैं। आज कल लड़की के माता पिता उसके लिए बर खोजते हैं। लड़की की स्वीकृति इस कार्य में नहीं ली जाती। इसका परिणाम कभी कभी भयानक होता है। यदि पति और पत्नि की प्रकृति न मिली तो दोनो का जीवन आजन्म कंटकाकीर्ण रहता है। कभी कभी दोनों में घोर शत्रुता हो जाती है। वे फिर कभी अलग भी नहीं हो सकते। इससे आज कल का वैवाहिक बन्धन और भी दुखदायी है।

हिन्दू स्त्रियों की शोचनीय दशा का कारण अशिक्षा है। इससे उन्हें न तो अपनी स्थिति का ज्ञान है और अ अपने अधिकारों का। वे अपने जीवन की उपयोगिता ही नही जानती। उन्हें तो अपने जीवन का लक्ष्य पतियों की काम वासना को शान्त करना ही समझ रखा है। समाज अथवा देश से उन्हें कोई सरोकार नहीं।

परन्तु हर्ष का विषय है कि इधर कुछ दिनों से विशेष शक्ति सम्पन्न महानुभावों के आविर्भाव से देश में जागृति हो रही है। क्या राजनैतिक, क्या

सामाजिक, क्या धार्मिक, सभी क्षेत्रों में उथल-पुथल मच गई है। समाज की कुरीतियां दूर हो रही हैं। स्त्रियों की दशा सुधारी जा रही है। उन्हें शिक्षित किया जा रहा है। विधवा विवाह का प्रचार हो रहा है। बाल-विवाह रोकने के लिए शारदा एक्ट बन गया है। पर्दे की कुप्रथा टूटती जा रही है। स्त्रियों को धनाधिकार मिल रहे हैं। आशा है कि निकट भविष्य में हिन्दू समाज में स्त्रियों का स्थान पुरुषों के समान हो जायेगा और वे पुरुष को योग्य सहचरी बनने का दावा कर सकेंगी।

वाणी का जादू

—*राजरानी शर्मा*
कक्षा ११ 'सी'

एक शहद बेचने वाले की वाणी में इतनी मिठास थी कि लोग उस पर मक्खी की तरह टूट पड़ते थे। देखते ही देखते उसका सारा शहद बिक जाता था।

एक दिन बदमिजाज आदमी ने देखा तो डाह करने लगा। उसने सोचा कि क्यों न मैं भी यह धन्धा कर लूं।

दूसरे दिन वह भी शहद की मटकी ले कर तथा उसे सिर पर रख कर शहद बेचने निकल पड़ा। आदत के अनुसार उसके माथे पर त्योरियां पड़ी हुई थीं वह घूम घूम कर ध्यान से हर घर की ओर देखता कि कोई मुझे पुकार रहा हो, पर ज्यों ही उसकी नजर किसी पर पड़ती तो उसे देखने वाला मुंह फेर लेता।

शहद बेचने वाला बहुत परेशान था। वह दिन भर आवाजें देता रहा— "शहद ले लो शहद।" पर उसकी आवाज इतनी तीखी व कर्कश थी कि कानों में हथोड़े की चोट की तरह पड़ती थी। सारे दिन शहद की मटका लिए लिए वह भटकता रहा। आखिर जब वह थक कर चूर हो गया तो घर की राह ली।

घर में उसकी बीबी उसका चेहरा देखते ही सारा किस्सा भांप गई और हंसते हुये बोली कि बदमिजाज का शहद भी कड़वा होता है। मियाँ अगर तुम्हारे पास देने के लिए सोना-चाँदी नहो है तो क्या तुम अपनी वाणी में मिठास भी नहीं घोल सकते हो ?
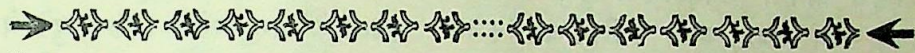
अपराधी

(कुमारी कमलेश हरमिलापी—कक्षा द्वादश 'स')

अमावस्या की रात थी। जिधर देखो उधर ही अन्धकार के अतिरिक्त कुछ भी दृष्टि-गत नहीं होता था। ऐसा प्रतीत होता था मानों अमावस्या की रात्रि प्रत्येक मानव के लिए मदिरा में परिणत होकर आई थी जिसका पान करके सभी निश्चिंतता से सो रहे थे, रात्रि का यह दृश्य अत्यन्त भयावह था सभी पथ जन-मानव शून्य थे। केवल एक मानव-मूर्ति सिर से पैर तक अपने को ढके हुए लम्बे २ डग भरते हुए चली जा रही थी। अचानक वह चलते २ रुक गई और चारों ओर देखने लगी फिर उसने कुछ इशारा किया और उसके कुछ साथी झाड़ियों के पीछे से निकल आये। उसने उनको अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया और फिर वह तेज गति से चलने लगा। शायद वह ही उनका सरदार था ! कुछ दूर जाने के पश्चात् वे सब एक विशालकाय हवेली के सामने रुक गए :

एक क्षण वह रुका और अतीत के जीवन की प्रत्येक घटना चलचित्र के समान उसके नेत्रों के सामने घूमने लगी।

◈ ◈ ◈ ◈
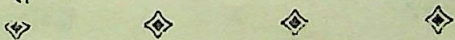
एक अत्यन्त निर्धन बालक जिसका इस लोक में एक वृद्धा जननी के अतिरिक्त कोई नहीं है। परन्तु ईश्वर को यह भी सह्य नहीं था और एक दिन संसार के निर्मम आघातों को न सह सकने के कारण परलोक सिधार जाती है। वह बालक ! जिसने अभी तक यह नहीं जाना था कि उसे भी कितने कष्ट सहन करने पड़ेंगे। न खाने को रोटी मिलती थी न तन को कपड़ा। किसी तरह रो-धोकर उसके दिन व्यतीत होने लगे। अब वह एक नौजवान बन गया था।

भाग्य का खेल निराला था। वह एक दुर्घटना का शिकार हो जाता है और उसे एक नवयुवती कार में बैठाकर अस्पताल ले जाती है। इस दुर्घटना से ही उसके नीरस जीवन का अन्त होता है और एक नया अध्याय शुरु होता है।

एक दिन जब वह अपनी इच्छा उसको प्रकट करता है तब वह कहती है कि—"मैं तो तुमसे अभी विवाह करने के लिए तैयार हूँ लेकिन मुझे अपने पिता की ओर भी तो ध्यान रखना चाहिए। मैं उनकी इकलौती बेटी हूँ। आज अगर मैं तुमसे विवाह कर लूं तो मेरे पिता की इज्जत धूल में मिल जायेगी। उनको मुझसे जितनी आशाएं होंगी वे सब रेत के महल की भांति ढह जायेंगी।"

मैं तुम्हारा प्रस्ताव नहीं ठुकराती लेकिन तुम लखपति बनों तब मैं तुम्हारे साथ विवाह करूंगी।

वह तो यह सब कह कर चली गई थी लेकिन उसे ऐसा लग रहा था मानों वह बार २ वह वाक्य उसको कहती जा रही है। उसने बहुत प्रयत्न किया नौकरी के लिये लेकिन सब व्यर्थ। न वह पढ़ा-लिखा और न ही उसके पास धन था। सत्यपथ पर उसे कार्य होता नजर न आया तो उसने बेईमानी से धन कमाना शुरू किया और आज वह कुख्यात डाकू बन गया था जिसके नाम से प्रत्येक इलाका कांप जाता था।

तब से लेकर आज तक उसने कितने ही डाके

डाले थे केवल अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिये ! उसके साथ विवाह करने के लिये वह कितने ही घरों को बरबाद कर रहा था।

आज वह सोच रहा था कि मेरी अन्तिम दाव है। इसके बाद मैं कभी असत्य पथ पर न जाऊंगा।

* * * *

एक सदस्य ने कहा—"सरदार क्या यूँ ही खड़े रहोगे !"

उसके कहने पर वह चौंक गया और वे सब उस हवेली में चले गये और तभी कुछ चीखें और चिल्लाहटें सुनाई पड़ने लगीं।

तभी एक स्वर गूंजा– "कोई भी अगर इधर से उधर हिलने की कोशिश करेगा तो उसे एक ही गोली से खत्म कर दिया जायेगा।"

उसके आदमी सब अपने-अपने कार्य में लगे हुए थे। तभी ऊपर की मंजिल से हल्की और सुरीली चीख सुनाई दी। वह विशालकाय व्यक्ति ऊपर की ओर चला और जिस कमरे से चीख सुनाई दी थी उस कमरे के सामने जा कर रुका। एक क्षण रुका और दूसरे ही पल वह कमरे के अन्दर प्रवेश कर गया। कमरे में एक टेवल लैम्प जल रहा था जिसके प्रकाश में उसने देखा कि उसी के दल का एक सदस्य एक युवती का गला निर्दयता से दबोच रहा था।

सरदार को देखते ही उसके हाथ रुक गए लेकिन युवती के प्राण-पखेरू निकल चुके थे ! पक्षी पिंजरे से उड़ चुका थ । सरदार उसकी तरफ बढ़ा !

उसने टेबल लम्प के प्रकाश में उस युवती की मुखाकृति को देखा तो उसका रोम-रोम कांप उठा। इस अवसर को अनुकूल देखकर वह सदस्य भाग निकला ! सरदार ने दो-तीन बार उस प्राणहीन देह एव मुख को देखा फिर उसे झझोड़ा लेकिन सब व्यर्थ !

अब वह मूर्तिवत उस शव के सम्मुख, सिर झुकाये हुए खड़ा था। आज उसकी आंखों से जीवन मे पहली बार दो आंसू ढुलक पड़े थे।

वह पुरुष जिसने अपने जीवन में शायद ही कभी पराजय स्वीकार की हो, आज मन ही मन अपनी किस्मत पर रो रहा था। उसने आज तक कभी हृदय में अपने सम्बन्ध में नहीं सोचा था। आज उसका हृदय उसे धिक्कार रहा था :

कानूनी तौर पर चाहे वह अपराधी सिद्ध नहीं हुआ था परंतु उसकी आत्मा, उसका हृदय उसे अपराधी सिद्ध कर रहा था ! जीवन में प्रथम बार उसने अपनी हार स्वीकार की, वह भी अपनी ही आत्मा के सामने :

सत्य के मार्ग को ठुकरा कर उस अनादी के नियम से परे जाकर कामना की पूर्ति वह भृगमरीचिका है जिसमें दूर से तो चमक है किन्तु......
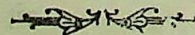
स्वाधीनता और दासता मन के खिलवाड़ हैं। जिनका मन स्वाधीन है, वह मल का टोकरा उठाये हुऐ भी राजा है। —'गाँधीजी'

अत्याधिक विरोधी परिस्थितियों में ही मनुष्य की परीक्षा होती है। —'गाँधी जी

मनुष्य की मानसिक दुर्बलता का ही दूसरा नाम परिस्थिति है। —"अशोक"

जो तुम जानते हो वही करो, विचार ही चरित्र में परिणित होते हैं। — 'कन्फयुशिस"

कु० मंजु कालरा १२ 'ब'

—कु० कुमुद सिंघल, १२ 'सी'

प्रेमचन्द जी के शब्द 'बिन घरनी घर भूत का डेरा' इसको संकेत करते हुए वह कहते हैं नारी का स्थान नर से बहुत ऊंचा है और फिर तुलसीदास जी ने कहा है 'ढोल गंवार शुद्र पशु नारी यह सब ताड़न के अधिकारी'

इन दोनों उक्तियों को पढ़कर मैं विचारों में खो गई कि आखिर किसका अभिप्राय ठीक है। फिर नारी की जीवनी भी कितनी रहस्यमय है। काफी दिन सोच विचार करने के बाद मैं इस निर्णय पर पहुँची कि नारी विवशता की मूक आवाज है, सुलभ लज्जा की तड़पन है, व्यथा की झलक है, मजबूरी की कहानी है। ऐसे हृदय की मूक आवाज है। जिसमें अगनित घाव हैं। आखिर ऐसा क्यों ? नारी की जिन्दगी व्यथामयी क्यों है, उसे समाज हमेशा से पैरों तले क्यों रौंदता आया है उसे इतनी यातनायें क्यों दी जाती हैं।

समाज के किसी भी क्षेत्र में देख लोजिए समाज के द्वारा नारी को यातनायें ही दी जाती हैं। घर में जब लड़की पैदा होती है तो सब बुरा सा मुंह बना कर कहेंगे, लड़की हुई है सारे वातावरण में शोक छा जायेगा। जब लड़का होगा तो कहेंगे "घर में उजाला हो गया है।" चाहे वह दसवां ही क्यों न हो, आखिर नारी के साथ इतना अपमान क्यों ? क्या वह जन्म लेकर समाज की सृष्टि करके कोई गुनाह करती है ? वह घर में कौनसा अंधकार फैलाती है जिसके कारण समाज उसके नाम से खौफ खाता है? समाज युग का अनुकरण नहीं कर सकता जिसने कहा था "काली रात के पश्चात सुप्रभात से बढ़कर नारी ज्योतिर्मयी है।"

विधवा विवाह कानून को बने वर्षों हो गये हैं. मगर अब हम देख ही रहे हैं कि दूसरा विवाह करने वाली नारी को आज भी उसी दृष्टि से देखा जाता है जैसे पहिले देखा जाता था पुरानी परम्परायें और संस्कार तभी मिटते हैं जब नई सामाजिक मान्यतायें बनती हैं जब तक नई मान्यतायें नहीं बनती हैं तब तक का समय अस्थिरता का समय है और आज भी हमारे समाज की वही दशा है। नारी को सभी क्षेत्रों में इसीलिए तड़पना मिलता है, ठुकराई जाती है। क्योंकि आज समाज अस्थिरता के चंगुल में है। नर-नारी समान दुलार को प्राप्त करते हुए पलते हैं सूर्य ने प्रकाश और चन्द्रमा ने चांदनी एक सी दी प्रकृति ने एक सी विभूतियों को प्रदान की, ऐसा नही है कि सूर्य का प्रकाश पुरुष के लिए हितकर हो और नारी के लिए अहितकर तो फिर नारी की इतनी भर्त्सना क्यों ? नारी ऐसी कोमलांगिनी है जो समाज के कठोर व्यवहार को आरम्भ से ही सहती आयी है क्योंकि उसमें सहन-शीलता है।

प्राचीन काल था जब नारी अपनी पूरी लौ के साथ जगमगा रही थी। वह समाज की शान थी, कौम की आन थी। मगर युग पलटा। वह वीरांगना से अबला और आश्रिता बन गई। उसकी दुनिया घर की चार दिवारी तक ही सीमित हो गई तालीम के दरवाजे उसके लिए बन्द हो गए, बाहर झांकना उसके लिए अपराध बन गया यद्यपि मानव में तेज, तर्क और शारीरिक शक्ति है तो भी बच्चों के पालन-पोषण के लिए नारी की ही जरूरत है। मां ही अपनी खुशियां, आराम छोड़कर बच्चे का लालन-पालन कर सकती है। इसीलिए तो कहा गया

है– "मां के चरणों में सब कुछ है।"

इतना सब कुछ होते हुए भी समाज में नारी को पुरुष की अपेक्षा इतना गिरा ही क्यों समझा जाता है ? क्या नारी के लिए खुशी नही गम बटता है।

गांधी जी जैसी महानआत्माओं ने समाज में नारी के स्थान को ऊंचा उठाने के लिए आवाज उठाई मगर जिनका स्वभाव दुष्ट हो, निर्मोही हो, वेदर्दी हो वह क्या खाक नारी की सहानुभूति समझेगा। नारी आरम्भ से लेकर अन्त तक घर की चार दिवारी में रहती है। बचपन में मां-बाप की युवावस्था में पति की तथा वृद्धावस्था में अपने बालकों की दासी बनकर उसे जीवन गुजारना पड़ता है। समाज की कड़ी जंजीरें उसके पावों में पड़ी रहती हैं। अगर वह इन जंजीरों को तोडने की कोशिश भी करती है तो समाज में उसका कोई भी स्थान नहीं रहता। जालिम नर समाज उसकी आबरू नीलाम कर देता है। सभी दरवाजे भी उसके लिए वन्द हो जाते हैं, मगर समाज नर को माफ कर देता है और सजा की पात्र अकेली नारी ठहराई जाती है, जब नर और नारी मिलकर गुनाह करते हैं तो सजा अकेली नारी को ही क्यों दी जाती है।

प्रकृति का नियम है कि सदा रात्रि ही नहीं रहती, सदा पतझड़ नहीं रहता रात के बाद दिन और पतझड़ के बाद बसन्त आता है। नारी को पांव की जूती समझने वाले समाज में आज यह स्थिति दूर हो रही है। नारी विद्या प्राप्त करके समाज की कड़ी जंजीरें तोड़ कर आजाद पक्षी बन गई जागृत नारी के विल्सिन के निम्नलिखित मत की अपेक्षा को जा सकती है।

"नारी के नैनो में परमात्मा ने अपने दो दीपक रख दिये हैं जिससे संसार के भूले भटके लोग उनके प्रकाश में अपना खोया मार्ग पा सके।

संसार में जो श्रेष्ठ और शिव है, उनकी संरक्षिका नारी ही है।

मैं कविता लिखना चाहती हूं

कुमुद सिंघल १२ सी

हैं दिल में कोई भाव नहीं
प्रकृति से कोई लगाव नहीं
पर फिर भी है इच्छा मेरी
मैं कविता लिखना चाहती हूँ

जब लेकर पैन बैठती हूँ
तो पहले मुड बनाती हूँ
सबको निकाल कर कमरे से
मैं वातावरण बनाती हूँ

फिर खोद-खोद कर अपना दिमाग
मैं भावों की लड़ी बनाती हूँ
कागज लेती हूं लिखने को
तो मन को सूना पाती हूँ

मेरी छोटी सी रचना को
यदि व्यर्थ समझ नहीं पायेंगे
तो मुझे निराशाही होगी
मैं सच्ची बात बताती हूँ

जब भूतों ने उधम मचाया

—हरवेल कौर १२ सी—

चांदनी रात थी। चन्द्रमा की स्वच्छ चांदनी ने वातावरण को कहीं अधिक ही सुन्दर एव पवित्र बना दिया था। समुद्र में उठ रही लहरों के स्वर से आस-पास का वातावरण अधिक संगीतमय हो रहा था। और इस रहस्यमय वातावरण में बैठा मनीष न जाने कहाँ विचार कर रहा था। कल से उसके मस्तिष्क में न जाने कैसे-कैसे विचार घूम रहे थे। कल जब वह स्कूल पहुँचा तो सारे स्कूल में मानों तुफान ही उठा हुआ था। उसके मित्र रितेश ने उसे बताया कि कल शहर के सुप्रसिद्ध सेठ को रहस्यमय ढंग से हत्या कर दी गयी है। तिजोरी, घर का सभी कीमती सामान गायब कर दिया गया है। यह कुकृत्य किसने किया। यह केवल मनीष के कक्षाध्यापक जानते थे। रात के समय जब वह घूम कर लौट रहे थे तो उन्होंने देखा कि दस-बारह कंकाल सेठ जी ने शयन-कक्ष में आये और लगातार भयानक अट्टहास करने लगे सेठ जी चौंक गये जैसे ही उन्होंने मानव कंकालों को ओर मुख मोड़ा, एक कंकाल के हाथ से चिंगारियाँ निकली और सेठ जी के सीने से टकराई। सेठ एक दर्दनाक चीख के साथ गिर पड़े। उस कमरें में मानव-कंकालों की भयंकर आवाजें रह-रह कर वातावरण को भयामय बना रही थी।

केवल सेठ जी की हत्या ही नहीं हुई थी बल्कि शहर भर में कंकालों का आतंक फैल रहा था। कई अनेक ऐसी घटनाएं घटित हो चुकीं थां जिससे रोंगटे खड़े हो जाते थे। आज शाम ही तो उसने सुना था कि दोपहर को शहर की बैंक से सारा रुपया, सोना, चांदी गायब हो गया है। इसके साथ ही अनेक व्यक्तियों की मृत्यु भी हो चुकी है। दोपहर जब कंकाल रुपी भूत बैंक पहुँचे तो बैंक मैनेजर चौंक उठा किन्तु तभी उन भूतों के स्पर्श मात्र से ही वह निर्जीव सा गिर पड़ा। मैनेजर की दशा देखकर अन्य व्यक्ति वहां से भाग चुके थे। कुछ भूतों की चपेट से मृत्यु प्राप्त कर चुके थे। एक व्यक्ति ने पुलिस को फोन किया। पुलिस आयी किन्तु वहां के वातावरण का अवलोकन करने पर किसी भी निष्कर्ष पर न पहुंची। अन्त में इन्सपेक्टर वर्मा ने भूतों पर गोली चलाने का आदेश दिया। किन्तु गोली का वार उन भूतों के लिए मक्खी बैठने के समान था। पुलिस कुछ करती इससे पहले ही वह सारा सामान लेकर चम्पत हो चुके थे। बैंक के आँगन का दृश्य मानों रणभूमि बन गया था। यह समाचार मनीष ने अपने पिता इन्सपेक्टर वर्मा से ही सुना था। मनीष अभी कुछ और सोचता इससे पहले ही उसने किसी का स्पर्श अनुभव किया चौंक कर पीछे जो देखा उसका मित्र रितेश ही खड़ा था। रितेश के साथ मनीष चुपचाप उठकर चल दिया।

'मनीष क्या सोच रहे हो"। रितेश के प्रश्न से मनीष का ध्यान वापिस आया। "रितेश! क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम आज रात मेरे पास रहो"। वह बोला—"अवश्य, क्यों नहीं।" रितेश ने शीघ्र हां में सिर हिला दिया। दोनों घर आये और खाना खाकर पढ़ने लगे। न जाने वह कब तक बैठे रहे कि तभी भयानक अट्टाहास से चौंक उठे। उन्होंने देखा द्वार पर वैसा ही एक मानव कंकाल खड़ा है जैसा उन्होंने सुना था। दोनों के होश ही उड़ गये। मनीष ने धारे-२ रिवाल्वर उठाया और फायर किया किन्तु वह कंकाल उसी तरह हंसता रहा। तभी मनीष ने एक बोतल उठायी जिसमें कुछ तरल पदाथ था। जैसे ही उसने कंकाल पर पटकी कि वह धू-धू जल कर राख हो गया। दोनों ने चैन की सांस ली और सो गये। मनीष ने सुबह अपने पिता से उस तरल पदार्थ के विषय में पूछा तो पता लगा कि वह पेट्रोल था। तब तो इन्सपेक्टर

वर्मा ने जगह जगह पेट्रोल के ड्रम रखवा दिये। जिससे काफी संख्या में कंकाल मरने लगे। किन्तु यह रहस्य क्या है, यह मानव कंकाल यानि भूत हैं क्या ? यह बात मनोष के मस्तिष्क में घूमती रही।

यहीं बात सोचता हुआ मनोष समुद्र के किनारे टहल रहा था कि अचानक तट की लहरों को चीरता हुआ एक जहाज समुद्र की ओर बढ़ रहा था। मनोष चौंक कर रुक गया और एक चट्टान की ओट में छिप गया। तभी उस जहाज से विचित्र प्रकार की हरी रोशनी द्वारा समुद्र पर संकेत दिया जाने लगा। सहसा मनोष ने देखा कि तट पर से भी लाल रंग की रोशनी द्वारा संकेत का उत्तर दिया गया है। जहाज समुद्र के किनारे आकर रुक गया। पांच व्यक्ति हाथों में थैले लिए हुए आये। तट पर ठहरे हुए व्यक्ति के पास आकर बोले- सर! लीजिए आज का माल।" वह व्यक्ति जिसे सर कह कर पुकारा गया था, बोला- भई अहमद ! हमारे रहस्य का पर्दाफाश हुआ मालूम होता है। तुम देख ही रहे हो कि हमारे कितने कंकाल नष्ट हो गये हैं। सर कुछ भी हो, हम आपकी बुद्धि की दाद देते हैं। क्या दिमाग पाया है आपने, सारा शहर आतंक में डूबा है।

अच्छा चलो मेरे साथ' उनके बास ने कहा। इस वार्तालाप को सुनकर मनीष में तो जाने कहाँ से नई शक्ति प्राप्त हो गई थी। वह भी चुपचाप उनके पीछे चल दिया। चारों तरफ अंधकार का साम्राज्य था। सांय-सांय की आवाज से जंगल का वातावरण और अधिक भयानक हो गया था। तभी उनके बास ने कहा- अहमद, सोचता हूँ अगर इन्सपेक्टर वर्मा का जीवन समाप्त कर दिया जाय तो हमारी योजना असफल नहीं हो सकती। मनीष का मानों सांप सूंघ गया। इन्सपेक्टर वर्मा तो उसके अपने पिता का नाम था। तभी बॉस फिर बोला- "हां सुनो, उनके पुत्र मनीष को जीवित ही पकड़ लाना है। वह दोनों ही इस रहस्य को जानते हैं कि पेट्रोल से भूत मर सकते हैं।

तभी मनीष ने देखा कि वह एक खण्डहर के पास रुक गये हैं। बाहर से खण्डहर दिखने वाला वह स्थान अन्दर से प्रयोगशाला के रूप में सुशोभित था। मनीष धीरे-धीरे चलता हुआ खण्डहर के पीछे छिप गया। वह व्यक्ति आते ही शराब पीने लगे। वे इतना पी चुके थे कि उन्हें स्वयं अपनी सुध नहीं रही। मनीष ने देखा अवसर अच्छा है अतः पास ही पड़े फोन का नम्बर डायल किया और अपने पिता को सूचना दी। जैसे ही वह मुड़ा एक मुखौटाधारी व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया। उसके आते ही सब का नशा हिरन हो गया। शायद वह उस गिरोह का सबसे बड़ा बास था। किन्तु वह कुछ कहे कि कमरे में प्रवेश करते हुए पुलिस दस्ते को देखकर चौंक पड़ा। अतः उन सबको पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। जब उनके बास को मुखौटा उतारने के लिए कहा गया तो उसने कुछ उतर न देकर जेब से इलायची को निकाल कर मुंह में रखा और चकराकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। किन्तु जैसे ही इन्सपेक्टर वर्मा ने मुखौटा उतारा, मनोष बुरी तरह चौंक गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो अभी बेहोश हो जाएगा। वह तो उसके कक्षा अध्यापक थे जिन्होंने सर्व प्रथम सेठ की हत्या का रहस्य बताया था। मृतक अध्यापक को छोड़कर वह प्रयोगशाला का निरीक्षण करने लगे। एक किनारे पर मानव कंकाल खड़े थे। जैसे ही वर्मा ने उन्हें हाथ लगाया तो वह चौंक कर कई कदम पीछे हट गये, क्योंकि उस भूत के मुख से तरह तरह की आवाजें निकल रही थी। तभी मनीष ने उस भूत के निकट जाकर एक बटन दबा दिया। फलस्वरूप आवाज आनी बन्द हो गई। उसने अपने पिता को प्रारम्भ से लेकर सब कहानी सुनाई कि उसे यह उन्हीं से यह मालूम हुआ कि यह भूतों की एक योजना बनाई गई है। निरीक्षण करने पर उन्होने देखा कि वह तारों और बिजली द्वारा सचालित हैं और आवाज आने के लिए उनमें टेप रिकार्ड फिट किए गये हैं। किन्तु तभी सभी ने चौंक कर देखा कि उस गिरोह के अन्य व्यक्ति भी मर चुके हैं। शायद वैसी ही इलायची खा कर। और वह प्रयोग-

शाला भी भयानक विस्फोटों से फटती चली जा रही है। वह सभी वहां से बाहर आ गये। उस जलती हुई प्रयोगशाला को देखते रहे जो उनके 'वास' द्वारा फेंके गये एक बम से फटती जा रही थी। इन्सपेक्टर वर्मा एवं मनीष को अपनी जीत भी हार ही मालूम हो रही थी। किन्तु उन्हें तो सन्तोष था कि अब देश मे बहुत बड़ा स्मगलर गिरोह नष्ट हो चुका है। मनीष को अपने कक्षाध्यापक पर एवं उनके द्वारा किये गये कुकृत्य पर बहुत दुःख हो रहा था।

पुलिस जीप अपने पीछे धूल का गुबार छोड़ती हुई अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही थी और इस समय मनीष स्वयं को कुछ हल्का अनुभव कर रहा था।

बिखरे-मोती

संकलनकर्तृ - कु० मंजु कालडा द्वादश 'ब'

चन्दन का वृक्ष कुल्हाड़ी से काटे जाने पर भी कुल्हाड़ी के मुख को सुगन्ध देने में कंजूसी नहीं करता।

× × × × ×

नदी का एक किनारा निःश्वास लेकर कहता है—'सम्पूर्ण सुख सामने के किनारे पर ही है!' नदी का दूसरा किनारा आहें भर कर कहता है कि दुनियां में जितना सुख है, वह पहले ही किनारे पर है!

× × × ×

ईश्वर अपने बच्चों के नेत्रों को कभी-कभी आंसुओं से धोता है, ताकि वे उनकी प्रकृति और आदेशों को सही-सही पढ़ सकें।

× × × ×

सुन्दरता की खोज में हम चाहे संसार का चक्कर लगा आयें, अगर वह हमारे अन्दर नहीं है तो कहीं भी नही मिलेगी। —'एमरसन'

× × × ×

चरित्र एक ऐसा हीरा है जो हर पत्थर को काट सकता है! —'बर्टल'

× × × ×

भाग्य खुद अपनी जगह कुछ नहीं होता, खुद अपने व समाज के फैसले ही भाग्य की लकीरें बन जाते हैं!

× × × ×

अतीत किसी भी सोच का मुहताज नहीं है!

× × × ×

उससे भी प्रेम करो जो तुमसे घृणा करें, नहीं तो उसमें व तुम में अन्तर ही क्या रह जायेगा। —'रमा'

❀ ❀ ❀ ❀

कौन किसी के साथ निःस्वार्थ व्यवहार करता है, भीख तक तो लोग अपने स्वार्थ के लिये माँगते है! —'प्रेमचन्द्र'

छिपकलियां

राग़िनी बहुगुणा X 'E'
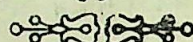
घरों में रहने वाली छिपकलियों को हम प्रायः देखते हैं और उनसे घृणा करते हैं। किन्तु वास्तव में यह घृणा के पात्र नहीं होतीं बहुत सी छिपकलियां रंग रूप में अति सुदर होती हैं और कुछ घातक प्रतीत होने पर भी निर्दोष होती हैं। इसके साथ ही साथ कुछ ऐसी छिपकलियाँ होती हैं जो कि घातक न दिखने पर भी मौका मिलते ही आक्रमण कर देती है। कुछ उड़ने वाली छिपकलियां होती हैं और कुछ बिना पैर वाली छिपकलियां होती हैं और कुछ इच्छानुसार अपनी पूछ को धड़ से अलग रखने की अद्‌भुत क्षमता रखती है। आज अपने इस लेख में मैं इन्हीं अद्‌भुत छिपकलियों का परिचय आपके सम्मुख देती हूँ।

आवास—

अधिकांश छिपकलियाँ स्थलवासी है। परन्तु कुछ वृक्षों पर कुछ जल में तथा कुछ जल तथा थल दोनों में निवास करती हैं।

शिकार करने का समयः—

कुछ जातियों की छिपकलियों को छोड़कर प्राय सभी छिपकलियां रात्रि में शिकार करती हैं और दिन में छिपी रहती हैं।

शरीर की रचनाः—

भूखण्ड में पाई जाने वाली छिपकलियों में से कुछ बहुत छोटी तथा कुछ स्वस्थ्य आदमियों के लम्बाई से भी बड़ी होती है। प्रायः सभी छिपकलियां पूंछदार होती है और अधिकांश छिपकलियों के शरीर पतले छिलकों से आच्छादित रहता है।

जीभः—

छिपकलियों की जीभ अनेक प्रकार की होतो है। कुछ को मोटी व चौड़ी होतो है, पर अधिकांश को पतली, लम्बी और सर्प की जीभ के समान आगे की ओर दो भागों में बटी रहती है। गिरगिट को जीभ अद्‌भुत होती है!

दांत :—

छिपकलियों के दांतों की बनावट सर्पों के दांतो की भांति होतो है! बड़ी छिपकलियों के काटने से घाव हो जाता है जिसके पकने पर प्राण संकट में पड़ जाते हैं। साधारण छिपकलियों में से कुछ विषैली भी होती हैं और गिरगिट विसखोपरा या गोह के काटने से मनुष्य मृत्यु का ग्राम बन जाते हैं। परन्तु यह विचार भ्रम पूर्ण है।

नेत्र :—

प्रायः सब छिपकलियों के नेत्रों में पारदर्शक झिल्लीयाँ रहती हैं किन्तु उनमें पलक नहीं हाती!

पैर और पंजेः—

अधिकांश छिपकलियों के चार पैर होते हैं। परन्तु कुछ के दो और कुछ के पैर ही नहीं होते हैं, घर में पाई जाने वाली छिपकलियों के पंजे में नाखून तेज होते हैं। मरुस्थल में रहने वाली छिपकलियों की अंगुलियों पर चारों ओर सिन्ने होते हैं।

छिपकलियों का अपने शत्रुओं से रक्षा करनाः—

कुछ छिपकलियों में शत्रु से बचने के लिये उनकी पूंछ शरीर की लम्बाई से दुगुनी होती है। इनकी

सहायता से वे अपनी पूंछ को फटकार कर शत्रु से अपनी रक्षा कर सकती हैं किसी-२ जाति की छिपकलियों की पूछ में विचित्रा होती है कि जब शत्रु उस पर आक्रमण करता है तो वह अपनी पूंछ को फटकारती है तो उनकी पूंछ हट से अलग हो जाती है। पूंछ अलग हो जाने पर भी हिलती रहती है जिसके कारण शत्रु का ध्यान पूंछ की ओर आकर्षित होता है और वह उसी ओर देखने लगता है और वे इस प्रकार शत्रु से अपनी रक्षा कर लेती हैं।

छिपकलियों के प्रकार:—

छिपकलियां कई प्रकार की होती है जिनमे से कुछ निम्न हैं !

१. सबसे पुरानी छिपकली:—

न्यूजीलैंड और उसके समीपवर्ती द्वीपों में छिपकली जैसा एक विचित्र उरमंग पाया जाता है जो शरीर रचना और स्वभाव में कुछ २ कछुओं और कुछ २ पक्षीयों से मिलता जुलता है। यह उन पुरखो का अवशेष है जिन से वर्तमान जातियो को छिपकलियो का विकास हुआ। इसका नाम 'टुआटेरा' अथवा 'स्फेनाडोना' है। ये उरंभग हेडे जाने पर काटने व पंजे मारने का प्रयत्न करती हैं।

टुवाटेरा की एक असाधारण बात उसकी तीसरी आंख है। कुछ उरंमगो मे यह सिर के नीचे पायी जाती है।

टुअटेरा और कैमीलियन छिपकलो अपना भोजन पंजो द्वारा पकड़ता हैं।

२. रंग बदलने वाली छिपकलियां:—

साधारण कैमीलियन उत्तरी अफ्रीका सीरिया, एशिया, माइनर, स्पेन, दक्षिणी–भारत, लंका आदि प्रदेशों मे पायी जाती है। रंग बदलना ही इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। इसका शरीर १० इंच से लम्बा नहीं होता।

३. घरेलू छिपकलियां :—

घरों में रहने वाली छिपकलियों की लगभग तीन सौ जातियाँ हैं ये मुख्यतया गर्म देशों में पायी जाती हैं। इनका मुख्य वर्ग "गैको" है जिनमें से बड़ी छिपकलियां १५ इंच लम्बी होती है। साधारण घर मे रहने वाली छिपकलियां ४-५इंच लंबी होती है। इनकी सबसे बड़ी जाति बंगाल, मलाया प्रायद्वीप तथा पूर्वीयद्वीपों व दक्षणी चीन में पाई जाती है।

गेको वंश की सब छिपकलियाँ घर पर ही नहीं रहतीं बल्कि सूखे मरुस्थल में बालू के अन्दर बिल बना कर भी रहती है। कुछ छिपकलियाँ पर्वतों की चट्टानों में भी पाई जाती हैं।

४. उड़ने वाली छिपकलियां :—

छिपकली का दूसरा बड़ा वंश 'अगमेड़ी' है जिसमें दो सौ से अधिक जातियां अभी तक प्राप्त हुई हैं इस वंश की कई जातियां बहुत ही विचित्र हैं जिनमें प्रथम उड़ने वाली छिपकली का है। इनकी लगभग २० जातियां मलाया, मद्रास प्रायद्वीप, जावा तथा वोर्निया द्वीपों में पाई जाती हैं। ये १० इंच लम्बी होती हैं। इनकी पिछली ६-७ पसलियां हड से बाहर निकली हुई होती हैं और उन पसलियों के बीच झिल्ली है जो कि उड़ने में पैराशुट का काम करती है।

५. झालरदार छिपकलियाँ :—

अगमेडो वंश में दूसरा विचित्र स्थान आस्ट्रेलिया की झालरदार छिपकलियों का है जिसका कि निवास स्थान इस टापू का उत्तरी भाग और क्रीन्सलैन्ड है। इस छिपकली की वाह्य खाल भी अद्भुत है लेकिन उड़ाकू छिपकली कोअपेक्षा इसकी झिल्लीं इसके गर्दन और कण्ठ के चारों ओर चढी रहती है और पसलियों के स्थान पर इसकी उपस्थिति के हडे हैं जो कि बिशेष मांस की पेशियों द्वारा खुलती हैं

और ब द होती है उसे फैलाने में सहायता देती है। जब झालर दार छिपकली मुंह खोलकर झालर फैलाती है तो उसका रूप भयानक होता है।

विषैली छिपकलियां :—

अभीतक तो छिपकलियों के केवल एक ही वर्ग के प्राणियों में विष पाया जाता है और ये दोनों ही जातियां नई दुनियां में मिलती हैं। इनकी पूँछ छोटी तथा मोटी होती है। ये २ फिट तक लम्बी होती है। सर्प के समान इनकी विष ग्रन्थियां नीचे के जबड़े में होती है इनके शरीर की खाल पर माला के समान छोटे २ दाने उभरे रहते हैं। जिसके कारण इन्हें मीलाकरार कहते हैं।

बिना पैरवाली छिपकलियाँ :—

ये विचित्र छिपकलियाँ देखने में सर्प जैसी दिखाई देती हैं। दक्षिणी अफ्रीका की कटीलो जाति में यह पायी जाती है। इनके टांगे नहीं होती। ये छिपकलियां २०-२२ इंच तक लम्बी होती हैं बहुदा लोग इन्हें सर्प भी कहते हैं।

बिना पैर वाली छिपकलि में प्रसिद्ध एगम्यूठी वंश की वे छिपकलियाँ हैं जो अन्ध कीडे के नाम से पुकारी जाती हैं।

कांच का सा सर्प :—

एक और बिना पैर वाली छिपकली जो अन्ध-कीडे की तरह सांप समझ कर मार डाली जाती है। दक्षिणी पूर्वी यूरोप दक्षिणी पश्चिमी एशिया उत्तरी अमेरिका और अमेरिका के अतिरिक्त उत्तरी पूर्वी भारत वर्ष व ब्रह्मा में भी पायी जाती है। ये कांच के समान चिकनी होती है इसलिए इसे कांच सर्प भी कहते हैं इसकी लम्बाई ४ फीट होती है।

वृद्धाकार छिपकलियाँ :—

संसार की सभी छिपकलियाँ छोटी ही नहीं होतीं वरन् कुछ इतनी लम्बी होती है कि जिन्हें बिना देखे उनका अनुमान ही नहीं कर सकते। बड़ी-२ छिपकलियां की ३० जातियां भारत वर्ष, अफ्रीका मलाया और आस्ट्रेलियाँ में पायी जाती हैं। इनको गिरगिट विसखोरा और गोह कहते हैं।

अमर वाणी——

- जगत में धर्म की रक्षा मुख्यत: स्त्री जाति की बदौलत हुई। —महात्मा गांधी
- जो घृणा करे तुम उसकी भलाई करो। —ईसा मसीह
- असत्य और पाखण्डी व्यक्ति ही अछूत समझे जाते हैं। —महात्मा गाँधी
- निर्जन विश्व निरस था। जिसमें सरलता लाने के लिए स्त्री को जन्म मिला। —मदन मोहन पाँडे
- कार्य अधिक है, समय कम। जीवन छोटा है अतीत बीत गया। वर्तमान चल रहा है, अब भविष्य अच्छा हो। —एच० के० शर्मा
- स्त्री को अबला कहना उनका अपमान तथा अन्याय करना है। —महात्मा गांधी
- व्यवहार एक दर्पण है जिससे मनुष्य अपना प्रतिबिम्ब देखता है। —गैटे

दहेज प्रथा के दुष्परिणाम
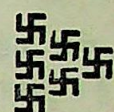
–(कु० पुष्पारानी कक्षा १२ सी)–

आज समाज में दहेज प्रथा के कलक ने विवाह जैसे पवित्र गठबन्धन को भी कलकित कर दिया है चद सोने चांदी के सिक्कों में उसका मुल्यांकन करना अपना धर्म समझ लिया है ! कितनी बार तो बेचारी लड़कियां दूसरे घर जाकर अपने को घोर निराशा के गर्त में पड़ा देख अपनी जीवनलीला समाप्त कर बैठती हैं अथवा व्यभिचारणियों का जीवन व्यतीत करने पर विवश हो जाती हैं।

कल्पना ने एक नये घर में कदम रखा वह बहुत खुश थी अपने माता पिता का घर छूटने का दुःख भी था ? प्रसन्न थी तो सिर्फ इसलिये कि उसके पिता उसके विवाह के लिये चिन्तित रहते थे उनकी चिन्ता सदैव के लिये समाप्त हो गई थी। कल्पना ने कुछ ही दिनों में अपनी कार्यकुशलता और अच्छे व्यवहार से सबके दिलों में स्थान पा लिया था ! सुधीर अपने माता पिता का इकलौता लड़का था तथा फौज में कैप्टन था ! उसे कुछ दिनों के पश्चात पुनः अपनी सीमा पर जाना पड़ा ! अब कल्पना अपने सास–ससुर के पास रह गई ! कल्पना पढ़ी लिखी अत्यन्त सुन्दर सुशील बहु थी ! जब उसने जवानी में कदम रखा तो उसके पिता जो कि मामूली क्लर्क थे वह चिन्तित होने लगे उसके वर के लिये दो भाईयों की इकलौती बहन होने के कारण वह चाहते थे कि हमारी प्यारी बहन को सुयोग्य वर मिले ! भाग्यवश कल्पना को अजीत जैसा पति मिल गया ! रामदयाल (कल्पना के पिता) ने दहेज में अपनी हैसियत से ज्यादा दिया !

ब अजीत को गये एक महीना हो गया था ! कल्पना के सास-ससुर अजीत के जाने के पश्चात् हर समय उसे गाली देते तथा हर काम पर डांटते, यहां तक कि उसे मारते भी और हर समय उसे यही सुनाते कि तेरे फकीर बाप ने दहेज ही क्या दिया है ! तब भी वह कुछ न बोलती अब उसके पास आंसुओं के सिवाय जीवन में कुछ नहीं रह गया था ! उसकी सास हर समय यही कहती कि अपने बाप को लिख दे रुपये भेज दे वरना तुझे आज खाना नहीं दूंगी ! कल्पना कहती नहीं मां जी उन्हें कुछ न कहिये चाहे मुझे कुछ न दीजिये ! और रोती ! वैसे भी आंसुओं की कीमत केवल वही समझ सकता है जिसके अरमान कभी मचले हों और आंखों के रास्ते निकल कर बर्बादी के गार में समा गये हों वह अपने पति को भी कुछ न लिख सकती थी क्योंकि उसकी सास वह पत्र भी पढ़ती थी ! खैर समय व्यतीत होता गया रक्षा–बन्धन समीप आ गया ! रामदयाल ने कल्पना की सास को छुट्टी के लिये लिखा तो उन्होंने उसके जबाव में तीन हजार रुपयों की माँग की और लिखा तभी कल्पना आपके पास आ सकती है !

रामदयाल अपने परिवार का पालन ही बड़ी कठिनता से करता था अतः तीन हजार कहां से लाये परन्तु अपनी पत्नी व दोनों पुत्रों का मुख देखकर उन्होंने निश्चय किया कि कल्पना को अवश्य लायेगा !

भयानक अन्धेरी रात्री के समय नेक व ईमानदार जिसका नाम सारी दिल्ली में अपनी अच्छाई के लिये प्रसिद्ध था वह उठा और सेठ करोडीमल के घर में चोरी की और तीन हजार रुपये लाकर अपने बड़े पुत्र रूपेश को कल्पना के ससुराल भेज दिया !

कहते हैं गरीबों का साथ भगवान भी नहीं देता, रामदयाल को एक आदमी ने सेठ के घर में घुसते देख लिया था ! अगले दिन बात बिजली की तरह

हर जगह फैल गई कि राम दयाल ने सेठ के घर चोरी की है। पुलिस का जब रामदयाल ने अपने घर की तरफ आते देखा तो वह अचेत हो पृथ्वी पर गिर पड़ा विवशता ने उनके चारों ओर फांसा डाल दी थी! और उसी समय चीखने चिल्लाने की आवाज आयी मालूम चला कि ग्लानि से उनकी हृदय गति रुक गयी और वह परलोक सिधार गये कल्पना की मां ने चूड़ियाँ फोड़ दी मांग पौंछ दी और बार-२ अचेत होकर पृथ्वी पर गिरने लगी छोटा लड़का जो १२ वर्ष का था वह भी अपनी मां का ये हाल देख कर रोने लगा! अगले दिन रामदयाल की अर्थी उठाई गयी।

और उधर अजीत की मां ने रूपेश से पैसे लेकर अपनी गठरी में डाले और कल्पना को बार-२ गले लगाकर हँसते-२ विदा किया रूपेश व कल्पना दिल्ली के स्टेशन पर उतर कर रिक्शा की और प्रसन्नता से घर की ओर चले रास्ते में उन्हें एक अर्थी दिखाई दी और उनमें उसे जाने पहचाने लोग दिखाई दिये तो कल्पना ने पूछा रूपेश पहचानते हो ये किस की अर्थी है रूपेश ने कहा साथ वाले काका बहुत बिमार थे शायद वही होंगे लेकिन पास आने पर अपने छोटे भाई का मुंह उतरा हुआ देखकर ये घबरा गये और उससे बात पूछने पर कल्पना जोर से चीखी पापा और एक दम पृथ्वी पर गिर पड़ी लोगों ने अर्थी वहीं रखी और कहा कि बेहोश है जल्दी पानी लाओ लेकिन वह तो हर गम से शान्त हो चुकी थी अब उसे कोई डांटने वाला, कोई दुःख देने वाला नहीं था! बाप और बेटी की अर्थी साथ २ चली जा रही थी!

"रक्षा बंधन आ गया मगर राखी आ सकी नहीं।"

आज रक्षा बन्धन था घर २ राखी मनाई जा रही थी लेकिन अभागे रूपेश व उसका छोटा भाई बोबी सूनी बाहें लेकर गुमसुम बैठे थे।

प्रकृति के अलंकार

[कु० कमलेश हरमिलापी द्वादश 'स']

एक दृष्टि डालो सागर पर कैसी उत्ताल तरंगे
उठ रही हैं, ऐसी तरंगे
मेरे हृदय में हिलोरे ले रही हैं। (१)
इस गहन निशा में शशि मुस्कराता है,
छिप जाता है श्यामवर्ण मेघों के ओट में जैसे,
लज्जावती लज्जा से सिर झुका लेती है! (२)
इस गहन रात्रि में विपट, खड़े हैं प्रहरी से मानो
किसी की आज्ञा पालन कर रहे हैं। (३)
नीलाम्बर परिधान पहने हुये नभ मंडल को देखो,
हरित पट पर बिखरे हुये मोतियों के
सौन्दर्य को देखो। (४)
बहता सरिता अति सुन्दर धारामयी शीतल सी
ऐसी श्यामल अकंजा में चन्द्र की छाया देखो, (५)
शोभा निकेतन डोलती इधर- उधर
अति उज्ज्वल क्रान्तिशाली
सत्य का अवलोकन कर मानों
कुछ सांय-सांय बोलता है: (६)
नव भू वधू परिणीता उपजा रुप अनूप देखो
सागर की ठहरी राहों पर मुखाकृति का यह
प्रतिबिम्ब देखो। (७)

ANANDMAI SEWA SADAN

MAGAZINE

ENGLISH SECTION—

PRAYER TO LORD SHIVA

O Dweller of Kailash, We propitiate Thee
with auspicious prayers
That our folk be free from sickness
and of good cheer.
Chief and protector of Devas, cure- all
applauder of Bhaktas,
Protect us by destroying Snakes
and reptiles and all Asuras

– Yajurveda IV. 5. I.

× × ×
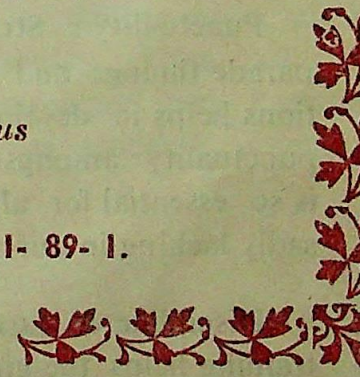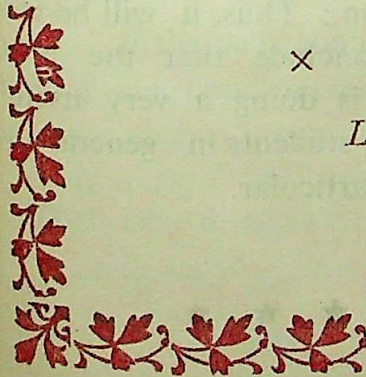
Let noble thoughts come to us
from every side

—Rigvede. I- 89- I.

Benefits of Ncc Training For Girls

Km Sunita Singh XII A
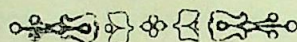
General : The National Cadet corps Organisation is playing a vary important role in the character building of girls, no less than it is doing so far the boys. In this article I would touch upon the various benefits that accrue to girls by joining this Organisation.

Integration : The training camps of the NCC particularly All India Camps bring the girl cadets from different parts of the country together. They spend a couple of weeks in each camp, wherein they eat the same food speak the same language (HINDI) and live in the same tent This facilitates in the development of the sprit of give and take amongst girls and also that of community living and tolerance. All this helps in integration, which is the need of this hour in our land.

Punctuality : Strict observance of parade timings and other NCC functions helps in developing the sense of punctuality amongst the girls, which is so essential for all alike, but is so sadly lacking in our citizens.

Discipline & turn cut : The NCC training helps the girls in being disciplined. Thus they get used to instantaneous obediance of orders, rules and regulations which is very essential for a good citizen. Likewise emphsison good turn out of NCC cadets, makes the girl habituated to being smartly turned out.

Training in First Aid : Training in First Aids makes the girls fit enough to apply first aid to any wounded person, which is so usefull in their day to day life In fact the training inparted to the girl cadets in first aid is upto the standard of Saint John's Ambulance Certificate in Nursing

Defence consciousness : The training in the NCC helps all alike including girls to develop interest in the defence of the country and thus makes them defence conscious, which is so essential in our country.

Conclusion : Thus, it will be very fitting to conclude that the NCC Organisation is doing a very usefull service to the students in general and the girls in particular.

★ ★ ★

FASHION-A NEW TREND

Km. Rashmi Vachher XII A
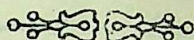
The latest craze of the students is fashion Fashion dominates the life of a large majority of them with the exception of the poor students who cannot afford the luxury of fashions Almost all students regard it as an essential part of their duty to march with the fashions.

The boys as well as girls spend much of their precious time in decorating themselves. Boys are seen dressed in expensive suits of the latest cuts. Each tries to excel others is the beauties and designs of his clothes. In fact, if you look from the real point of view, mostly all the 15 th or 16 th century things are coming into fashion For instance, the teenager boys of today wear leather jackets and if you ask them about it. they will say, "It is in fashion". But in olden days people used to wear those for the sake of protection and not for fashion.

If the male students are eager to look smart and modern. female students go two steps further. Fashion, they regard as their special right. Girls have a natural love for pretty dresses and in colleges they get a real opportunity to show this love.They go to the colleges, dressed in mini skirts Even the fattest and the thinnest girl will wear them and they look like a circus joker. Also the long maxi skirts are in fashion. Some of the teenager girls have started wearing minisaris which look awful and idiotic and also a disgrace to India.

It looks that the world will become topsy turvy. The boy now a days like to peep bong hair whereas the girls like to keep short hair. Even the latest sun glasses are an example of fashions. There are some which are square, round, rectangular, oval etc. The frames are of different colours & designs.

Evidently such boys and girls do not take their studies seriously, They regard going to college as a mere hobby or recreation. Thus fashions are becoming more and more harmful to them from the academic point of view.

"Keep the banner of Truth and nonviolence high,
Greatness will search you.

THOUGHT-POWER AND DESTINY

By– Swami Sivananda (Contributed by D. Bhasin)

Man sows a thought and reaps an action. He sows an action and reaps a habit He sow a habit and. reaps a Character He sows a Character and reaps a destiny.

Man has made his own destiny by his own thinking and acting. He can change his destiny. He is the master of his own destiny There is no doubt of this By right thinking and exertion, he can become the master of his destiny

Some ignorant people say. "Karma does every thing. It is all destiny. If I am destind by my Karma to be like this or like that, why then should I exest ? It is my destiny only"

This is fatalism. This will bring inertia, stagnation and misery. This is perfect misunderstanding of the laws of Karma. This is a fallacious argument. An intelligent man will certainly not put such a question. You have made your own desting from vithin by your thoughts and actions.

You have a free will to choose now. You have got swatantrata in action. A rogue is not an eternal rogue for all times Put him in the company of a saint. He will change in no time. He will think and act now in a different way and will change his destiny. He will become saintey in character.

Dacoit Ratnakar was changed in to Sage Valmiki Jagai and Madai were transformed They were rogues of the first water You can become a Yogi or a Jnani. Use the power of thought. Think, rightly think nobly. May you all become Sages and Yogins by right thinking, by right desiring, by right acting.

THINGS TO BE REMEMBERED

1 Tomorow can only be
what you have made today.

2. When money speaks
truth keeps silenk.

3. Never trouble trouble
till trouble troubls you.

4. Charactor must be kept bright
as well as clean.

5. Prosperity makes friends
adversity tries them,

6. Put not your trust in money
But put your money in trust.

7. The greatest men or women of
the world is q q% like yourself.

8. Praise loudly but blame softly.

9. Think much, speak little
and write less.

—Km. Kiron Khuller XII A

"The emperishable self I am. I am never born and am the lord of all beings, brooding over nature mine own get born am I through my own power." —Gita

Who am I ?

By :- Durgesh Nandni XII A

1. I grin a lot. I can jump quickly from tree to tree I am greedy. I grab food from many places. Sometimes a man traps me and taaches me tricks. I play many pranks, and children like to watch them.

   Who 'am I ?' I am a............

2. I am a friend of man. I am his pet. I watch his house. I am very faithful to him I like to go for long walks with him. If he throws ball far. I run after it· I pick it up and bring it back to him. He is proud of me.

   Who am I ? I am a............–

3. I am useful to man. I give milk, and children like to drink it. You can see me in many places. I walk about in a farm some times I stand near the trunk of a tree. You can see me also near a temple. Men Come there, one by one, and put grass in front of me. I do not hurt them, for I am very meek.

   Who am I ? I am a ....

Answer :–

1. Monkey 2. Dog 3. Cow.

HOW I WROTE AN ARTICLE ?

Km. Sunita Singh, XI A

How happy I felt ! How proud I was ! My teacher had told me,- "Look here, young girls. I am sure you could write an article for the school magazine. Try for it." Oh ! sure teacher I replied feeling word one, which she pronounced so sharp. I started thinking very seriously. I started Blushing.

Back home, I started laughing to myself. Let them know that I am one who is cepable of filling a whole magazine with all sorts of articles A hearty meal and the charming smile of my mother were enough to calm my hunger. Let me write some dozen articles by tomorrow to show that I am no ordinary person. Now, what to write ? A story would be too easy to write

Here it is ! Such a simple thing ! Why did I forget it ? A play will be tha best. All right, my topic will be 'Lost on way to moon'. Now let me think of characters :—

A man

A woman

and their daughters.

No sons of cows, what shall be the plot ? I thought of writing half a dozen articles but could write none, not even a simple one writing is a boring business !

'A magnificient diamond may be lying in a mud and no body may go and take it up; the diamond shines in its own glory all the same. Let people pick it up and place it on their foreheads, or let people ignore it entirely, to the diamond it makes no difference. The field of service is wide enough.'

—*Ram Tirth.*

"WIRELESS"

Arti Gupta X 'B'

Man is the most wonderful creation of God. He has given him a wonderful brain and the reasoning power, with it man become the master of air, land and water. He has harnessed the nature to his advantage. By nature he is a areative being. He always wants to create something new. Therefore, he studies every thing in a systemantic way. This type of study is called science.

Modern age is the age of science. Its importance is increasing. It is one of the greatest hoon to the mankind. It has been hestowed upon the mankind. Its achievement are many sided. It has strengthened the hands of human beings. He thinks himself to be architect of his fate. It has given eyes to the blind, ears to the deaf and legs to the lame.

Man, being a social animal, can not live alone. He wants some one to share his joy and sorrow. He wants to communicate his feelings to other. So he has invanted a number of things like telephones etc. Wireless is also a invention of his. It is one of the surest means to transmit the news. Storms, ocans, mountains etc. has proved ineffective in its way.

In abnormal days its importance increases bayond all measure. When ever a ship or a plane is in some danger, it sends S.O S by wireless. S.O.S. is the ab ....of sentence save our selves. Whenever there to a flood, quake etc. the news is at once sent to each and every corner of world

In the war time it becomes a very powerful instrument of propegenda. High officer of the forces can send orders and instructions by wireless to their saniks. New scince is so improved It is discovered radar, which is also a very important instrument. In the time of air raid one can come to know about the approach of ship or plane.

Wireless is also a helper in the field of education, knowledge, entertainment etc. Radio is only a systemetic form of wireless. It is the best source of knowledge. We can broadcast speeches, lessons etc. of the great scholers from time to time. Students can learn them. Language and literature, history and geography etc. can be taught to the whole country at one and the same time. Thus it is the best source of recreation.

Wireless has recently made further progress. Television is the burning proof of its devolpment With its (television) help we can not only hear but also see the different scenes actually acted before us. Transistor is also a form of radio. It is handy and light. We can take them everywhere upon our will

But some people misuse it They use it only false propeganda. It should not be misused.

Thus we see that science has produced a number of things for our life. It services the distressed. It is a good hand-maid of peace and progress. It has promoted fellow feeling and internationalism. Let us use it wisely for consturctive purposes. Then it will prove benificial to the society.
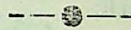
Great Words of Great Personalities

Km Prem Lata, XI A

1. Courage is one of the qualities that you can develop by exercise. —A.T Brown.
2. Train your mind to see the good in every situation. —Donald Curtis.
3. Those who bring sunshine to the lives of others cannot keep it away from themselves. —Fames Barrie.
4. We seldom think of what we have but always of what we lack .. this tendency.... is a greatest tragedy on earth. —Dale Carnegie.
5. Criticise less praise more —Fohn Brooke,
6. Never lose an apportunity of seeing anything that is beautiful; for beauty is God's handwriting — a wayside sacrament. —Emerson.
7. Think you are well, and that all is well and nature will read your thoughts and make them true. —A. Victor Segno.
8. It is the peculier glory of litrature that it lasts much longer than kings and dynasties. —Dr. Radha Krishnan.

THE FACE IS THE INDEX OF HEART

By- Sharda Sriwastva, XI A

A businessman I knew told me that when he was enjoying an employee he always insisted an personal interviews to select the candidates for the posts. He scarcely ever read the testimonials which he considered to be worth little and he did not pay much attention to what each man said but he watched each man's face as he talked "I choose them he said by their faces. And many a time he selected a man who had very little in the way of recomendation to show and promptly rejected same who brought a whole file of axcellent testimonials. And he was rarely wrong in his choice.

A man's face if we can read it right is the index of Heart. We can tell what sart of man he is by the expression of his countenance as we can tell the spieces shelfish by its shell so the soul secrets its physical face. It is we ourself who make our faces and we make them gradually and unconsiously to express-our inner character. Character is simply the sum total of confirmed habits and as a habit is formed it slowly writes its characterestic mark on the face and gives its own look to the eyes. It is harder to read character in the faces to unformed children than in the face of grown men women, though one can generally detect meanness and fraudness even in the jace of a child. But in the case of older people there habits are more fixed and the more fixed their habits the easier it becomes to under stand what sort of people they are from their faces

Certain kinds of faces almost every one can read. You can never mistake the red and bloated face of the drunkard the sour face of discontented, the pride in the face of the arrogant the crafty look in the eyes of the sneak. But it takes a trained and careful observer to read same faces for same clever people make their faces like masks to hide their real selves. A false hearted man may have an apparantly frank and open face a crual man may wear a deceptively kind smile a rogue may look very honest at the first sight as Hamlet said- A man may smile and smile may be a villian. But there is always somthing in the faces that will hetrap such people to an acute observer especially in the most expressive feature the eyes and mouth. A look in the eyes the way be shaps the mouth may hetray the hidden uneauness cruelty craftiness selfishness that lurks behind the friendly smile and the fround look.

Certainly it is that dishonest last and cruelty honesty purity and kindness all leave their indelible mark on the face.

Mathematics In Stories

(*By- Anita Jain X E'*)

THE PEARLS

Once there lived a wealthy merchant in Punjab He had seven daughters whom he loved with equal affection. Very often the merchant went to different towns of India in connection with his business and every time he brought various gifts for his daughters. Once when he intended to go to Bomby one of his daughters asked him to bring pearls for a necklace. Another daughter made the same request & so did the rest In other words all the daughters demanded pearls. The indulgent father noted the demands of his daughters in his diary before proceeding to Bombay.

After a couple of weeks when the merchant returned from Bombay, Manju the first daughter approached her father in secret and asked if he had brought pearls for her. The merchant said, "Yes, I have brought pearls. But I wish that you should call Mohini and divide them equally between you and her." Manju ran forth with and drew Mohini to the father's room. They then, sat down to share the pearls equally. But in their effort to divide them justly they found that one pearl was left. Now who should get this pearl and who should give it up ? This was really a problem.

The father said, "Well, call Mukesh and let the pearls be divided into three equal parts". Mukesh was called and the pearls were counted and recounted to be distributed equally among the three sisters. But curiously enough again one pearl was left Now Mukta the fourth daughter was brought on the scene and it was decided that the heap of pearls should be devided equally among the four sisters. But again the same thing happened and one pearl caused the trouble. Manoj, the fifth daughter and Minakshi the sixth daughter were included in turn to divide the pearls equally but in all the cases one pearl was left undivided. At last the seventh daughter, Meena by name, was invited to join them. All the pearls were mixed together and re-distributed. Lo ! All the doughters got an equal share and no pearl was left. It is easy to imagine how happly they must have felt to receive the pearls.

Now, tell, o reader : What can be the least number of pearls brought by the merchant and how many of them did each daughter get ?

THE BIRDS

Once, a large flock of birds was flying in the space in the same dirction.

They were of different kinds and colours. They were crows, parrots, swallows, nightingales, doves, kites, pigeons sparrows and several others. The lark was at their head. In other words he was leading the caravan

By chance an eagle appeared on the opposite side He was really overjoyed to see such a sweet variety of birds before him. As he came near, he asked the leader of the birds to stop for his sake. After exchanging wishes the eagle asked the lark

"How many are you ?"

The lark found an opportunity to exhibit his knowledge of Algebra. Mark what he said "

"Our twice, our half, our fourth together with you, O eagle, comes to hundred."

The eagle was non-plussed. But you O reader, take up your pen and paper and calculate how many birds there were before the bewildered eagle.

RUPEES

A certain hard working, enthusiastic man set up a fruit shop on the New Year's Day this year On the very first day of January he got profit of one rupee. On 2nd January he earned two rupees On the third day he made three rupees and so on. On each subsequent day there was an increase of one rupee in his profit.

Reckon without the use of any writing material, o reader, how many rupees did the shopkeer earn in the month. of January

ANSWERS

1. 301 pearls; each sister got 43 pearls.
2. 36 birds including the lark.
3. 496 rupees.

'You can not win unless you play to win.' —J. C. Robert.

ENJOY ADVENTURES IN FRIENDLINESS

Km Madulika XII 'C'

Dont miss the fun of the talking to strangers. The world is full of people waiting for you to speak first.

The promenade deck of the caribbean criese ship was filled with passengers in gay sports clothes, suwiming themselves like happ ylizards, in hand touching twosomes, laughing trios & quentets everyone was having a gay, uclaxed, fun-in-the sun holiday except me. I sat alone head lowered over a uslume of poetry, I was'nt reading. The book was a prop behind which I hid may shyness.

There's an empty chain up h^re with us in the sun" a voice said.

I looked up, prepared with my custometny "No thank you". But the gey haired stranger was omieing, his dark eyes friendly but impersud. He was apparently tranelling smiling above and I had watched in amagement and enmy the ease with which he had struck up friendships with nearly everyone on board

Now he pointed to a goony at the other end of the deck. "See that felow with the cap ? He was a naval officer during the war. He's been telling us what it was like patroling these waters in a blackout. His wife, the one in the red surincuit, is a buyer for a children's shop. I think you "il like them."

Before I knew it I had been drawn into tbe group. And within a sunprissingly short time they had ceased to be forbidding strangers an oldmerged as individuals : A stockbroker who preferensed It lions ships because of his holday Italion cookery; The women whose beautiful two daughters were actresses. Each had apersual story to tell. And eventually, although it had always been difficult for me to talk to strangers, I found myself with some prodding from alone self styled host auomening questions about my own work.

Once, at a gala evening, he walked over to an well known television sportscaster to my surprise, the two stood engaged in lively conversation for 15 to 2o minites.

"Won't you afraid he'd smuls you."

I asked later.

Not at all Approching a stranger is

not really difficult he went on, "Don't bother with generalities. Try to pick up a clue about his interests. Every one is an authority on something. The trick is to find what that subject is, Why don't you try your luck?" He perused, then added, 'You're a frindly, enrious person, yet you hold aloof for fear of peing snubbed."

I was silent, recalling lonely hours spent in strange hotels and cities afraid to speak to the person at my elbow.

The trick of friendliess in the attitude with which you face the world around you. I know now that the world is not filled with strangers. It is full of other people waiting only to be spoken to.

Read, Laugh And be Merry

Km. RANI BHATIA XII-C

RAM-"May I Come in, Sir !"

TEACHER-"No, why hove you come so late ?"

RAM-"Owing to the heavy rainfall, sir"

TECHER-" Is it raining cats and dogs !"

RAM-Nothing to speak of cats and dogs, it is raining tigers and elephants.

TEACHER-"Dill, give an example of abstract noun"

DILL-"Bombay"

TEACHER-"How is it ?" (angrily)

DILL-"Sir, you only told me that what you cannot see, hear and smell is an abstract noun and I have not been to Bombay "

PRINCIPAL-(To a new student) Remember, all work and no play makes jack a dull boy, and we like dull boys here.

"There is quite a truth in the belief that if you are feeling depressed and you turu up the corners of your mouth, you begin to feel a bit better. The physical action reac's strangly the mind. Not only does a smile make you feel more relaxed but also helps to make the person to whom you are speaking to, relaxed."

— Alfred Jack.

I Speak From a Full Heart

Km Madhulika Saksena XII C

Yes, this is my last term in the school, which has been my home for three years & I speak from a full heart when I say that I will miss it very much. Whatever there may be in me, I owe it to my stay at shri Anand maye Sewa Sadan Inter College.

The salient feature of this institution is the morning assembly, who can forget the sight of the innocent faces of the girls in snow kurta & salwars with their heads bowed in prayer. I am sure that my friend children can canjure up a vision of this morning prayer when I recount stories about it after supper. Schools where girls do not have such an experience timly lack something very precious. At the prayer one can get a moments peace and quiet which is a very unusual thing in the noisy world of today.

I shall also miss the verious activities and hobbies taking place. Ah ! the gays of acting in a play, always worriying that the play will be a success and if it is, beaining away on being congratulated. I have acted in plays ever since the Sixth standard and I Can assure you, it is really an experience.

Another notable event is the way we celebrate different festivals here in College.

The barrier between teachers and boys break and their isfun & gaiety. It is really delightful to see the girls flashing white smiles and the teachers to otuees ones. This sort of an atmosphere is prevalent especially on Basant. I shall also miss the feeling of excitement before any triangular meet. The N. C C Cadets practise march past especially for special occasion like 15th August or 26th January. The players practise hand constently for the day of the march.

Spirt of loyalty for your institution should be there The Cheering of the girls, Buck up Sewa Sadan, Score a paint, come on, that's it is really great when we have Inter College matches. The matches are played in proper sprit College spirt comes useful later on in life. After I have school, I shall really miss it and I should not wonder if it is this sense of loyalty that will make me what I am destined to become.

I shall also miss the school tuck shop (Canteen) I will never forget the

crowd of girls surrounding the tuck shop. It seems as it the girls will eat away every bit of things even the paper. All the voices claiming together. It all comes to me even at this moment The childish noices shouting away to glory and are dear maiji vainly trying to quiten them.

Lastly I will never the day I leave school I can very well imagine it Sad farewell to be said before leaving your friends and teachers you have got attached to. I am sure that the dam which controls my emotious today will burst open that day and my tears will well out. I will be begining another stage of life than and I shall always wonder what it will be like.

I really pity myself for my inability to do anything to help for the school. I feel it because now it has become a part of my life, my very soul whatever gays and sorrows it may being, this I Know that I will be leaving my school days behind for ever, and with Them very special, happy memories.

An Inorigorating force of Life Health

Km. Alka Garg XI A

A man free from physical pain or disease is healthy. Health *implies* that condition in which every organ of the body is sound and performs its duties smoothly.

'Health is wealth' is a well known saying but there are not many who really under stand how true it is The fact is that health stands much higher than health and hence health is always preferable to wealth. If a man has plenty of health and little wealth, he will not grudge it so much as a man who does not possess the capacity of enjoying his wealth Life itself becomes a curse to one who has lost his health.

'A sound mind in a sound body' so goes the proverb. Brains alone can not lead to the top. There is so close a connection between the body and the mind that if it goes bad with the former, the latter automatically suffers. If the fiesh is ailing, there is no peace of mind and one can never live one's life to the fullest opportunities it offers A man may be intelligent. He may be gifted with extra ordianory talants. Yet in the absence of good health, he will not be able to use them to the full. He can certainly not have the push that comes from within and that cou-

nts so much in the struggle of life, so keen now a days.

So, health is a great blessing Once lost, it can seldom be found again, No man can do without work and every work means some strain on the worker. It may be mental work but it has all the reactions on the physique of the worker. A healthy body means a store house of energy which is necessary for the realisation of one's ambitious and aspirations So health is the foundation of success in life. It brings long and light hearted life free from abnormal tendencies.

It is easy to preserve health. Physical exercise is the proper food for the body. A walk early in the morning or an hour of swimming is for those who devote their time to intellectual persuits and cannot take part in games like Hockey polo or Foot-ball. The second important thing, temperance, 'no extremes' can be called the golden mean of heatth. One must be moderate in one's food, drink, sleep habits etc. One should bear in mind that—

'Early to bed and early to rise, Makes a man healthy, wealthy and wise.

These are the rules of health. They look very small, yet they hold the key to prosperity and power.

It is a pity that in our intellectual activity we over look the important factor of health. When the time comes that we stand head erect in the world & march on to our destination of glory and reap the fruits of our labour, we feel that we are weak-kneed. We stand in despair while we see lesser scholars march ahead to wealth. name and power.

"Where there is sterling faith and uncompromising purity, there is health, there is success, there is power.'

—James Allen

AMBITION

Km. Anita ohri XI A

The emperor, Shahajahan was put in to prison by his son Aurangzeb He was put into prison because his son wanted to possess the whole kingdom. The son put his father into prison so that he might satisfy his hunger. At that time, the father wrote to his own son to send him some students so that he might entertain himself by teaching them some thing. Then the son said, Will you hear this fellow, my father ? He has been reigning over the empire for so many years and even now he can not leave his old habits of reigning over, He still wants to rule over students. He wants some body to rule over. He can not give up his old habits."

So it is, How can we give up our old habits ? The old habit clings to us So, How can the emperor forget the old habits ? How can he give up his nature ? No body is able of shaking off his own nature. If we wish this ambitious spirt, the av avarice should be shaken off, if we desire that the people in this world should give up this ambitious nature could we sermon or preach to them to leave ? Impossible.

Finally we can say that people are ambitious because they can not go against the possessing nature of the soul of true self.

ASSOCIATIONS

Hema Arora XI B

The dropped stone sends its ripple
away. – ....away..............away
to the cricumference
of pool, waterhole, or lack.

So a flower, or perhaps
a grain of alum or a fallen leaf
dropped into a man's mind
from the hand of a poem
spreads into waves
out– ....out.........–out
to the farthest cape and inlet
of his remembrance.

The Seven Ages of School

(a Parody to the Seven Ages of Man)

Mdhulika Saxena XII C

All the school's a stage.
And all the boys and girls merely players·
They have their escits and their entrances
And one boy in his time plays many parts.
His acts being seven ages. At first at K. G.
Playing hide and seek in the open sun.
Then the grumpy class ones, with his satchel.
And sleeping morning face, struggling in vain.
With the 'लिखो और पढ़ो' And then to Seva Sadan.
Leaving new manners, with shoes immaculate,
Shone to his Madam's eyebrou. Then a monitor.
Full of stern words, and conceited like the poodle.
'ealous in honour, abrupt and oft to punish.
Enjoying the high prieslege,
Then the Middle School His childish brain.
with new experiences drumened
With eyes alert and ears vide open.
Airing his tone with a judicious tone.
And so he throngs the School.
After Middle comes seniors.
And dull unpeppered Science and Art lessons.
With matches to play and dramas to stage;
Their youthful shorts and skirts. all torn.
A world too small.
For their grown legs; and a thin moustache for boys.
Too small to be seen sprouts.
The last scene of all; that ends this strange eventful History,
If full seniority and endless studies.
Sans sleep, sausgames, sans meal. sans everything.

LAUGHTER THE BEST MEDICINE

Meena Bhakhu XII A

1. "Your history exercise was bad John, so I told you to write it down twenty times, but you have done it only ten times."
   Sorry madm- but my Arithmetic is bad too "Replied John."

+ + +

2. "Paul, do suggest some present for Shiela, as I am going to meet her for the first time, "Said Johnny."
   "Give her a ring." Replied Paul after a thought.
   "It is too small, suggest sowething bigger."
   Paul was really irritated. "Then give her a dunlop 'yre."

+ + +

3. Girl—"Sometimes you appear really manly and sometimes absolutely girlish. How do you account for it ?"
   Boy—"I suppose it is heredity. Half my ancestors were males, the other half females."

+ + +

4. Thc bus was crowded when a very fat woman entered. She stood for a minute looking at the seated passengers. Then she spoke aloud, ',Isn't someone going to offer me a seat ?"
   A week little boy rose-up and said louddly, "Well I am ready to make a small contribution."

+ + +

5. A man was distributing sweet meat. Another man asked him the reason. He said that his horse had lost.
   Second man—Why are you distributing sweet meat when your horse has been lost.
   First man—I am so happy that I was not sitting on the horse, otherwise I would have also been lost.

उच्चाधिकारी वर्ग

श्री इन्दुभूषण जी खण्डूरी प्रभारी अधिकारी
श्री अजेन्द्र चन्द्र जी दुवे अधिशासी अधिकारी

शिक्षक वर्ग

१- सुश्री आर० के० खुराना (प्रधानाचार्या) एम० ए० बी० टी०
२- कु० स्नेहलता त्रिपाठी (उपप्रधानाचार्या) एम० ए० बी० टी० प्रवक्ता
३- श्रीमती चन्द्र कला मित्तल एम० ए० प्रवक्ता
४- ,, सावित्री देवी वाजपेयी एम०ए०बी०एड ,,
५- कु० देवेन्द्र मोहिनी भसीन एम०ए०,बी०टी० ,,
६- श्रीमति सरोज भारद्वाज एम० ए० ,,
७- ,, कमलेश क्वातरा एम०ए०, बी०टी ,,
८- कु० उषा वर्मा एम० ए०, बी० एड ,,
९-श्रीमती शान्ती देवी सिरोही एम०ए०,बी०टी० ,,
१०- कु० राधा कुमारी एम० ए० बी० टी० ,,
११- श्री आर० के० मोघे संगीत शिक्षक स० अ० संगीत प्रवीण
१२- श्रीमती शकुन्तला देवी कला शिक्षिका ,, आई० जी० डी०, एम० ए०
१३- श्रीमती राज कौशल्या सूरी एम०ए०,बी०टी० ,,
१४- कु० बिमला कौशल एम०ए०, सी०टी ,,
१५- श्रीमती बिमला कोहुस एम०ए०, बी०टी ,,
१६- ,, राज सेठ एम० ए०, बी० टी ,,
१७- ,, स्वर्ण कान्ता जी एम०ए०, बी० टी० ,,
१८- श्री सत्य भामा जी साहित्य रत्न
१९- कु० मीरा पाण्डे बी०एस०सी, बी० एड
२०- ,, मुक्ता जोशी ,, ,,
२१- श्रीमती राज दुलारी शर्मा एम०ए० सी० टी०
२२- ,, विजय लक्ष्मी भारद्वाज ,, ,,
२३- ,, कैलाश वती आर्या इन्टर सी० टी०
२४- ,, कमला कुमारी बी० ए० (गृह विज्ञान)
२५- ,, कृष्णा बहुगुणा संगीत प्रभाकर
२६- कु० प्रभा वर्गलया एम० ए० बी० एड०
२७- श्रीमती सावित्री तोमर इन्टर सी०टी०
२८- सुश्री रमा निश्चल बी० ए०, बी० टी०
२९- कु० वीना भल्ला बी० ए०, बी० एड
३०- ,, उषा टण्डन एम० ए०, बी० एड०
३१- ,, कमलेश अरोड़ा एम०ए०, बी० एड०
३२- ,, सुषमा कोचर बी० ए०, बी० एड०
३३- कमल कान्ता बी० ए०, सी० टी०
३४- ,, मोहिनी छावड़ा ,, ,,
३५- श्रीमती पूर्णा डंग बी० ए०,बी० एड०
३६- कु० राम चमेली एम०ए०, बी०एड०
३७- श्री राज गुलाटी इन्टर सी० टी०
३८- ,, गंगा देवी सिलाई शिक्षिका
३९- ,, नवीन प्रोवराय एन० डी० एस०
४०- कु० आशा किरण एम०ए० बी०एड०
४१- कु० कमला भाटिया एम०ए० बी०एड०
४२- ,, सन्तोष कुमारी ,, ,,
४३- श्रीमती कुसुम वशिष्ट ,, ,,
४४- ,, प्रेमा त्रिपाठी ,, ,,

लिपिक वर्ग

श्री ओम प्रकाश शर्मा (मुख्य लिपिक)
श्रीमती विमला कोहिली स० लिपिक लाइब्रेरियन
कु० निशा शर्मा स० लिपिक
कु० लाजवन्ती शर्मा ,,

प्रकाशक :—

सुश्री आर० के० खुराना (प्रधानाचार्या)
आनन्दमयी सेवासदन,
म्युनिसिपल महिला इण्टर कालेज, हरिद्वार।

मुद्रक :—हिन्दू इलैक्ट्रिक प्रेस,
ललिताराव पुल, रेलवे रोड, हरिद्वार।

प्रिन्टर :—ठाकुर हरिश्चन्द्र सिंह भाटी।